राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण | पटना और रांची से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 | अंक : 174 पटना (बिहार) शनिवार,26 अप्रैल 2025 | पेज - 12 | मूल्य: 1 | R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

एक नजर

सेना प्रमुख द्विवेदी श्रीनगर पहुंच एलओसी के मौजूदा हालात की ली जानकारी

श्रीनगर,। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी शुक्रवार को श्रीनगर पहुंचे। यहां सेना के कमांडर्स ने जनरल द्विवेदी को हालात और आतंकियों के खिलाफ सेना द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी दी। सेना प्रमुख को एलओसी के मौजूदा हालात की भी जानकारी दी। बता दें शुक्रवार सुबह एलओसी पर पाकिस्तान की ओर से कुछ जगहों गोलीबारी हुई। भारतीय सेना ने इसका जवाब भी दिया। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर आर्मी चीफ का यह दौरा काफी अहम है। भारतीय सेना प्रमुख यहां सुरक्षा स्थिति की समीक्षा करने के लिए शुक्रवार को श्रीनगर का यह दौरा कर रहे हैं। इस दौरान वह महत्वपूर्ण सैन्य ठिकानों पर जाएंगे। आर्मी चीफ की इस विजिट में उन्हें आतंकवादियों के खिलाफ की गई कार्रवाई की जानकारी दी जा रही है। जम्मू कश्मीर में तैनात भारतीय सेना के टॉप कमांडर्स आर्मी चीफ को सैन्य संरचनाओं की भी जानकारी देंगे। आर्मी चीफ कश्मीर घाटी और नियंत्रण रेखा पर सुरक्षा बलों द्वारा किए गए आतंकवाद विरोधी उपायों की भी जानकारी ले रहे हैं। आर्मी चीफ की इस विजिट के दौरान सेना की 15 कोर के कमांडर और राष्ट्रीय राइफल्स के अन्य कमांडर मौजूद थे। सेना प्रमुख अवंतीपोरा में विक्टर फोर्स के मुख्यालय का दौरा करेंगे। यह सेना का एक डिवीजन है जो दक्षिण कश्मीर में ऑपरेशन का प्रभारी है। सेना प्रमुख को मौजूदा ऑपरेशन की स्थिति और निकट भविष्य के लिए तैयार किए जा रहे सुरक्षा तंत्र के बारे में जानकारी दी जाएगी। जनरल द्विवेदी श्रीनगर में चिनार कोर के मुख्यालय का भी दौरा करेंगे। यहां वे उत्तरी कमान के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल सुचेंद्र कुमार और 15 कोर कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल प्रशांत श्रीवास्तव से साथ बैठक करेंगे।

इसरो के पूर्व अध्यक्ष के. कस्तूरीरंगन का 84 साल की उम्र में निधन

नई दिल्ली । भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष के. कस्तूरीरंगन का 84 साल की उम्र में शुक्रवार सुबह बेंगलुरु में निधन हो गया। परिवार के सूत्रों ने बताया कि उनके परिवार में दो बेटे हैं। पिछले कुछ माह से वे उम्र संबंधी बीमारियों से पीड़ित थे। रविवार को उनका अंतिम संस्कार होगा। इससे पहले रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट में उनके पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा। अधिकारियों ने बताया, अंतिम दर्शन के लिए उनके पार्थिव शरीर को 27 अप्रैल को रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरआरआई) में रखा जाएगा।ख्र इसरो के पूर्व प्रमुख महत्वाकांक्षी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को तैयार करने वाली मसौदा समिति के अध्यक्ष थे। एनईपी में सूचीबद्ध शिक्षा सुधारों के प्रणेता के रूप में मशहूर कस्तूरीरंगन ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और कर्नाटक नॉलेज कमीशन के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया था। कस्तूरीरंगन राज्यसभा के भी सदस्य रह चुके थे। वर्ष 2003 से 2009 तक वह इस सदन के सदस्य थे। उन्होंने तब भारत के तत्कालीन योजना आयोग के सदस्य के रूप में भी काम किया। कस्तूरीरंगन अप्रैल 2004 से 2009 तक नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, बेंगलुरु के निदेशक भी रहे थे। पूर्व इसरो प्रमुख का जन्म 24 अक्टूबर 1940 को केरल के एनार्कुलम में सी.एम. कृष्णास्वामी अय्यर और विशालाक्षी के घर हुआ था।

बिहार में साल चुनावी है, नीतीश सरकार ने 'नौकरी का पिटारा' खोला, 3837 पदों पर लगी मुहर

पटना : बिहार में साल चुनावी है. इसलिए सरकार एक्शन मोड में काम कर रही है. इसी कड़ी में नीतीश सरकार ने नौकरियों की बहार ला दी है. आज कैबिनेट बैठक में आठ विभागों में कुल 3837 पदों के सृजन की स्वीकृति प्रदान की गई है. बिहार में होगी बंपर बहाली : जिन विभागों में बहाली की स्वीकृति दी गई है, उसमें खेल विभाग में 244, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग में 2159, नगर विकास विभाग में 663, शिक्षा विभाग में 526, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग में 185, विधि विभाग में 40, गन्ना उद्योग विभाग में 19 और स्वास्थ्य विभाग में एक पद शामिल है. कुल 34 एजेंडों पर मुहर : कैबिनेट में लिए गए फैसले के बारे में कैबिनेट विभाग के अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ने पूरी जानकारी दी. उन्होंने बताया कि कैबिनेट की बैठक में कुल 34 एजेंडों पर मुहर लगी. इसमें बिजली उपभोक्ताओं के लिए 15995 करोड़

की सब्सिडी की राशि की स्वीकृति दी गई. पिछली बार 27370 पदों की मिली थी स्वीकृति : वैसे, नीतीश कुमार ने पिछले कैबिनेट में भी 8 अप्रैल को 27370 पदों पर बहाली का बड़ा फैसला लिया था. जिसमें मुख्य रूप से स्वास्थ्य विभाग में 20052 पद, कृषि विभाग में 2590 पद और अल्पसंख्यक कल्याण विभाग में 3306 पदों पर बहाली का फैसला लिया गया था. अपने वादे पर काम कर रही सरकार : बता दें कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विधानसभा चुनाव से पहले 12 लाख नौकरी और 20 लाख से अधिक रोजगार देने का वादा किया है. सरकार का दावा है कि अब तक 9 लाख से अधिक नौकरियां दी जा चुकी हैं. वहीं 34 लाख रोजगार अब तक दिया गया है और इसकी संख्या लगातार बढ़ रही है. अभी चुनाव में 5 से 6 महीने का समय है. ऐसे में 12 लाख नौकरी सरकार देने की तैयारी में लगी है. जल्द ही आने वाले कैबिनेट में 2 लाख से अधिक पदों पर जो शेष रह गया है, बहाली की प्रक्रिया शुरू करने का भी फैसला सरकार ले सकती है.

अमित शाह का आदेश: पाकिस्तानियों की पहचान कर उन्हें तुरंत वापस भेजें, सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से की बात

नई दिल्ली,। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ कठोर कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। इस हमले के बाद गृह मंत्री अमित शाह ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने-अपने राज्यों में मौजूद पाकिस्तानियों की पहचान कर उन्हें तुरंत पाकिस्तान वापस भेजें। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अमित शाह ने शुक्रवार को सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से फोन पर बात की और उन्हें कहा कि पाकिस्तानियों को उनके देश वापस भेजने में किसी भी तरह की देरी नहीं होनी चाहिए। यह कदम पाकिस्तान द्वारा जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को किए गए आतंकवादी हमले के बाद उठाया गया है।

हमले का विवरण और पाकिस्तान से संबंध

22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 से ज्यादा पर्यटकों की मौत हो गई। बताया गया है कि इस कायराना कृत्य को करते हुए आतंकियों ने अपने शरीर पर बॉडी कैमरा लगाया हुआ था और पूरी घटना की रिकॉर्डिंग की थी, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि यह हमला संगठित था और इसके तार पाकिस्तान से जुड़े थे।

सिंधु जल संधि स्थगित, कड़े कदम उठाए

हमले के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ कई कड़े फैसले लिए हैं। सबसे पहला कदम सिंधु जल संधि को स्थगित कर दिया गया है। इस फैसले का पाकिस्तान पर व्यापक असर होगा, क्योंकि इससे पाकिस्तान के बड़े हिस्से में कृषि के लिए पानी की आपूर्ति प्रभावित होगी। भारत सरकार अब पाकिस्तान के खिलाफ कड़े कदम उठाने के लिए पूरी तरह से तत्पर है, और इस कड़ी कार्रवाई से पाकिस्तान को एक मजबूत संदेश भेजने का प्रयास किया जा रहा है।

पहलगाम आतंकी के खिलाफ बिहार में कैंडल मार्च

पटना: कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला के बाद से देश में आक्रोश है. बिहार में भी इसका असर देखने को मिला रहा है. बिहार के विपक्षी नेता लगातार आवाज बुलंद कर रहे हैं. राजधानी पटना में शुक्रवार की शाम तेजस्वी यादव के नेतृत्व में महागठबंधन के सभी 6 घटक दल के नेताओं ने कैंडल मार्च निकाला. 'हमारे भाईयों की हत्या की गयी': तेजस्वी यादव के नेतृत्व में महागठबंधन के घटक दलों के सभी वरिष्ठ नेता हाथ में कैंडल लिए मार्च लिए इनकम टैक्स चौराहा से डाक बंगला चौराहा तक पैदल चले. महागठबंधन के कैंडल मार्च का नेतृत्व तेजस्वी प्रसाद यादव ने किया. तेजस्वी यादव ने कहा कि जिस तरीके से आतंकवादियों ने हमारे भाइयों पर गोली चलाई है इसी के विरोध में इंडिया गठबंधन के द्वारा उनको श्रद्धांजलि देने के लिए कैंडल मार्च निकाला गया है. ₹जिस तरीके की घटना कश्मीर में घटी है उसका मुंहतोड़ जवाब सरकार दे. पूरा देश एकजुट होकर खड़ा है. देश की सुरक्षा को लेकर हमलोग चिंतित हैं. हमलोग इस मामले में ज्यादा राजनीति नहीं करेंगे. सेना और मिलिट्री के प्रति सभी लोग एकजुट होकर सरकार के साथ खड़े हैं. कल दिल्ली में सर्वदलीय बैठक हुई थी. इस बैठक में भी राजद ने स्पष्ट कर दिया था कि केंद्र सरकार जो भी निर्णय लेगी वेलोग उनके साथ खड़े हैं.₹ -तेजस्वी यादव, नेता प्रतिपक्ष शहीदों को दी श्रद्धांजलिः इनकम टैक्स से डाक बंगला चौराहा तक भारतबंधन के सभी नेताओं ने कैंडल मार्च के द्वारा आतंकी हमले में शहीद लोगों

के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की. तेजस्वी यादव ने कहा कि कल महागठबंधन की बैठक में उन्होंने सरकार से कही थी कि आतंकवाद को जड़ से समाप्त किया जाए. देश की सुरक्षा का मामला है. देश की सुरक्षा के मामले में सभी दल सच्चे मन से एकजुट हैं. इन नेताओं ने लिया भागः कैंडल मार्च में आरजेडी से अब्दुल बारी सिद्दीकी, संजय यादव, रणविजय साहू, शक्ति सिंह यादव कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम, शकील अहमद खान, मदन मोहन झा, प्रेमचंद्र मिश्रा सीपीआईएमएल के राज्य सचिव कुणाल, विधान परिषद धीरेंद्र झा सीपीआई से रामबाबू कुमार सीपीएम से ललन चौधरी अवधेश कुमार शामिल होगें. इसके अलावा सभी राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता भी आज के कैंडल मार्च में शामिल होंगे. 26 लोगों की मौतः 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ. इस घटना में स्थानीय लोग समेत 26 लोगों की जान चली गयी. बताया जा रहा है कि आतंकी धर्म पूछकर हत्या कर रहे थे. इस आतंकी हमले में बिहार के रोहतास के आईबी अधिकारी मनीष रंजन की भी मौत हो गयी. आतंकी ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी.

पहलगाम आतंकी हमला: बिहार के मुसलमानों ने खोला कुरान

पूर्णियाः पहलगाम आतंकी हमले को लेकर देश में रोष है. बिहार के मुसलमानों ने इस घटना को लेकर निंदा की है. कहा कि कौन हैं यो लोग जो इस घटना को अंजाम दे रहे हैं. ऐसे लोगों पर सरकार को कार्रवाई करनी चाहिए. इसके साथ ही लोगों से अफवाह नहीं फैलाने की भी अपील है. क्या कहता है कुरानः पूर्णिया के अंजुमन इस्लामिया बड़ी मस्जिद के प्रिंसिपल जमशेद आलम ने कहा कि यह घटना बहुत ही निंदनीय है. जमशेद ने कुरान का हवाला देते हुए इस घटना को दुख देने वाला बताया. कहा कि द होली बुक ऑफ कुरान में कहा गया है कि अग आप इस दुनियां में किसी इंसान की जान लेते हो तो आप संपूर्ण ब्रह्मांड में जितने प्राणी है, उनकी जान लेते हैं. जिसने भी इस घटना को अंजाम दिया है, उसे इस्लाम के बारे में कोई जानकारी नहीं है. धर्म पूछकर गोली मारी गयी है. उन्हें धर्म की जानकारी नहीं है. सवाल है कितने को मारेंगे. एक ना एक दिन ये लोग जहन्नुम में जाएंगे. किसी की जान अल्लाह की अमानत है. उन्होंने ही लोगों में प्राण दिए तो सिर्फ वही ले

सकते हैं. -जमशेद आलम, प्रिंसिपल जमशेद आलम ने कहा कि उन्हें सरकार से उम्मीद है कि इस मामले में कोई फैसला लेगी. इस घटना को लेकर सरकार बदला लेगी. उन्होंने लोगों से अपील की है कि इस घटना को दूसरे तरीके से नहीं देखें. वहां के लोगों ने तो पीड़ितों की मदद की है. कीमत में बढ़ोतरी पर आपत्तिः हालांकि उन्होंने एयर टिकट की कीमत में बढ़ोतरी लेकर आपत्ति जतायी. कहा कि वहां के घोड़े वाले, वाहन वाले और दुकान वाले लोगों की मदद कर रहे हैं. लोगों ने पैसा नहीं लिया लेकिन ये एयरलाइन वालों ने आपदा को अवसर बनाय लिया. आकाओं पर हो कार्रवाईः अंजुमन इस्लामिया के रिटायर्ड प्रिंसिपल अब्दुल कयूम ने कहा कि यह घटना बहुत तकलीफदेय है. इसानियत को झकझोरने का काम किया है. ऐसे लोगों को सजा मिलनी चाहिए जिन्होंने इस घटना को अंजाम दिया. उन्हें भी नहीं बख्शा जाना चाहिए जिन आकाओं ने ऐसा करन के लिए कहा. सरहद पार के लोग जो अपने आप को मुसलमान कहते हैं, ऐसे लोगों पर भी कार्रवाई होनी चाहिए. धर्म पूछकर मारना अफवाहः धर्म पूछकर मारने पर कहा कि यह अफवाह फैलायी जा रही है. यह इस्लाम को बदनाम करने की साजिश है. उन्होंने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि 26 लोगों की लिस्ट में मुस्लमान भी हैं. उन्हें किस बुनियाद पर मारा गया. मीडिया के जरिये गलत खबर चलायी जा रही है कि धर्म पूछकर मारा गया है. ₹लोगों से अपील है कि इस तरह की अफवाह ना फैलाएं. भारत को हिन्दू-मुसलमान में मत बांटे. इस घटना को अंजाम देने वाले नफरती और शैतान हैं. आतंकवादी हैं, जिनका कोई धर्म नहीं होता है. -अब्दुल कयूम पहलगाम हमले में 26 की हत्याः मंगलवार दोपहर जम्मू-कश्मीर के सुंदर बैसरन घाटी में आतंकियों ने अंधाधुंध फायरिंग की. हमले में 26 लोगों की जान गई. हमले में पर्यटक और स्थानीय नागरिक दोनों शामिल थे. यह स्थान श्रीनगर से लगभग 30 मील दूर एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है. यह हमला 2019 के पुलवामा हमले के बाद सबसे बड़ा आतंकी हमला माना जा रहा है. इसमें बिहार के रहने वाले आईबी अधिकारी मनीष रंजन भी शामिल हैं, जिनकी हत्या हो गयी.

आंतक रुपी बुराई के अंत के लिए ताकत की जरुरत : भागवत

नई दिल्ली,। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने पहलगाम आतंकी हमले के संदर्भ में बड़ा बयान देकर कहा है कि मौजूदा संघर्ष धर्म और अधर्म के बीच है, न केवल किसी संप्रदाय या धर्म के नाम पर। उन्होंने कहा कि जो लोग धर्म पूछकर लोगों की हत्या करते हैं, वे कट्टरपंथी हैं, और ऐसा आचरण राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों हो सकते है। संघ प्रमुख ने आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई की बात कह कर कहा कि अगर हमारे पास शक्ति है, तब दिखानी होगी। आरएसएस चीफ ने कहा, यह लड़ाई संप्रदायों या धर्मों के बीच नहीं है। इसका आधार जरूर धर्म और संप्रदाय है, लेकिन वास्तव में धर्म और अधर्म के बीच की जंग है। उन्होंने कहा, भारतीय सैनिकों या नागरिकों ने कभी किसी की धर्म पूछकर हत्या नहीं की। हिंदू कभी भी धर्म पूछकर हत्या नहीं करते। जो लोग धर्म पूछकर लोगों की हत्या करते हैं, वे कट्टरपंथी हैं, और ऐसा आचरण राक्षसी प्रवृत्ति का परिचायक है। उन्होंने कहा, इस कायरना हमले के बाद हमारे दिल में दर्द है। हम गुस्से में हैं लेकिन बुराई को नष्ट करने के लिए ताकत का इस्तेमाल करना होगा। रावण ने अपना इरादा नहीं बदला तब और कोई विकल्प नहीं था। प्रभु राम ने दुचारी रावण को सुधारने का मौका दिया था और उसके बाद मारा था। भागवत ने रावण के प्रसंग का उदाहरण देकर कहा, रावण भगवान शिव का भक्त था, वेद जानता था, लेकिन उसका मन और बुद्धि परिवर्तन को तैयार नहीं थे। इसके बाद राक्षस रावण का अंत प्रभु राम ने किया, क्योंकि परिवर्तन के लिए कभी-कभी विनाश आवश्यक होता है। उन्होंने कहा कि राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों का अंत ही देश और धर्म की रक्षा के लिए जरूरी है।

पहलगाम आतंकी हमले का बिहार कनेक्शन

दरभंगाः पहलगाम आतंकी हमला को लेकर बिहार से बड़ी खबर है. दरभंगा के रहने वाले नौशाद काशमी को झारखंड पुलिस ने बोकारो से गिरफ्तार किया है. नौशाद काशमी पर आरोप है कि उसने आतंकवादी हमला के बाद सोशल मीडिया पर पाकिस्तान को धन्यवाद वाला मैसेज पोस्ट किया था. सोशल मीडिया पर पोस्ट वायरलः झारखंड के रांची विधानसभा से भाजपा विधायक सीपी सिंह ने एक Hindutva Knight नामक के पोस्ट को शेयर किया था. इस पोस्ट में लिखा था कि बोकारो के ये उलेमा नेता @MNQUASMIMD पहलगाम आतंकी हमले के लिए पाकिस्तान को धन्यवाद दे रहा है.

दरभंगाः पहलगाम आतंकी हमला को लेकर बिहार से बड़ी खबर है. दरभंगा के रहने वाले नौशाद काशमी को झारखंड पुलिस ने बोकारो से गिरफ्तार किया है. नौशाद काशमी पर आरोप है कि उसने आतंकवादी हमला के बाद सोशल मीडिया पर पाकिस्तान को धन्यवाद वाला मैसेज पोस्ट किया था. सोशल मीडिया पर पोस्ट वायरलः झारखंड के रांची विधानसभा से भाजपा विधायक सीपी सिंह ने एक Hindutva Knight नामक के पोस्ट को शेयर किया था. इस पोस्ट में लिखा था कि बोकारो के ये उलेमा नेता @MNQUASMIMD पहलगाम आतंकी हमले के लिए पाकिस्तान को धन्यवाद दे रहा है. हिंदू विरोधी पोस्ट भी किए और गौ हत्या में शामिल रहा है. सीपी सिंह से इस मामले में संज्ञान लेने का अनुरोध किया गया. 'भारत के लिए खतरा': इसपर रांची विधायक सीपी सिंह ने झारखंड पुलिस से कार्रवाई की मांग की थी. उन्होंने कहा कि एसपी बोकारो को इस गंभीर मामले से अवगत कराया है. अपेक्षा करता हूं कि इस मामले में पूरी गंभीरता से संज्ञान लिया जाए और कठोर से कठोर धाराओं में कार्रवाई सुनिश्चित करें. सीपी सिंह ने कहा कि यह सिर्फ एक पोस्ट नहीं, एक मानसिकता है जो भारत के लिए खतरा है. अब नरमी नहीं, सख्ती जरूरी है. बिहार कनेक्शनः बीजेपी विधायक और Hindutva Knight के पोस्ट पर झारखंड पुलिस ने एक्शन लिया. विवादित पोस्ट करने वाले नौशाद काशमी को गिरफ्तार कर लिया गया. झारखंड पुलिस का दावा है कि उस शख्स का कनेक्शन बिहार के दरभंगा से है. दरभंगा पहुंची पुलिसः झारखंड पुलिस ने जब नौशाद काशमी से पूछताछ की वह खुद को दरभंगा के सिमरी थाना क्षेत्र के शोभन शकरपुर वार्ड 5 का रहने वाला बताया है. पूछताछ में बताया हैं कि पिता मोहम्मद वसीम बोकारो स्टील में कार्यरत थे. अब रिटायर्ड है और बोकारो में ही रहते हैं. झारखंड पुलिस के मुकाबित नौशाद की गिरफ्तारी झारखंड के बोकारो के बालीडीह थानाक्षेत्र के मिल्लतनगर से हुई है. सोशल मीडिया पर पोस्ट की शिकायत मिली थी. एक युवक को इस मामले में पकड़कर कर पूछताछ की है. प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है. पुलिस उसके सोशल मीडिया के अकाउंट खंगाल रही है. पूरी जानकारी निकाली जा रही है. -आलोक रंजन, सिटी डीएसपी, बोकारो आतंकी कनेक्शन खंगाल रही पुलिसः इधर, मो. कासिम उर्फ नौशाद को पुलिस ने बोकारो से गिरफ्तार करने के बाद गुरुवार दरभंगा लायी है. उसके बताये हुए जगह पर ले जाकर लोगों से पूछताछ की. गिरफ्तार मो. काशमी के पास से झारखंड पुलिस ने आधार कार्ड में पता के हिसाब से दरभंगा पहुंच उसके नेटवर्क की कुंडली निकालने में जुट गई है. उसके पास से पासपोर्ट भी बरामद किया है. सूत्रों की माने तो पुलिस आतंकी हमले में शामिल होने सहित सभी बिंदुओं पर जांच कर रही है. झारखंड पुलिस उसके निसानदेह पर जांच करने दरभंगा आई हुई थी. जांच कर फिर उसे अपने साथ लेकर चली गई. -मनीष कुमार, सिमरी थानाध्यक्ष गांव के लोगों ने क्या कहा?ः इधर, नौशाद के संबंध में पूछे जाने पर गांव के लोगों ने बताया कि काफी लंबे समय से वो भी गांव छोड़ कर बोकारो में रहते हैं. उनके परिवार का गांव से लेना देना नहीं है. गांव आते भी नहीं हैं. घर की भी हालत काफी खराब है. छोटे से घर की स्थिति भी ठीक नहीं है. नौशाद काशमी के पोस्ट से मुस्लिम समाज के लोग काफी गुस्से और नाराज हैं. कहा कि हम लोग वंदे मातरम और हिंदुस्तान जिन्दाबाद कहने वाले हैं. जिस तरह से ये बयान दिया गया इसका समर्थन हमलोग कभी नहीं कर सकते है. इस तरह के बयान से हमलोग दुखी हैं. हमारे गांव का नाम बदनाम हो रहा है. आतंकी हमले में 26 की मौतः 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मी के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ. इसमें स्थानीय लोग समेत 26 पर्यटकों की जान चली गयी. इसमें बिहार के रहने वाले आईबी अधिकारी मनीष रंजन की भी जान गयी. मनीष रंजन रोहतास के रहने वाले थे. अपने परिवार के साथ छुट्टी मनाने के लिए गए थे.

पोप फ्रांसिस के अंतिम संस्कार के दिन शनिवार को रहेगा राजकीय शोक

एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने 26 अप्रैल को कैथोलिक धर्म गुरु पोप फ्रांसिस के अंतिम संस्कार के दिन पूरे देश में राजकीय शोक मनाये जाने की घोषणा की है। केंद्रीय गृह मंत्रालय का कहना है कि राजकीय शोक के तहत 26 अप्रैल को पूरे भारत में उन सभी इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा, जहां नियमित रूप से राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। इस दिन आधिकारिक तौर पर मनोरंजन का कोई कार्यक्रम नहीं होगा।सरकार ने पोप फ्रांसिस के निधन पर सम्मान स्वरूप तीन दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की थी। उनके निधन के अगले दो दिन 22 और 23 अप्रैल को राजकीय शोक मनाया गया। वहीं 26 अप्रैल को उनके अंतिम संस्कार के दिन अंतिम दिन का शोक रहेगा। उल्लेखनीय है कि पोप फ्रांसिस का 21 अप्रैल को वेटिकन सिटी के डोमस सैंक्टे मार्थे में निधन हो गया था। वह 88 वर्ष के थे। 26 अप्रैल को पोप फ्रांसिस को रोम में सांता मारिया मैगीगोर के बेसिलिका में दफनाया जाएगा।

पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थियों पर नहीं लागू होगा वीजा प्रतिबंधः विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली। भारत सरकार द्वारा हाल ही में पाकिस्तानी नागरिकों के लिए वीजा सेवाएं रद्द किए जाने के फैसले को अधिक स्पष्ट करते हुए विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह प्रतिबंध भारत में रह रहे हिंदू शरणार्थियों पर लागू नहीं होगा। मंत्रालय की ओर से जारी आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि 'भारत सरकार द्वारा दिनांक 24 अप्रैल 2025 को लिए गए वीजा रद्द करने के निर्णय का स्पष्ट उल्लेख यह है कि यह प्रतिबंध उन पाकिस्तानी हिंदू नागरिकों पर लागू नहीं होता जिन्हें पहले से वैध दीर्घकालिक वीजा (एलटीवी) जारी किया गया है।' सरकार की ओर से यह भी कहा गया है कि एलटीवी धारकों के अधिकारों की रक्षा के लिए सभी संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दे दिए गए हैं, जिससे कि उनके निवास, शिक्षा और चिकित्सा से जुड़े कार्यों में कोई बाधा न आए। उल्लेखनीय है कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ बढ़ते राजनयिक तनाव के मद्देनजर भारत ने 24 अप्रैल को पाकिस्तानी नागरिकों के लिए नई वीजा सेवाएं अस्थायी रूप से निलंबित कर दी थीं। इस निर्णय के बाद यह चिंता सामने आई थी कि कहीं इसका प्रभाव उन हिंदू शरणार्थियों पर न पड़े, जो पहले से ही भारत में शांति और सुरक्षा की तलाश में बसे हुए हैं। ऐसे में विदेश मंत्रालय की यह सफाई अब इन समुदायों के लिए राहत का संकेत मानी जा रही है।

कांग्रेस की संविधान बचाओ रैली की तैयारी, 26 अप्रैल को बैठक

नई दिल्ली। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिका अर्जुन खड़गे के नेतृत्व में 28 अप्रैल को जयपुर में संविधान बचाओ रैली का आयोजन किया जाएगा। इस रैली को सफल बनाने के लिए जिला कांग्रेस ने 26 अप्रैल को सुबह 10:30 बजे श्याम सरोवर में एक अति आवश्यक बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया है। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष श्रीरामजीलाल ओढ़ करेंगे, और इस दौरान प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी इंद्राज गुर्जर, सांसद, पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक, पूर्व जिला प्रमुख, वर्तमान जिला प्रमुख सहित कांग्रेस के सभी अग्रिम संगठनों के अध्यक्ष, पदाधिकारी और कार्यकारिणी के सदस्य भी मौजूद रहेंगे। इसके अलावा, नगर अध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, इकाई अध्यक्ष, सभापति, प्रधान, महिला कांग्रेस और उनके कार्यकारिणी के सदस्य और कांग्रेस कार्यकर्ता भी बैठक में शामिल होंगे। बैठक का उद्देश्य रैली की तैयारियों की समीक्षा करना और सभी कार्यकर्ताओं को रैली के सफल आयोजन में योगदान देने के लिए प्रेरित करना है।

एनआईए अदालत ने की परिवार से बात करने की तहव्वुर राणा की अर्जी खारिज

नयी दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने 26/11 को मुंबई में हुए आतंकवादी हमले के आरोपी तहव्वुर हुसैन राणा की अपने परिवार के सदस्यों से बात करने की अर्जी खारिज कर दी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) मामलों के विशेष न्यायाधीश चंद्रजीत सिंह ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद राणा की अर्जी खारिज कर दी। राणा के वकील ने विशेष एनआईए अदालत के समक्ष अर्जी दायर कर अदालत से उसे अपने परिवार के सदस्यों से बात करने की अनुमति मांगी थी। उन्होंने कहा था कि उनके परिवार को उनकी चिंता होगी, इसलिए यह उनका मौलिक अधिकार है और उन्हें अनुमति दी जानी चाहिए। एनआईए ने इसका विरोध करते हुए कहा कि अगर राणा की अपने परिवार के सदस्यों से बात करने की अर्जी मंजूर की जाती है, तो वह मामले से जुड़ी अहम जानकारी साझा कर सकता है। उन्होंने कहा कि जांच इस समय अहम चरण में है और फिलहाल उसे परिजनों से बात करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।विशेष अदालत ने इससे पहले पूरी साजिश का पता लगाने के लिए राणा को 18 दिन की एनआईए हिरासत में रखने की अनुमति दी थी।

पहलगाम हमलाः पाकिस्तान से रिश्ते लगभग समाप्त, सिंधु जल समझौता निलंबित

एजेंसी

नई दिल्ली।जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का फैसला लिया है। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीएस) ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने, पाकिस्तान के नागरिकों के लिए सार्क वीजा जारी करने पर रोक लगाने और अटारी-वाघा सीमा को बंद करने का निर्णय लिया है। साथ ही पाकिस्तान के उच्चायोग को सीमित करने का भी निर्णय लिया है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्णय लिया है। हमले में 25 भारतीयों और एक नेपाली नागरिक की मौत हुई थी। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति की आज शाम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में बैठक हुई। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने हमले की कड़ी निंदा की और पीड़ितों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। विदेश सचिव ने

कहा कि इस हमले के बाद, विश्वभर से कई सरकारों ने भारत के प्रति समर्थन और एकजुटता व्यक्त की है, जो आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की भावना दर्शाती है। बैठक में इस आतंकी हमले के पाकिस्तानी संबंधों की जानकारी दी गई। विदेश मंत्रालय के सचिव विक्रम मिस्री ने पत्रकार वार्ता में सीसीएस के निर्णयों की जानकारी दी। इसके अनुसार, सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाएगा, जब तक पाकिस्तान क्रॉस-बॉर्डर आतंकवाद का समर्थन छोड़ने की विश्वसनीय और स्थायी प्रतिबद्धता नहीं करता। अटारी चेक पोस्ट को तुरंत बंद किया जाएगा, जो लोग वैध अनुमोदनों के साथ पार कर चुके हैं, उन्हें 01 मई 2025 से पहले लौटने का अवसर दिया जाएगा। पाकिस्तानी नागरिकों को सार्क वीजा छूट योजना के तहत भारत आने की अनुमति नहीं होगी। पहले जारी किए गए वीजा रद्द कर दिए गए हैं और वर्तमान में भारत में मौजूद पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे के भीतर देश छोड़ना होगा। पाकिस्तानी उच्चायोग में रक्षा, नौसेना और वायु सलाहकारों को पर्सोना नॉन ग्राटा घोषित किया गया है। इन्हें एक सप्ताह के भीतर भारत छोड़ने का आदेश दिया गया है। भारत भी इस्लामाबाद में अपने रक्षा/नौसेना/वायु सलाहकारों को वापस बुलाएगा। इसके अलावा, उच्चायोगों की कुल संख्या को वर्तमान 55 से घटाकर 30 किया जाएगा, जो 01 मई 2025 तक प्रभावी होगा। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की और सभी बलों को उच्च सतर्कता बनाए रखने का निर्देश दिया। यह सुनिश्चित किया गया कि हमले के अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाया जाएगा और उनके प्रायोजकों को भी जवाबदेह ठहराया जाएगा। भारत आतंकवादियों के खिलाफ अपनी कार्रवाई को जारी रखेगा।

राष्ट्रपति से मिले गृहमंत्री और विदेश मंत्री, पहलगाम हमले पर दिया अपडेट

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। दोनों मंत्रियों ने राष्ट्रपति को पहलगाम हमले और देश की सुरक्षा स्थिति की जानकारी दी। राष्ट्रपति भवन ने राष्ट्रपति मुर्मु से दोनों नेताओं की मुलाकात की तस्वीरें जारी की हैं। इस बीच, भारतीय विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने पहलगाम हमले के बारे में विभिन्न देशों के राजदूतों को जानकारी दी। इस बैठक में जर्मनी, जापान, पोलैंड, यूनाइटेड किंगडम और रूस सहित कई देशों के राजदूत शामिल हुए।

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि राजदूतों और उच्चायुक्तों को हमले की स्थिति, उसके पीछे के कारण और भारत की सुरक्षा रणनीति के बारे में बताया गया। सूत्रों के अनुसार ब्रीफिंग भारत के साथ सुरक्षा और आतंकवाद के मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने में रुचि रखने वाले देशों के लिए थी।

अमेरिका के उपराष्ट्रपति वेंस को दी भावभीनी विदाई

एजेंसी

नई दिल्ल्सी। संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेम्स डेविड वेंस गुरुवार प्रातः अपनी जयपुर यात्रा पूर्ण कर स्वदेश रवाना हुए। इस अवसर पर जयपुर एयरपोर्ट पर उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ एवं मुख्य सचिव सुधांश पंत ने उन्हें भावभीनी विदाई दी।

जयपुर से प्रस्थान इस यात्रा का अंतिम चरण था, जिसमें वेंस परिवार ने प्रमुख विरासत स्थलों का भ्रमण किया और भारतीय नेताओं के साथ बातचीत की। एक दिन पहले उन्होंने आगरा में प्रतिष्ठित ताजमहल का दौरा किया था। वेंस 21 अप्रैल को चार दिन की भारत यात्रा पर पहुंचे थे। उनके साथ उनकी पत्नी उषा और तीनों बच्चों इवान, विवेक और मिराबेल भी भारत आए थे। दिल्ली में लैंड होने के बाद वेंस ने अक्षरधाम मंदिर में दर्शन किए। इसके बाद शाम को पीएम मोदी से मुलाकात की। वेंस सोमवार रात को ही दिल्ली से जयपुर के लिए रवाना हो गए थे। इसके बाद

उन्होंने मंगलवार को जयपुर में आमेर का किला देखा। अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने आगरा के ताजमहल का दौरा किया। इसके बाद वापस जयपुर लौटें, जहां से वे वॉशिंगटन के लिए रवाना हुए। तय शेड्यूल के मुताबिक उन्हें जयपुर के सिटी पैलेस का दौरा करना था, लेकिन यह दौरा रद्द कर दिया गया है। दौरा रद्द करने का कोई कारण नहीं बताया गया है, लेकिन माना जा रहा है कि पहलगाम आतंकी हमले की वजह से यह फैसला किया गया।

वीजा रद्द, जल्द से जल्द पाकिस्तान लौटें पाकिस्तानीः भारत

एजेंसी

नई दिल्ली।भारत ने सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीएस) की बैठक में लिए गए निर्णयों के बाद आज कहा कि देश में रह रहे सभी पाकिस्तानियों का वीजा 27 अप्रैल और मेडिकल वीजा 29 अप्रैल तक ही वैध रहेगा। यहां मौजूद सभी पाकिस्तानी नागरिकों को अब जल्द से जल्द भारत छोड़ देना चाहिए। वहीं पाकिस्तान में रह रहे भारतीयों को जल्द से जल्द स्वदेश लौटने को कहा गया है।

विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के मद्देनजर सीसीएस द्वारा लिए गए निर्णयों के क्रम में भारत सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों को तत्काल प्रभाव से वीजा सेवाएं निलंबित करने का निर्णय लिया है। भारत द्वारा पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए सभी मौजूदा वैध वीजा 27 अप्रैल से रद्द कर दिए गए हैं। पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए मेडिकल वीजा केवल 29 अप्रैल

तक वैध रहेंगे। भारत में मौजूद सभी पाकिस्तानी नागरिकों को अब संशोधित वीजा की अवधि समाप्त होने से पहले भारत छोड़ देना चाहिए। विदेश मंत्रालय ने भारतीय नागरिकों को पाकिस्तान की यात्रा करने से बचने की सख्त सलाह दी है। साथ ही वर्तमान में पाकिस्तान में मौजूद भारतीय नागरिकों को भी जल्द से जल्द भारत लौटने की सलाह दी है।

विश्व नेताओं ने प्रधानमंत्री मोदी को फोन कर जताई भारत के साथ एकजुटता

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में हुए भीषण आतंकी हमले के बाद अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने एक स्वर में आतंकवाद के खिलाफ कड़ा रुख दिखाया है। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से फोन पर बातचीत की और आतंकवाद के खिलाफ मजबूती से भारत के साथ खड़े होने का संकल्प दोहराया। जार्डन के किंग और जापान के प्रधानमंत्री ने भी फोन कर हमले में हुई मौतों पर शोक व्यक्त किया है। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भारत के लोगों और पीड़ित परिवारों के साथ एकजुटता व्यक्त की। उन्होंने भारतीय धरती पर हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने हमले की कड़ी निंदा की और भारतीयों के साथ पूर्ण समर्थन और एकजुटता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इस तरह की बर्बरता पूरी तरह से अस्वीकार्य है। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने इस हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में उनके देश का पूर्ण समर्थन व्यक्त किया। जापान के प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा ने फोन पर प्रधानमंत्री मोदी से जम्मू-कश्मीर में हुए हालिया आतंकी हमले में हुई मौतों पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आतंकवाद को किसी भी परिस्थिति में न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता। दोनों नेताओं ने आतंकवाद को मानवता के लिए गंभीर खतरा बताया और इस बात पर जोर दिया कि लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले सभी देशों को आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करना चाहिए। जार्डन के किंग अब्दुल्ला इब्न अल-हुसैन ने निर्दोष लोगों की मौत पर गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने इस बात पर सहमति जताई है कि आतंक के हर रूप की निंदा की जानी चाहिए और इसे किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता। वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन नेताओं के साथ बातचीत के दौरान हमले की पृष्ठभूमि, इसके 'सीमापार चरित्र' और आतंकवादी संगठनों की भूमिका पर जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि यह हमला किस तरह निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाने के उद्देश्य से किया गया था और इसमें विदेशी तत्वों की संलिप्तता के संकेत मिले हैं। प्रधानमंत्री ने भारत की ओर से यह स्पष्ट संदेश दिया कि ऐसी कायरतापूर्ण घटनाओं का करारा जवाब दिया जाएगा।

राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने की पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की भर्त्सना

एजेंसी

नई दिल्ली । राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की भर्त्सना की है। एनजीटी ने इस दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण घटना में मारे गए निर्दोष लोगों के प्रति संवेदना और श्रद्धांजलि अर्पित की । सभी उपस्थित सदस्यों ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें और शोक संतप्त परिवारों को इस अपूरणीय और असामयिक क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने जारी एक विज्ञप्ति में कहा कि पहलगाम में घाटी की झलक पाने के लिए जम्मू-कश्मीर गए अबोध पर्यटकों पर हमला करने की क्रूर घटना की निंदा की जानी चाहिए। एनजीटी ने घटना में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की। एनजीटी के सदस्यों, कार्मिकों, अधिवक्ताओं और रजिस्ट्री द्वारा शोक संतप्त परिवारों के साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

कपिल सिब्बल ने की संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग, कहा- हम सरकार के साथ खड़े हैं

एजेंसी

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से संसद का विशेष सत्र बुलाए जाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले को लेकर संसद का विशेष सत्र बुलाना चाहिए। सभी लोग सरकार के साथ खड़े हैं, क्योंकि यह देश की संप्रभुता पर हमला है। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने मीडिया से बात करते हुए कहा, मैं प्रधानमंत्री मोदी से अपील करता हूं कि उन्हें संसद का विशेष सत्र बुलाना चाहिए। इस सत्र में पहलगाम आतंकी हमले को लेकर चर्चा होनी चाहिए और सरकार को सभी नेताओं से सुझाव लेने चाहिए। सभी लोग सरकार के साथ खड़े हैं, क्योंकि यह देश की संप्रभुता पर हमला है।उन्होंने आगे कहा, मासूम पर्यटकों पर गोली चलाना इंसानियत का काम नहीं है। मैं यही कहूंगा कि आतंकवादी सिर्फ आतंकवादी होता है और उसका कोई मजहब या धर्म नहीं होता है। पाकिस्तान आतंकवाद के जरिए अपने मुद्दों को दुनिया के सामने लाने की कोशिश कर रहा है। कपिल सिब्बल ने कहा, संसद के विशेष सत्र में एक सर्वसम्मति के साथ प्रस्ताव पारित किया जाना

चाहिए, जिसके जरिए हमारा देश यह संदेश दे सके कि हम आतंकवाद को कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे। अगर हम ऐसा करते हैं तो हमें हर बड़े देश में एक प्रतिनिधिमंडल भेजना चाहिए, जिसमें सरकारी सांसद, विपक्षी सांसद और सरकारी कर्मचारी शामिल हों। इसके जरिए हमें दूसरे देशों को बताना चाहिए कि हमारा क्या रुख है। साथ ही हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दबाव बना पाएंगे। सिंधु जल संधि और पाकिस्तान के पीएम के बयान पर सिब्बल ने कहा, ये क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं, लेकिन यह पर्याप्त नहीं होगा। अब पाकिस्तान के पीएम कह रहे हैं कि यह युद्ध की कार्रवाई होगी। मैं इस पर टिप्पणी नहीं करना चाहता, लेकिन हमें एक दीर्घकालिक समाधान की जरूरत है। प्रधानमंत्री मोदी के सर्वदलीय बैठक में शामिल नहीं होने पर उन्होंने कहा, अच्छा होता कि वे ऑल पार्टी मीटिंग में हिस्सा लेते, मगर एक सांसद होने के नाते मुझे अच्छा नहीं लगा। शायद प्रधानमंत्री को लगा हो कि बिहार ज्यादा जरूरी हो। वे यहां से भी पाकिस्तान के खिलाफ कड़ा संदेश दे सकते थे।

पहलगाम हमले के मृतकों को श्रद्धांजलि, सर्वदलीय बैठक में रखा गया दो मिनट का मौन

एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार की ओर से संसद एनेक्सी भवन में आयोजित सर्वदलीय बैठक के दौरान जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के मृतकों को श्रद्धांजलि दी गई। उनके लिए बैठक प्रारंभ होने पर दो मिनट का मौन रखा गया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में चल रही बैठक में गृह मंत्री अमित शाह और विदेश मंत्री डॉ एस. जयशंकर सरकार की ओर से विषय रखेंगे। इसमें लगभग सभी दलों के प्रमुख नेता शामिल हुए हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित अन्य विपक्षी नेता शामिल हुए। एआईएमआईएम के नेता असदुद्दीन ओवैसी थोड़ी देर से बैठक में शामिल हुए। उनका कहना था कि गृह मंत्री ने स्वयं फोन कर बैठक में शामिल होने के लिए कहा था। सभी दलों ने राजनीतिक भिन्नताओं से ऊपर उठकर देश की सुरक्षा और एकजुटता को प्राथमिकता देने की प्रतिबद्धता जताई है।

मेयर चुनाव का वहिष्कार करेगी आआपा : शैली ओबेरॉय

एजेंसी

नई दिल्ली।आम आदमी पार्टी (आआपा) ने होने वाले दिल्ली के मेयर और डिप्टी मेयर के चुनाव का पूरी तरह से वहिष्कार करने का एलान किया है। पार्टी का कहना है कि उसके पार्षद मेयर और डिप्टी मेयर के लिए कल होने वाले मतदान में भाग नहीं लेंगे। पार्टी ने इस बार इन पदों के लिए कोई उम्मीदवार खड़ा नहीं किया है। मुकाबला इस बार भाजपा और कांग्रेस के बीच है। कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं। दिल्ली की पूर्व मेयर शैली ओबेरॉय, नेता सदन मुकेश गोयल और पार्षद अंकुश नारंग ने पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर बहिष्कार की जानकारी दी। शैली ओबेरॉय ने कहा कि एमसीडी मेयर का चुनाव होने जा रहा है। आआपा शुक्रवार को होने वाले मेयर व डिप्टी मेयर चुनाव का पूरी तरह से वहिष्कार करेगी। इस बार आआपा मेयर व डिप्टी मेयर चुनाव में भाग नहीं लेगी। अब दिल्ली में भाजपा की ट्रिपल इंजन की सरकार होगी। केंद्र व राज्य के अलावा अब एमसीडी में भी भाजपा का बहुमत है। हमें उम्मीद है कि भाजपा जनता से किए अपने सारे वादों को पूरा करेगी और कोई भी बहाना नहीं बनाएगी। आआपा विपक्ष की भूमिका बड़ी रचनात्मक तरीके से निभाएगी और भाजपा को उसकी जवाबदेही तय करेगी। नेता सदन मुकेश गोयल ने कहा कि पिछले दो वर्षों में एमसीडी की आआपा की सरकार ने दिल्ली की जनता के लिए जो भी योजनाएं लेकर आई, उसे भाजपा के दबाव में निगमायुक्त ने रद्दी की टोकरी में डाल दिया। हम हाउस टैक्स का प्रस्ताव लाए। इसमें दिल्ली की जनता को छूट थी कि 100 गज से कम के मकान का हाउस टैक्स माफ होगा और 100 से 500 वर्ग गज तक का हाउस टैक्स आधा होगा। यह दिल्ली की जनता को बहुत बड़ी राहत देने की बात थी। यह प्रस्ताव हाउस से पास हुआ। इसके बावजूद भाजपा के दबाव में कमिश्नर ने इसे लागू नहीं किया। इसके अलावा हमने विभिन्न विभागों के 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पास किया और इसके लिए बजट का प्रावधान किया। इसके बाद भी

निगमायुक्त इसपर कुछ नहीं किया। मुकेश गोयल ने कहा कि हमारी पार्टी ने महापौर और उपमहापौर के चुनाव में उम्मीदवार खड़ा नहीं करने का निर्णय लिया है।

इसलिए आआपा मेयर चुनाव में हिस्सा नहीं लेगी। भाजपा को अब सत्ता मिलने जा रही है। उनका मेयर बनने जा रहा है। दिल्ली की जनता से भाजपा ने जो वादे किए है और जो प्रस्ताव हाउस से पास हुए हैं। उनको लागू करवाने की जिम्मेदारी अब भाजपा की है।

कालकाजी में बुजुर्ग दंपत्ति को दिनदहाड़े बंधक बनाकर लूटपाट, एक गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। दक्षिण पूर्वी जिले के कालकाजी थाना इलाके में दिनदहाड़े बुजुर्ग दंपत्ति को उनके ही घर में बंधक बनाकर लूटपाट करने का मामला सामने आया है। दक्षिण पूर्वी जिले के डीसीपी रवि कुमार सिंह ने बताया कि आरोपित बुजुर्ग दंपत्ति का भरोसा जीतने के लिए डिलीवरी ब्वॉय बनकर उनके घर में घुसा था। उसके बाद लूटपाट की पूरी वारदात को अंजाम दिया। पुलिस ने वारदात के तीन दिन बाद मामले में मदनपुर खादर निवासी आशीष को गिरफ्तार किया है। इसके कब्जे से पुलिस ने एक जोड़ी बालियां व सोने की एक अंगूठी के अलावा 4500 रुपये नकद और वारदात में इस्तेमाल

बाइक व आरोपितों के पहने कपड़े बरामद कर लिये हैं। पुलिस आरोपित से पूछताछ कर रही है। पुलिस को 20 अप्रैल को मामले में शिकायत मिली थी। शिकायतकर्ता बुजुर्ग दंपत्ति ने बताया कि आरोपित ने घर में घुसने के बाद चाकू व नकली बंदूक के बल पर उन्हें बंधक बना लिया। इसके बाद 18 हजार नकद व गहने लूटकर फरार हो गया था। जांच के दौरान पुलिस ने स्थानीय सूत्रों व तकनीकी टीम की मदद से आरोपित की पहचान की और उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपित से पूछताछ में पता चला कि वह शिकायतकर्ता के पड़ोस में चपरासी का काम करता था। उसे पैसों की ज़रूरत थी इसलिए उसने बुजुर्ग दंपत्ति को लूटने की साजिश रची क्योंकि वे अकेले रह रहे थे। उसने टेप से अपनी बाइक का नंबर छिपा दिया। बुजुर्गों को धमकाने के लिए एक नकली बंदूक और चाकू लेकर उसने वारदात को अंजाम दिया। इसके अलावा आरोपित ने मफलर से अपना चेहरा भी ढक रखा था और उंगलियों के निशान छोड़ने से बचने के लिए दस्ताने पहने थे।

संक्षिप्त समाचार

जिला के पत्रकारों ने काला पट्टा लगाकर पहलगाम हमले का विरोध कर मृतक के आत्मा की शांति हेतु दो मिनट का मौन धारण किया.

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ः विगत दिनों जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकियों के द्वारा घटना को अंजाम दिया गया जिसमें दर्जनों लोगों की जान चली गई, जो कि बहुत ही निंदनीय घटना है, इस मामले को लेकर पूरा देश सहमा हुआ है, इसी को लेकर देश हित में शुक्रवार को पाकुड़ सूचना भवन के प्रेस क्लब में जिलेभर के पत्रकारों के द्वारा विरोध एवं उस बर्बर घटना में मारे गए मृतक आत्मा की शांति हेतु पत्रकार राजेश भगत की अध्यक्षता में दर्जनों पत्रकारों ने एकत्रित होकर दो मिनट का मौन धारण किया साथ ही इस बर्बरतापूर्ण घटना का विरोध किया साथ ही मौके पर ज़िले के तमाम पत्रकारों ने सामुहिक रूप से काला पट्टी लगाकर पत्रकारिता करने का निर्णय लिया। इस कार्यक्रम में मौके पर पत्रकार राजेश पांडे, राजेश प्रसाद, जयदेव कुमार, सोहन प्रामाणिक, अविनाश मंडल मुकेश जायसवाल, बलराम ठाकुर, प्रीतम सिंह यादव, ममता जायसवाल, रविशंकर मिश्र, उत्तम साह, धनंजय चौबे, शमशेर अहमद, नूरुल इस्लाम, चंदन रक्षित, सुदीप चतुवेर्दी, पंकज भगत, विक्की शर्मा सहित अन्य दर्जनों मौजूद थे।

आमजनों की समस्या से रूबरू हुए उपायुक्त, पदाधिकारियों को दिये निर्देश

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ आम जनमानस के समस्याओं के समाधान और त्वरित निष्पादन को लेकर उपायुक्त मनीष कुमार के द्वारा समाहरणालय सभागार में जनता दरबार का आयोजन किया गया। इस दौरान जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने जनता दरबार में आकर अपनी समस्याओं को उपायुक्त के समक्ष रखा। इस दौरान उपायुक्त द्वारा वहां उपस्थित सभी लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएँ सुनी गयी एवं आश्वस्त किया गया कि संज्ञान में आए हुए सभी शिकायतों की जाँच कराते हुए जल्द से जल्द सभी का समाधान किया जाएगा। इसके अलावे जनता दरबार के दौरान जमीन से संबंधित, रोजगार से संबंधित, मदरसा से संबंधित, पशुपालन विभाग आदि से संबंधित मामले से एवं विभिन्न आवेदन शिकायत के रूप में आये जो कि जिले के विभिन्न विभागों से संबंधित थे। ऐसे में जनता दरबार में सभी शिकायतकर्ता की समस्याएं को सुनने के पश्चात उपायुक्त ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निदेशित किया गया कि सभी आवेदनों का भौतिक जांच करते हुए, उसका समाधान जल्द से जल्द करें। इसके अलावे उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इन शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए एक सप्ताह के अंदर अपना प्रतिपुष्टि उपायुक्त कार्यालय को समर्पित करे, ताकि शिकायतों के निष्पादन में आसानी हो।

डीपीआरओ ने बड़ाघघरी पंचायत भवन एवं प्रोजेक्ट उच्च विद्यालय का किया निरीक्षण

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ जिला पंचायत राज पदाधिकारी प्रीतिलता मुर्मू ने लिट्टीपाड़ा प्रखंड अंतर्गत बड़ाघघरी पंचायत भवन का निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान भस्मक का जायजा लिया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। ज्ञान केन्द्र के सफल संचालन हेतु निर्देशित किया। प्रोजेक्ट उच्च विद्यालय के निरीक्षण के क्रम जिला पंचायत राज पदाधिकारी ने निर्माणधीन हैंड वॉश यूनिट को यथाशीघ्र बनाने का निर्देश पंचायत सचिव को दिया गया। मौके पर मुखिया, पंचायत सचिव एवं रोजगार सेवक उपस्थित थे।

श्री यज्ञा बाबा मूर्ति अनावरण, देव प्रतिष्ठा एवं श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञान महायज्ञ

आखरी दिनः(द्वादशी) प्रातः महान्यास देव नामकरण प्राण प्रतिष्ठा एवं पूणार्हुति एवं विशाल महाभंडारा

महाभंडारा के साथ सात दिवसीय महायज्ञ सह भागवत कथा का हुआ समापन।

महाभंडारा मे हजारों हजार भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।

दिव्य दिनकर संवाददाता

रांची -आज 25 अप्रैल को मोराबादी स्थित यज्ञा बाबा आश्रम के प्रसिद्ध दुर्गा मंदिर प्रांगण में चल रहे सात दिवसीय श्री यज्ञा बाबा मूर्ति अनावरण,देव प्रतिष्ठा एंव श्रीमद् भागवत कथा महा भंडारा के साथ समापन हुआ। इस भंडारे में हजारों हजार भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। इसके पूर्व विद्वान पुजारियों द्वारा विधि विधान से प्रातःमहान्यास देव नामकरण एवं प्राण प्रतिष्ठा हुई।आज के इस धार्मिक महायज्ञ मे मुख्य यजमान की भूमिका संतोष कुमार पांडेय व रवीना पांडेय,हर्ष कुमार व श्रुति श्रेया,अयोध्या बक्षी,अमित विक्रम और निधि शर्मा,राकेश शर्मा व प्रिया शर्मा सपरिवार के साथ निभाई। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे मुख्यरूप से मंदिर के प्रबंधक श्री भरत दास जी महाराज,मुख्य पुजारी पंडित विकास पांडेय,आशुतोष द्विवेदी,शिव किशोर शर्मा,डॉ.अनिल कुमार,रिषिकेश लाल, अजीत कुमार,श्याम पांडेय,चंदन पांडेय,सुनील कुमार,रूपम झा, सिंधु बाला,सुनीता देवी, उमरावती देवी,सुनीता तिवारी, सुमित्रा पांडेय,अंजली उपाध्याय, लक्ष्मीना दुबे,श्रीयांशी आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर प्रातः 7:00 बजे पूराना सदर अस्पताल देवघर से प्रभात फेरी सह जन-जागरूकता रैली निकाली गई

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

सिविल सर्जन डॉ जुगल किशोर चौधरी के निदेर्शानुसार जिला भीबीडी पदाधिकारी डॉ अभय कुमार यादव की अध्यक्षता में आज *दिनांक 25 अप्रैल 2025 को विश्व मलेरिया दिवस* के अवसर, प्रातः 7:00 बजे प्रशिक्षु एएनएम द्वारा पूराना सदर अस्पताल, देवघर से प्रभात फेरी सह जन-जागरूकता रैली निकाली गई, जिसे जिला भीबीडी पदाधिकारी डॉ अभय कुमार यादव एवं जिला भीबीडी सलाहकार डॉ गणेश कुमार यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जो पूराना सदर अस्पताल से निकल कर आर मित्रा प्लस टू विद्यालय की तरफ से थाना रोड की ओर मुड़कर बीग बाजार वाले रास्ते की तरफ से बैद्यनाथधाम रेलवे स्टेशन रोड होते हुए दीनबंधु स्कूल मोड़ से राय एंड कंपनी चौक की ओर मुड़कर सीधे टावर चौक की तरफ से होते हुए पुराना सदर अस्पताल वापस आई। इसके बाद सभी प्रशिक्षु एएनएम को मलेरिया के बारे में जिला भीबीडी पदाधिकारी द्वारा संक्षिप्त जानकारी देते हुए बताया गया कि मलेरिया की रोकथाम व इसके अंत हेतु सभी को सक्रिय भूमिका के साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाहन करना जरूरी है। रैली के दौरान मलेरिया से बचाव संबंधी तख्ती के साथ जन-जागरूकता, रोकथाम व इसको नियंत्रित कर मलेरिया को अंत करने संबंधी कई नारे भी लगाए गए। अंत में सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वाहन करते हुए मलेरिया को नियंत्रित करने, समुदाय का व्यवहार परिवर्तन करने, जल जमाव को रोकने आदि की अपील आदि के साथ लोगों को जागरूक हेतु निभाने

के लिए शपथ-ग्रहण भी कराया गया। इस उपलक्ष्य पर जिला भीबीडी पदाधिकारी डॉ अभय कुमार यादव, जिला भीबीडी सलाहकार गणेश कुमार यादव, एफएलए रवि सिन्हा, डीईओ कांग्रेस मंडल, एमपीडब्ल्यू राकेश कुमार, शहरी बीटीटी शंकर दयाल, एनयूएचएम सपोर्ट स्टाफ अमरेन्द्र कुमार, एएनएम स्कूल की प्राचार्या सहित सभी प्रशिक्षु एएनएम आदि उपस्थित थे।

कोडरमा में अवैध पशु तस्करी का भंडाफोड़, 5 गिरफ्तार

कोडरमा विजय यादव

कोडरमा पुलिस को गुप्त सूचना के आधार पर की गई छापेमारी में अवैध पशु तस्करी का मामला उजागर हुआ है। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर गठित विशेष टीम ने 24-25 अप्रैल की रात को कोडरमा थाना क्षेत्र से दो बोलेरो पिकअप (BR 01 GP 5220 AüSX BR 01 GN 618) से कुल 30 भैंस के बच्चों को बरामद किया। इस कार्रवाई में 5 तस्करों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें सभी बिहार के नालंदा जिले से संबंधित हैं। कोडरमा थाना कांड संख्या 71/25 के तहत मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

पीएलवी कार्य क्षमता निर्माण को लेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःझालसा रांची के निदेर्शानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ के तत्वाधान में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ शेष नाथ सिंह के निर्देश पर डालसा सचिव रूपा बंदना किरो के उपस्थिति में पीएलवी कैपेसिटी बिल्डिंग सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ के सभागार में आयोजित की गई। उक्त कार्यक्रम में अपने अपने कार्य क्षेत्रों में कार्य कर रहे सभी पीएलवी के कार्य की समीक्षा की गई। सचिव रूपा बंदना किरो ने सभी उपस्थित पैरा लीगल वॉलिंटियर्स को उनके कार्य कौशल को बढ़ाने को लेकर कई कानूनी जानकारी दी । इस कार्यक्रम के दौरान पैरा लीगल वॉलिंटियर्स को कानूनीतौर पर सशक्त बनाने को लेकर कई महत्वपूर्ण कानूनी जानकारी देते हुए। कार्य को बेहतर करने को लेकर कई

दिशा निर्देश दी गई। मौके पर उपस्थित लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम के चीफ सुबोध कुमार दफादर, डिप्टी चीफ मो नुकूमुद्दीन शेख, सहायक गंगाराम टुडू ने मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्य पर विस्तृत जानकारी दी साथ ही मौलिक अधिकार के हनन से संबंधित कई महत्वपूर्ण कानूनी बिंदुओं पर पैरा लीगल वॉलिंटियर्स को जागरूक की। कार्य क्षेत्रों में कोई परेशानी होती हो तो जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ से तुरंत संपर्क कर समस्या का निदान कराने को लेकर निर्देश दी गई। मौके पर पीएलवी पिंकी मंडल, ज्योति कुमारी, रानी साहा, सुजाता घोष, जयंती कुमारी, प्रियंका हेंब्रम, मोलिता कुमारी, मल्लिका सरकार,जयंती टुडू, मिरु बेसरा, काहू हांसदा, पिंटू मरांडी, मनोज सोरेन,मैनुल शेख, एजारुल शेख, याकूब अली, चन्दन रविदास, अमूल्य रत्न रविदास, खुदु राजवंशी, चंद्र शेखर घोष,विजय कुमार राजवंशी, उत्पल मंडल, नीरज कुमार राउत, उपस्थित रहे।

बलसोकरा में वक़्फ बचाओ संविधान बचाओ कॉन्फ्रेंस कल तैयारी पूरी

दिव्य दिनकर संवाददाता

चान्हो !चान्हो प्रखंड के बलसोकरा मदरसा चौक में 26 अप्रैल शनिवार को 10 बजे से मुत्ताहिदा ओलमा मिल्ली काउंसिल सहित अन्य सामाजिक संगठनों के द्वारा आयोजित वक़्फ बचाओ संविधान बचाओ कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है इसकी तैयारी पूरी कर ली गई है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से बिहार झारखंड उड़ीसा बंगाल के अमीर ए शरीयत मौलाना सैयद अहमद वली फैसल रहमानी इदारे शरिया से मौलाना कुतुबुद्दीन रिजवी मौलाना तहजीबुल हसन स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी कल्याण मंत्री हफीजुल हसन कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की कांग्रेस नेता बंधु तिर्की कांग्रेस विधायक सुरेश कुमार बैठा अजय नाथ शाहदेव एआइएमआइएम के प्रदेश अध्यक्ष मोहम्मद शाकिर सहित झारखंड इमारत ए शरिया से मुफ़्ती अनवर कासमी झारखंड सादर

मजलिस ए ओलमा झारखंड हज कमेटी के सदस्य साहिल अहमद कई सामाजिक संगठनों के लोग शामिल होंगे मुत्ताहिदा मिल्ली काउंसिल के केंद्रीय सचिव रहमतुल्लाह अंसारी ने शुक्रवार को जानकारी देते हुए बताया कि हाल ही में केंद्र सरकार के द्वारा वक़्फ बोर्ड कानून में बदलाव किए जाने के विरोध में पूरे देश में विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है ताकि केंद्र सरकार अपनी मनमानी और बहुमत के दम पर असंवैधानिक तरीके से कानून में बदलाव किया है इसको वापस ले। रहमतुल्लाह अंसारी सचिव मुत्ताहिदा ओलमा मिल्ली काउंसिल

विद्यार्थी परिषद ने कैंसर के मरीज को किया रक्तदान

रक्तदान एक उत्तम तरीका है दूसरे को रगों में जीवित रहने का - संजय

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद पाकुड़ द्वारा 14 वर्षीय बच्ची कैंसर के मरीज को किया रक्तदान। पाकुड़ शहर के रेलवे कॉलोनी सिद्धार्थ नगर मोहल्ले के निवासी लव रजक के 14 वर्षीय बच्ची जो की कैंसर नामक गंभीर बीमारी से ग्रसित है जिसका इलाज वेल्लोर में चल रहा है।उसके शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा अत्यधिक घट गई थी। पिता लव रजक ने विद्यार्थी परिषद के विभाग संयोजक अमित साहा से संपर्क किया जानकारी मिलते ही अमित साहा ने विद्यार्थी परिषद के पूर्व कार्यकर्ता संजय हालदार से रक्तदान हेतु आग्रह किया। संजय हलदर ने तुरंत पाकुड़ शहर स्थित ब्लड बैंक जाकर मरीज को यथाशीघ्र

रक्तदान किया। संजय हलदर ने रक्तदान कर कहा कि रक्तदान महादान है हम सभी को रक्तदान के लिए हमेशा आगे आना चाहिए यह एक उत्तम तरीका है दूसरों के रगों में जीवित रहने का। विभाग संयोजक अमित साहा ने बताया कि विद्यार्थी परिषद सदैव रक्तदान के लिए तात्पर्य रहती है हमें मरीज के परिजनों द्वारा सूचना मिलते ही विद्यार्थी परिषद के सभी वर्तमान एवं पूर्व कार्यकताओं से रक्तदान के लिए आग्रह कर यथाशीघ्र मरीज को रक्त उपलब्ध कराई जाती है। हम छात्रों का यह कर्तव्य बनता है कि अपने समाज को रक्तदान के लिए और अधिक जागरूक करें ताकि कभी किसी मरीज की जान रक्त की कमी के वजह से ना जाए। मरीज के मामा सोनू भास्कर में रक्त लेते हुए विद्यार्थी परिषद का आभार व्यक्त किया और कहा कि हम पहले से देखते आ रहे हैं विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता रक्तदान के लिए हमेशा आगे आते हैं इसी आशा के साथ हमने अपने मरीज के लिए विद्यार्थी परिषद से आग्रह किया और हमें रक्त उपलब्ध हो गया इसके लिए मैं विद्यार्थी परिषद आभार व्यक्त करता हूं।मुझे भी विद्यार्थी परिषद के माध्यम से रक्तदान का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो मैं अवश्य करूंगा। मौके पर विद्यार्थी परिषद के विशाल भगत,युवा नेता अनिकेत गोस्वामी उपस्थित थे।

उद्यमिता पंजीकरण सह जागरूकता शिविर का हुई आयोजन

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो,कुन्दन पासवान

टंडवाःचतरा। उद्योग विभाग झारखंड सरकार एवं औद्योगिक जनसंरचना विकास निगम (जिडको) द्वारा एमएसएमई के प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे विश्व बैंक समर्थित रैंप कार्यक्रम के तहत, शुक्रवार को आरसेटी चतरा में उद्यमिता पंजीकरण सह जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य एमएसएमई को औपचारिक रूप देना, उद्यमिता प्रक्रिया को सरल बनाना एमएसएमई को सरकारी योजनाओं की जानकारी देना था। आयोजित शिविर के दौरान 30 उद्यमियों ने ऑन स्पॉट पंजीकरण करवाया। जिससे जिले में औपचारिक एमएसएमई इकाइयों की संख्या में वृद्धि हुई है। बताते चलें कि एमएसएमई मंत्रालय द्वारा राज्य के रैंप कार्यक्रम के अंतर्गत कुल 19 परियोजनाओं की स्वीकृति दी गई है, जिसमे दो परियोजनाओं एमएसएमई औपचारिकरण और सुविधा केंद्रों की स्थापना को राज्य रैंप समिति ने 7 मार्च 2025 को मंजूरी दी थी। ईओडीबी मैनेजरों को इन परियोजनाओं के जिला स्तर पर क्रियान्वयन हेतु नोडल नियुक्त किया गया है। उक्त जागरूकता कार्यक्रम में डीडीएम नाबार्ड, जिला अग्रणी प्रबंधक, ईओडीबी प्रबंधक, आरसेटी डायरेक्टर समेत अन्य सभी संबंधित उपस्थित थे।

कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले की घटना के खिलाफ कांग्रेस ने टावर चौक पर कैंडल मार्च निकाला

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमला के खिलाफ तथा इस आतंकी हमले में मारे गए उन तमाम निर्दोष पर्यटकों की आत्मा की शांति के लिए देवघर जिला कांग्रेस कमिटी ने देवघर के गांधी प्रतिमा समक्ष टावर चौक पर जिलाध्यक्ष प्रो उदय प्रकाश के नेतृत्व में कैंडल मार्च निकाला। इस दौरान सभी कांग्रेस जनों ने ऐसी घिनौनी हिंसक आतंकी हमले का विरोध किया। कैंडल मार्च के दौरान उपस्थित पार्टी नेताओं तथा कार्यकताओं ने पाकिस्तान तथा आतंकवाद के खिलाफ मुदार्बाद के नारे भी लगाए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष डॉ मुन्नम संजय ने इस आतंकवादी घटना का कड़ी निंदा करते हुए कहा कि यह घटना मानवता को शर्मशार करने वाली घटना है। पूरे देश में गम और आक्रोश का माहौल है। भारत सरकार इस घटना में संलिप्त आतंकवादियों एवं उनके आकाओं के खिलाफ ठोस कदम उठाऐं। उन्हें ऐसी सजा मिले कि फिर से कोई हिंदुस्तान की तरफ आंख उठा कर देखने की

हिमिकत नहीं कर सके। हमले में तमाम मारे गए सभी निर्दोष पर्यटकों की आत्मा को शांति मिले तथा सभी घायल शीघ्र स्वस्थ्य बनें इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूॅं। जिलाध्यक्ष प्रो उदय प्रकाश ने कहा कि पूरे हिंदुस्तान को झकझोर देने वाली इस अमानवीय घटना की हम कड़ी से कड़ी निंदा करते हैं। घटना में मारे गए सभी नागरिकों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करता हूॅं। हमारी मांग है भारत सरकार उन आतंकियों के खिलाफ कठोर निर्णय लें, ताकि उन्हें कठोर सजा मिल सके, यही उन तमाम मृतकों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इसके लिए पूरा देश एक है। जब पूरे जम्मू कश्मीर में थ्री टायर यानि त्रि स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था लागू है। ऐसे में कश्मीर के प्रमुख पर्यटक क्षेत्रों में,जहां हजारों सेनानी प्रतिदिन आते हैं। वहां सुरक्षा में चुक होना, देश की सुरक्षा की और उंगली खड़ी करती है। इसकी नैतिक जिम्मेदारी भी देश के गृहमंत्री और प्रधानमंत्री को लेनी चाहिए। आतंकियों के पनाहगार पाकिस्तान को सिर्फ पानी बंद कर देना और आटारी बॉर्डर सील कर देना ही काफी नहीं है। इस घटना के माकूल जवाब में कड़े एवं बड़े निर्णय लेने की जरूरत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी पहले देश की नागरिकों की सुरक्षा की चिंता करें। घटना में मारे गए नागरिकों की चीता को आग भी नहीं लगी है, अंतिम संस्कार भी नहीं हो पाया है, उनके परिजनों से पहले तो एक बार मिल लेते। देश के आंतरिक सुरक्षा पर सर्वदलीय बैठक में हिस्सा ले लेते। आपकी प्राथमिकता में इससे पहले बिहार का चुनाव है । प्रधानमंत्री जी राज्यों के चुनाव और रैलियां होते रहेंगी। आप यह कोन सा राज धर्म निभा रहे हैं। इस दौरान कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रदेश सचिव राजेन्द्र दास, जिला महासचिव दिनेश कुमार मंडल, नगर अध्यक्ष रवि केसरी,जिला पदाधिकारी रवि गुप्ता,मकसूद आलम, मुकुंद दास,सौरभ दास, युवा जिलाध्यक्ष कुमार राज, नगर कांग्रेस के कुमार बाबा, सुधीर गुप्ता,पंकज कुमार,

प्रखंड अध्यक्ष राजीव रंजन उर्फ गुलाब यादव,गणेश दास,विकास राउत,इम्तियाज शेख,बिनोद मणि,आशुतोष पासवान,चंदन कुमार,अशोक झा, प्रितम भारद्वाज, मुकेश बर्नवाल, पिंटू कुमार आदि मौजूद थे।

उपायुक्त रमेश घोलप ने जनता दरबार के माध्यम से आमजनों की सुनी समस्याएं

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो, कुन्दन पासवान

टंडवाःचतरा। समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में उपायुक्त रमेश घोलप ने जनता दरबार के माध्यम से समस्याओं को लेकर मिलने आए आमजनों की समस्याएं सुनी। जनता दरबार में मुख्य रूप से भूमि विवाद, पेयजलापूर्ति से संबंधित, दिव्यांग ट्राई साइकिल, शिक्षा विभाग से संबंधित, उग्रवादी हिंसा में मारे गए मृत्य व्यक्ति के आश्रितों को मुआवजा से संबंधित, समेत अन्य मामले शामिल है। एक एक कर सभी आमजनों की समस्याओं से जुड़े आवेदनों का अवलोकन कर संबंधित विभाग के अधिकारियों को नियमसंगत जल्द से जल्द मामले का निष्पादन करने का निर्देश दिया गया। ज्ञात हो कि सप्ताह के प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार को पूर्वाह्न 11.30 बजे से 01.00 बजे अपराह्न तक समाहरणालय में उपायुक्त द्वारा जनता दरबार के माध्यम से आम जनों की समस्याएं सुन उनका निराकरण किया जाता है।

संक्षिप्त समाचार

उपायुक्त ने मलेरिया की रोकथाम के लिए स्वच्छता बनाए रखने की अपील

सुस्मित तिवारी आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़ उपायुक्त मनीष कुमार व सिविल सर्जन डॉ मंटू कुमार टेकरीवाल, उपाधीक्षक सदर अस्पताल डॉ मनीष कुमार एवं जिला यक्ष्मा पदाधिकारी के द्वारा शुक्रवार को सदर अस्पताल परिसर से मलेरिया एवं कालाजार जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उपायुक्त मनीष कुमार ने बताया कि जागरूकता रथ द्वारा गाँव गाँव में जाकर मलेरिया से बचाव एवं रोकथाम के बारे में प्रचार प्रसार किया जाएगा। उपायुक्त ने बताया कि मलेरिया के प्रति जन जागरूकता के उद्देश्य से मलेरिया रथ रवाना किया गया है।उपायुक्त ने जिले के नागरिकों से मलेरिया की रोकथाम के लिए अपने घरों और आसपास साफ सफाई और स्वच्छता बनाए रखने की अपील की है।मलेरिया बीमारियां फैलने का प्रमुख कारण अपने घरों के आसपास गंदा पानी भरा होना, साफ-सफाई नहीं होना एवं कचरा फैला हुआ होना है जिससे बीमारियां फैलती है। उन्होंने कहा कि मलेरिया बीमारी को रोकने के लिए पुराने टायर, खराब सामान और अन्य ऐसी वस्तुएं जिसमें पानी जमा होता है उन्हें हटाना होगा ताकि पानी जमा न हो सके।

वीर कुंवर सिंह के स्मृति में करों प्रखंड में धूमधाम से मनाया गया शौर्य दिवस

करों, देवघर

वीर कुंवर सिंह स्मारक समिति के सौजन्य से करों प्रखंड के करों ग्राम स्थित बाबा धर्मराज चौक के समीप वीर शूरवीर बाबू कुंवर सिंह की स्मृति में शौर्य दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस आयोजन में सालतर, रानीडीह, विरेनगड़िया सहित आस-पास के विभिन्न पंचायतों से बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और बाबू कुंवर सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की। समाजसेवी चाहत कुमारी ने इस अवसर पर कहा कि बाबू कुंवर सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे, जिनसे अंग्रेज हमेशा भयभीत रहते थे। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे बाबू कुंवर सिंह के पदचिन्हों पर चलें और देशभक्ति की भावना को आत्मसात करें। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने बारी-बारी से बाबू कुंवर सिंह की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की और उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर शशिप्रकाश सिंह, विष्णु चौधरी, प्रखंड विकास पदाधिकारी हरि उरांव, इंद्रजीत सिंह ह्यजगनाथ सिंहह्न सहित कई अन्य गणमान्य भी मौजूद रहे।

भगैया में पहलगाम में पर्यटकों की हत्या के विरोध में निकला गया मशाल जुलूस

मंडरो: जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के विरोध में युवकों के द्वारा मशाल जुलूस निकाला गया. जुलूस भगैया चौक से शुरू होकर मिजाचौकी मंडरो मुख्य सड़कों पर निकाला गया। वहीं पाकिस्तान आतंकवादी का पुतला जलाया गया. मशाल जुलूस के माध्यम से लोगों ने पाकिस्तान के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया ।हिन्दुस्तान जिंदाबाद तथा पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाये. इस जुलूस में बड़ी संख्या में युवा शामिल हुए और घटना की कड़ी निंदा की।कहा कि जिस प्रकार धर्म पूछकर निर्दोष पर्यटकों की हत्या की गयी है, वह बहुत शर्म की बात है. नारा लगा रहे युवाओं ने कहा कि पाकिस्तान संभल जाओ अब वह भारत नहीं है, तुमने जितने निदोर्षों का खून बहाया है, एक-एक हत्या का बदला भारत लेगा. लोगों ने हाथों में मशाल लेकर पहलगाम हमले के दोषियों को कड़ी सजा देने की मांग की. लोगों ने कहा कि देश विरोधियों को माफ नहीं करेंगे.हिंदुओं की हत्या बंद करो, जैसे नारे लगाये. देश की 140 करोड़ जनता इस जघन्य हत्याकांड का बदला लेगी।

देसी कट्टा के साथ एक युवक को मिजाचीकी पुलिस ने पकड़ा

मंडरो: मिजाचौकी थाना क्षेत्र के बड़तल्ला गांव में ग्रामीणों ने एक युवक को देशी कट्टा के साथ पकड़ कर मिजाचौकी थाना पुलिस के हवाले किया ।मिली जानकारी के अनुसार युवक अवधेश मंडल बड़तल्ला गांव में घुमते रहता था। गांव में हाथ में देशी कट्टा ले कर घुमते रहता था एवं धमकाने व देशी कट्टा से फायरिंग कर दहशत फैलाने एवं ग्रामीण को कुछ बोलने पर गोली मारने की धमकी देता था। रात्री में चोरी का अंजाम देता था इससे त्रस्त ग्रामीणों ने कट्टा सहित पकड़ कर मिजाचौकी थाना पुलिस को सुपुर्द किया है ।मिजाचौकी थाना पुलिस जांच में जुट गई। वही बड़तल्ला गांव के ग्रामीणों ने बताया की पकड़ा गया व्यक्ति लोगो को डराने का काम करता था। मौके पर सैकड़ों लोगों की भीड़ जुट गई। मिजाचौकी पुलिस देशी कट्टा के साथ युवक को पकड़कर थाना ले गई।

परमानन्द रामानुज वैष्णोदास महाराज जी के निधन पर भाजपा के पूर्व सांसद सुशील कुमार सिंह ने गहरा शोक व्यक्त किया।

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के सदर प्रखंड में परसडीह पंचायत के ग्राम सिमरी (दोसमा) निवासी श्री परमानन्द रामानुज वैष्णोदास महा-राज जी के निधन पर भाजपा के पूर्व सांसद सुशील कुमार सिंह एवं मुखिया प्रतिनिधि अमरीश सिंह एवं पंचायत वासियों ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि इनका निधन हम सभी लोगों के लिए बहुत ही दुःखद है।हमलोगो ने ऐसे परम पूज्य संत को खो दिया जिन्होंने अपना पुरा जीवन सनातन धर्म के प्रचार और धर्म रक्षक के रूप मे बिता दिया।इनका जन्म सिमरी गाँव में हुआ था।अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म के प्रति प्रचार प्रसार में बिता दिया एवं देश के विभिन्न राज्यों में महायज्ञ और कई मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा करवाए।इन्होंने अपने जीवन का अधिक समय दिल्ही स्थित अपने मठ,आश्रम में बिताए यह वही रहा करते थे और जगह-जगह जाकर सनातन धर्म का प्रचार प्रसार करते रहे।इनका निधन दिल्ली के एक निजी अस्पताल में हुआ और अंतिम संस्कार पैतृक गाँव सिमरी में हुआ एवं इनके बहुत सारे शिष्य उपस्थित रहे।ऐसे महान परम पूज्य संत को जाना हम सभी के लिए बहुत दुःखद है।जिसकी भरपाई

निकट भविष्य मे नही हो सकता।यह अपना पूरा जीवन स-ांसारिक सुखों को त्याग कर सम्पूर्ण जीवन भगवान की आराधना और समाज के कल्याण करने में बिता दिए इनके निधन पर भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष कृष्णवल्लभ कुमार सिंह उर्फ बबुआ जी,परसडीह पंचायत के मुखिया उषा देवी,प्रखण्ड बीस सूत्री सदस्य भरत सिंह,जिला मीडिया प्रभारी मितेन्द्र कुमार सिंह,समाजसेवी पंकज सिंह,पैक्स प्रबंधक अनिल सिंह,निरंजन सिंह,विशाल कुमार उर्फ दुदुन सिंह,शिक्षक माखन सिंह,बिनोद सिंह,बिजेन्द्र सिंह,मंटू सिंह,उप मुखिया राजेश शर्मा,विजय सिंह एवं पंचायत वासियों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

मशाल खेल कूद प्रतियोगिता का पीएम श्री अनुग्रह स्कूल में हुआ शुभारंभ

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय स्थित पीएम श्री अनुग्रह मध्य विद्यालय में कार्यकारी निदेशक बिहार राज्य खेल प्राधिकार एवं डीईओ सुरेंद्र कुमार के आदेशानुसार मशाल खेल कूद प्रतियोगिता का प्रधानाध्यापक उदय कुमार सिंह ने किया शुभारंभ। बिहार में खेल के प्रति बच्चों में अनुराग पैदा करने के लिए राज्य सरकार विद्यालय, संकुल,प्रखंड एवं जिला स्तर पर मशाल 2025 का आयोजन करा रही है। हेडमास्टर ने कहा कि इस आयोजन को विद्यालय स्तर पर 25 से 27 अप्रैल के बीच करना है जिसमें पोर्टल पर 77 बच्चों का विभिन्न खेलों में पंजीकरण कराया गया है। बच्चों ने एथलेटिक क्रिकेट बॉल थ्रोइंग, फुटबॉल एवं वॉलीबॉल के लिए पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराया गया एवं उमंग के साथ प्रतिस्पधाओं में भाग लिया। प्राचार्य उदय कुमार सिंह ने एथलेटिक की विभिन्न कॉम्पिटिशन को हरी झंडी दिखाकर शुरूआत किया। मशाल खेल कूद इवेंट्स में सफल बच्चे क्रमशः संकुल, प्रखंड एवं जिला स्तर पर भाग लेंगे।खेलने की भावना अंततः पढ़ाई में अच्छा परिणाम देती है। स्टूडेंट्स का समग्र विकास होता है।इस अवसर पर विद्यालय में खेल के नोडल शिक्षक योगेंद्र पाल, सभी शिक्षक शिक्षिकाएं एवं डीईओ कार्यालय के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

उपायुक्त के निरीक्षण पश्चात बालिका संप्रेक्षण गृह की सुविधाओं को किया जा रहा दुरुस्त

मॉडल बालिका संप्रेक्षण गृह के रूप में किया जा रहा है विकसित

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

उपायुक्त सह जिला दण्डाधिका-री विशाल सागर द्वारा बालिका संप्रेक्षण गृह निरीक्षण के क्रम में सुविधाओं और आवश्यकताओं के साथ पाए जाने वाले कमियों को ससमय दुरुस्त करने का निर्देश संबंधित विभाग के अधिकारियों को दिया था, जिसके पश्चात इस दिशा में कार्य शुरू कर दिया गया है, जिसे जल्द ही पूर्ण कर लिया जाएगा। इस-के अलावा इस कड़ी में बालिका

संप्रेक्षण गृह में रहने वाली बच्चियों को बेहतर माहौल देने के उद्देश्य से एंटरटेनमेंट रूम, जहाँ खेलकूद के साथ ज्ञानवर्धक इंडोर गेम खेलने की सुविधा होगी। इसके अलावा वीसी रूम, डाइनिंग हॉल का निर्माण कराया जा रहा है, जहां बैठने की व्यवस्था, डायनिग टेबल, वाशबेसिन, रसोईघर का मरम्मत के साथ किचन संबंधी समान और विद्युत से जुड़े कार्यों को किया जा रहा है, जिसे जल्द ही पूर्ण कर लिया जाएगा। साथ ही बच्चियों को एक बेहतर अनुभव प्रदान करने की दिशा में बालिका संप्रेक्षण गृह में सौंदर्यीकरण एवं वॉल पेंटिंग का कार्य जा रहा है।

उपायुक्त ने कियाऔद्योगिक क्षेत्र में विधि व्यवस्था व आवंटित भूखंड के दाखिल खारिज से संबंधित बैठक का आयोजन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज दिनांक-25.04.2025 को उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी विशाल सागर की अध्यक्षता में देवघर जिला अंतर्गत देवीपुर अंचल में जियाडा, संथाल परगना प्रक्षेत्र के लिए अधिग्रहित औद्योगिक क्षेत्र में विधि व्यवस्था व आवंटित भू-खण्ड के दाखिल खारिज से संबंधित बैठक का आयोजन किया गया।

इसके अलावा बैठक के दौरान उपायुक्त विशाल सागर ने संबंधित अधिकारियों को निदेशित कि देवीपुर अंचल अंतर्गत अधिग्रहित औद्योगिक क्षेत्र हेतु ल आवंटित की गई जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराने का निर्देश दिया।साथ ही उपरोक्त भूमि दाखिल खारिज से कार्य सुनिश्चित कर उपायुक्त कार्यालय को अवगत कराने का निर्देश दिया। बैठक में उपरोक्त के अलावे अपर समाहर्ता देवघर हीरा कुमार, सहायक निदेशक जियाडा दीपमाला, चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष, सदस्य आदि उपस्थित थे।

संजय सरावगी बने बेगूसराय के प्रभारी मंत्री, भाजपा में खुशी

प्रियंका कुमारी

बखरी, बेगूसराय। बिहार सरकार के राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री तथा दरभंगा के विधायक संजय सरावगी को बेगूस-राय जिले का प्रभारी मंत्री नियुक्त किए जाने पर जिले के भाजपा कार्यकताओं में हर्ष की लहर दौड़ गई है। जिला भाजपा प्रवक्ता सिधेश आर्य ने इस निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि श्री सरावगी के जिला कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के अध्यक्ष मनोनीत होने से जिले की विकास योजनाओं की निगरानी और उनके क्रियान्वयन में और अधिक तेजी आएगी। प्रवक्ता ने बताया कि श्री स-रावगी का बेगूसराय जिले से विशेष जुड़ाव रहा है। वे 1990 के दशक में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् में सक्रिय रहते हुए बखरी अनुमंडल सहित पूरे जिले के कार्यकताओं से लगातार सम्पर्क में रहे हैं। इसी कारण उन्हें यहां की जन समस्याओं की गहरी समझ है। भाजपा कार्यकताओं का विश्वास है कि प्रभारी मंत्री के रूप में श्री सरावगी न केवल जनसमस्याओं का बेहतर समाधान निकालेंगे, बल्कि विकसित बखरी विकसित बेगूसराय की दिशा में ठोस कदम उठाएंगे। पार्टी कार्यकताओं ने उन्हें बधाई देते हुए विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में जिले को विकास के नए आयाम मिलेंगे।

आईसीएआई के सीआईआरसी की देवघर सीपीई स्टडी चैप्टर द्वारा पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों को श्रद्धांजलि

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

दिनांक 22 अप्रैल 2025 को हुए पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट्स संस्थान (क्ळअक) के सीआईआरसी की देवघर सीपीई स्टडी चैप्टर द्वारा आज देवघर के सभी गण्यमान्य चार्टर्ड एकाउंटेंट्स एकत्रित होकर हमले में मारे गए निर्दोष लोगों के प्रति अपनी गंभीर संवेदना व्यक्त की एवं 2 मिनट का मौन रख उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की । आज आईसीएआई के निदेर्शानुसार, देशभर की सभी श-ाखाओं, पीओयू, स्टडी चैप्टर्स एवं स्टडी सर्किल्स द्वारा शाम 4:00 बजे दो मिनट का मौन रख कर हमले में मारे गए निर्दोष लोगों को

श्रद्धांजलि अर्पित की गई है एवं उनके परिजनों के प्रति सहानुभूति व्यक्त गयी है । इस अवसर पर देवघर सीपीई स्टडी चैप्टर के सदस्यगण एवं चार्टर्ड एकाउंटेंसी के विद्यार्थी उपस्थित हुए और 4:00 बजे सामूहिक रूप से मौन रखकर दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु प्रार्थना की। शोकपूर्ण वातावरण में सभी ने आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट होकर मानवता, करुणा और शांति के मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की एवं आतंकवादियों तथा उनके आकाओ के इस कायराना कृत्य की कड़े शब्दो में भर्तसना की। स्टडी चैप्टर के कन्वेनर उअ पंकज सुल्तानिआ ने शोक व्यक्त करते हुए कहा की ₹पहलगाम आतंकी हमले में निर्दोष लोगों की दर्दनाक मृत्यु हम सभी के लिए अत्यंत पीड़ादायक है। हम इस दुख की घड़ी में पीड़ित परिवारों के साथ खड़े हैं और अपनी गहन संवेदना व्यक्त करते हैं। यह मौन श्रद्धांजलि हमारे सामूहिक शोक और एकता का प्रतीक है। देवघर सीपीई स्टडी चैप्टर ने राष्ट्रीय एकता, शांति और मानवीय मूल्यों को बनाए रखने के अपने संकल्प को दोहराया और प्रार्थना की की ईश्वर सभी दिवंगत आत्माओ को शांति प्रदान करे एवं अपने श्री चरणों में स्थान दे।

संत निरंकारी सत्संग भवन शाहपुर में रक्तदान शिविर का आयोजन

जिला स्तरीय रक्तदान शिविर सह मानव एकता दिवस पर 156 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। संत निरंकारी मिशन की ओर से जिला स्तरीय रक्तदान शिविर सह मानव एकता दिवस पर 156 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। मानवता के मसीहा बाबा गुरुवचन सिंह जी की पवन स्मृति में जिला स्तरीय रक्तदान शिविर का आयोजन 24 अप्रैल को संपूर्ण निरंकारी जगत द्वारा देश में रक्तदान शिविरों के आयोजन से मानव एकता दिवस के रूप में मनाया गया। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मानव कल्याणार्थ के लिए संत निरंकारी मिशन की सामाजिक शाखा संत निरंकारी चेरिटेबल फाउंडेशन द्वारा भारत वर्ष में स्थापित निरंकारी मिशन की सभी ब्रांचों सहित देश की राजधानी दिल्ली में रक्तदान शिविर जैसे महाअभियान का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें रक्तदाता स्वेच्छापूर्वक सम्मिलित होकर पूरे जोश एवं उत्साह से रक्तदान किया। यह कार्यक्रम बेगूसराय में संत निरंकारी सत्संग भवन शाहपुर में भी आयोजन किया गया। युग प्रवर्तक बाबा गुरुवचन सिंह जी ने सत्य के बोध द्वारा मानव जीवन को सभी प्रकार

के भ्रमों से मुक्त करवाया। साथ ही समाज उत्थान के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाओं को क्रियान्वित किया। जिनमें सादा शादियां, नशा मुक्ति एवं युवाओं को खेलो के प्रति प्रेरित किया। समाज में व्याप्त कुरीतियों के उस दौर के उपरांत बाबा हरदेव सिंह जी के प्रेरक संदेश रक्त नाड़ियां में बहे, न की नालियों में द्वारा सभी श्रद्धालुओं को एक नई सकारात्मक दिशा मिली। उसी प्रेरक संदेश को प्रत्येक निरंकारी भक्त मानवता के उपकार के लिए निरंतर उसे जीवंत रूप में अपना कर लोक कल्याणार्थ अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। संत निरंकारी मिशन के मीडिया सहायक रमेश भगत ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि यह महाअभियान बेगूसराय के सभी 6 ब्रांचों को मिलाकर आयोजित की गई। रक्तदान शिविर में रक्तदान से पूर्व की जाने वाली जांच एवं स्वच्छता की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया गया। साथ ही रक्तदाताओं हेतु जलपान की समुचित प्रबंध व्यवस्था भी की गई। रक्तदान शि-विरों में रक्त संग्रहित करने के लिए दिनकर ब्लड बैंक सदर अस्पताल बेगूसराय एवं रोटरी क्लब बेगूस-राय के योग्य एवं प्रशिक्षित टीम द्वारा किया गया। भागलपुर से चलकर पूज्य मुखी बहन छाया जी ने संत महात्माओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि निश्चित रूप में लोक कल्याण हेतु चलाया जा रहा यह महाअभियान निरंका-री सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की सेवा प्रदत्त सिखलाइओ को दशार्ते हुए एकत्व एवं मानवता का दिव्य संदेश प्रेषित कर रहा है। जिससे निरंकारी जगत का हर प्राणी प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को कृतार्थ कर रहा है। इस अवसर पर रजाकपुर के मुखी पूज्य प्रमोद पोद्दार जी, बेगूसराय के मुखी पूज्य दशरथ प्रसाद गुप्ता जी, डॉ उमेश जी, राजेंद्र महतो जी एवं संचालक अमित जी की देखरेख में सैकड़ों सेवादल के नौजवान भाई बहनों ने सुंदर प्रारूप तैयार किया। जिसमें निरंकारी प्रदर्शनी भी लगाया गया और मानवता का संदेश दिया गया। जिसमें महात्मा अमित जी संचालक, आशा जी, राजेश जी, रितेश जी, रामदेव जी, देवेंद्र जी, रमेश जी, मुकेश जी, दीपक जी इत्यादि महात्मा ने अपना बहुमल्य योगदान दिया।

गोह में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम आतंकी हमले के खिलाफ कैंडल मार्च, देशभक्ति नारों से गूंजा बाजार

रिपोर्ट – अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद) जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में शुक्रवार संध्या गोह प्रखंड मुख्यालय में एक आक्रोश सह कैंडल मार्च का आयोजन किया गया। यह मार्च एसबीआई बैंक (पशु मेला के समीप) से शुरू होकर पूरे बाजार का भ्रमण करते हुए शहीद जगतपति चौक पर श्रद्धांजलि सभा के साथ संपन्न हुआ। इस दौरान केवीएम क्लासेस के छात्र-छात्राओं सहित बड़ी संख्या में आम नागरिकों ने भारत माता की जय, वंदे मातरम₹ और ₹पाकिस्तान मुदार्बाद₹ जैसे गगनभेदी नारे लगाए। प्रतिभागियों ने एक मिनट का मौन रखकर और कैंडल जलाकर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस आयोजन का उद्देश्य आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता दिखाना और आतंकी हमले में मारे गए वीर जवानों को श्रद्धांजलि देना था। यह आयोजन समाजसेवी व पत्रकार दिलीप कुमार, शिक्षाविद् बुद्धिजीवी मंच गोह के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर शिक्षक रविनंदन, रंधीर पासवान, रामजी पासवान, अमरेश कुमार, संजय कुमार, कुंदन कुमार गिरी,कृष्णा पासवान, बरुण कुमार गिरी,हरिनंदन प्रसाद, देवरंजन दास अंबेडकर, अमरेंद्र कुमार, मनोज दास, उमेश पासवान, पप्पू कुमार, बृज वर्मा, अवधेश पासवान, बृज मोहन राम, सुधीर कुमार, राजबलभ यादव, नागेंद्र प्रसाद समेत बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित रहे। गोह थाना अध्यक्ष मो. इरसाद अपने दल-बल के साथ मौके पर मौजूद रहे और शांति व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग किया।

संक्षिप्त समाचार

धावा दल ने श्री कार्तिक होम अप्लाएंसेज से कराया एक बाल श्रमिक को विमुक्त

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। शुक्रवार को श्रम संसाधन विभाग बेगूसराय के श्रम अधीक्षक ने गठित धावा दल के माध्यम से बखरी बाजार के श्री कार्तिक होम अप्लाएंसेज से एक बाल श्रमिक को विमुक्त कराया है। जिसकी उम्र 13 वर्ष है। नियोजक के विरुद्ध बखरी थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई। बाल श्रमिकों को जिला बाल कल्याण समिति बेगूसराय में प्रस्तुत किया गया। एमसी मेहता बनाम तमिलनाडु वाद के आलोक में नियोजक को बीस हजार रुपये मुआवजे की राशि बाल श्रमिक कल्याण कोष में जमा करने के लिए नोटिस निर्गत किया जाएगा। राशि जमा नहीं करने की स्थिति में सर्टिफिकेट केस दायर किया जाएगा। नियोजक के विरुद्ध न्यूनतम मजदूरी अधिनियम की धारा 1948 के अंतर्गत भी नोटिस निर्गत किया जा रहा है। ज्ञात हो कि 14 वर्ष से कम उम्र के किसी भी बालक को किसी भी नियोजन में कार्य करवाना गैर कानूनी है। इस तरह का धावा दल समय-समय पर कार्य करता रहेगा। धावा दल के सदस्यों में रंजन कुमार श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, बखरी, देवप्रिय श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी बछवाड़ा, दिवाकर कुमार श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी चेरिया बरियारपुर, राजमणि रंजन सपोर्ट पर्सन वैशाली समाज कल्याण संस्थान बेगूसराय एवं राजेन्द्र राम अवर निरीक्षक बखरी थाना शामिल थे।

सीपीआई अंचल कमेटी की बैठक में किसानों की समस्याओं पर हुई चर्चा

शकील बेग

नावकोठी, बेगूसराय। सीपीआई अंचल कमेटी की बैठक हसनपुर बागर में शुक्रवार को आयोजित की गयी। इसकी अध्यक्षता विष्णुदेव सदा ने की। पूर्व मुखिया गणेश महतो ने कहा कि कार्यकर्ता ही पार्टी का मेरूदंड है। इसे मजबूती प्रदान करने के लिए सभी जन संगठनों को चुस्त-दुरूस्त करने की जरूरत है। इसकी मजबूती से ही पार्टी सुदृढ़ होगी। सरकार किसानों के हित की अनदेखी कर रही है। इन्हें खाद, बीज पर मिलने वाले अनुदान को समाप्त कर दिया है।जिससे किसानों को इन वस्तुओं को ऊंची कीमत पर खरीदना पड़ता है। सरकार तथा प्रकृति की दोहरी मार से किसान त्रस्त है। अंचल प्रभारी संजीव सिंह ने कहा कि संपूर्ण इलाके में दो बार आई आंधी पानी ने किसानों का कमर तोड़ कर रख दिया है। खेतों में लगी फसलों को काफी क्षति हुई है। इसके लिए सरकार ने क्षतिपूर्ति के लिए कोई घोषणा नहीं की है। इनके फसलों की क्षतिपूर्ति मुआवजा दिलाने के लिए 28 अप्रैल को जिला मुख्यालय में आहुत प्रदर्शन में अधिकाधिक संख्या में भाग लेने की अपील की। अंचल मंत्री चंद्र भूषण चौधरी ने पार्टी में नई भर्ती करने पर बल दिया। साथ ही अंचल के सभी शाखाओं का सम्मेलन 15 मई तक सम्पन्न कराने का अनुरोध किया। बैठक में सहायक अंचल मंत्री जितेंद्र कुमार, आनंद मोहन प्रसाद सिंह, श्रवण कुमार महतो, सीताराम पासवान, मो नसीम, राजदेव महतो आदि ने भी अपने विचार रखे।

नावकोठी के मिडिल और माध्यमिक विद्यालयों में मशाल खेल प्रतियोगिता का आयोजन

शकील बेग

नावकोठी, बेगूसराय। प्रखंड के विभिन्न मिडिल एवं माध्यमिक विद्यालयों में मशाल खेल प्रतियोगिता का आयोजन शुक्रवार को किया गया। उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय चकमुजफ्फर में आयोजित खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन उप मुखिया पिंटु सिंह, पूर्व मुखिया मुक्तिनारायण सिंह, वार्ड सदस्य अजीत सिंह, कन्हैया कुमार ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। गौरतलब हो कि विद्यालय स्तरीय खेल प्रतियोगिता में दो श्रेणी में मिडिल स्कूल के अंडर 14 एवं माध्यमिक विद्यालय के अंडर 16 आयु वर्ग के बच्चों के बीच खेल प्रतियोगिता होना है। कुल पांच खेल विधाओं में बालक वर्ग और बालिका वर्ग का अलग-अलग टीम तैयार करने का निर्देश है। इस दौरान बालक एवं बालिका समूह को कुल पांच खेल एथेलेटिक्स, साइक्लिंग, कबड्डी, फुटबॉल, वॉलीबॉल तथा दौड, लंबी कूद, ऊंची कूद, बॉल थ्रो आदि खेल का आयोजन होगा। इस अवसर पर विद्यालय स्तरीय कबड्डी एवं दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें बालक समूह तथा बालिका समूह के एक-एक टीम का चयन किया गया। वहीं नावकोठी, अकहा ररिऔना, समसा, पहसारा, डफरपुर, रजाकपुर, सैदपुर विष्णुपुर में साइक्लिंग, दौड़ एवं कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया।इस अवसर पर हेड मास्टर सरोज महतो, प्रभारी प्रधानाध्यापक इंदु कुमारी, संजीत कुमार महतो, अशोक शर्मा, गणेश झा, कन्हैया कुमार, श्वेता कुमारी, आनंद माधव, संजीत कुमार, प्रवीण कुमार, अभय कुमार आदि मौजूद थे।

बेगूसराय ने दिया देश को तीन आईएएस अधिकारी, चहुंओर खुशी की लहर

सिविल सेवा परीक्षा 2024 के फाइनल रिजल्ट में साक्षी कुमारी, दिव्यांशु शाडिल्य और अभिषेक कुमार ने बेगूसराय का बढ़ाया मान

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। यूपीएससी ने सिविल सेवा परीक्षा 2024 का फाइनल रिजल्ट जारी कर दिया। जिसमें बेगूसराय जिले के गढ़पुरा प्रखंड के मालीपुर गांव की रहनेवाले योगेंद्र पाठक की बेटी साक्षी कुमारी ने यूपीएससी सिविल सेवा के फाइनल रिजल्ट में 86वां रैंक हासिल की है। वहीं बछवाड़ा प्रखंड के चमथा पंचायत-01 छोटखुट गांव निवासी अंजनी सिंह के पुत्र अभिषेक कुमार ने 87वां रैक प्राप्त किया। वहीं बरौनी गांव निवासी आईपीएस लक्ष्मण प्रसाद सिंह के छोटा पुत्र दिव्यांशु शाडिल्य ने 1008 रैंक लाकर जिले का नाम पूरे देश में रौशन किया है। यूपीएससी सिविल सेवा की परीक्षा में 86वां रैंक लाकर साक्षी कुमारी ने अपने गांव, जिला, राज्य और देश का नाम रोशन किया है। साक्षी कुमारी एक साधारण परिवार की बेटी है। जिसके पिता योगेंद्र पाठक ने पूजा-पाठ कराकर अपनी पुत्री को देश के सबसे कठिन परीक्षा में सफलता दिलवाने में अहम भूमिका अदा की है। बेटी साक्षी की प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा की पढ़ाई भी गांव के सरकारी स्कूल से हुई है। उन्होंने मध्य विद्यालय मोरतर गांव के सरकारी स्कूल से 8वीं की परीक्षा पास की तथा गांव के पास के ही डॉ लोहिया हाई स्कूल मोरतर स्कूल से वर्ष 2016 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की। 2018 में सोने सत्तन इंटर महाविद्यालय राजोपुर से द्वितीय श्रेणी से इंटर की परीक्षा पास की। उसके बाद विमेंस कॉलेज समस्तीपुर से 2021 में पोस्ट ग्रेजुएट की परीक्षा पास की। समस्तीपुर कॉलेज से पीजी की परीक्षा दी है। जिसका रिजल्ट नहीं निकला है। साक्षी कुमारी ने बताया कि मैने प्रथम प्रयास में 68वीं बीपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सहायक आपदा प्रबंधन अधिकारी बनी थी। उसके बाद शैक्षणिक अवकाश लेकर लगातार

हमने अपनी तैयारी में लगी रही और 69वीं बीपीएससी की परीक्षा में सफलता हासिल की। अभी वह पटना में डिप्टी कलेक्टर का प्रशिक्षण ले रही है। साथ ही उन्होंने भारतीय आर्थिक सेवा में भी सफलता हासिल की थी। साक्षी कुमारी ने यूपीएससी की परीक्षा यह प्रथम प्रयास में ही 68वां रैंक लाकर अपने जिले का नाम रौशन किया है। साक्षी का परिवार एक छोटा-सा पुजारी पंडित है। जिससे परिवार का भरण पोषण होता था। इसी की वजह से वह साक्षी कुमारी कहीं घर से बाहर रहकर तैयारी नहीं कर सकी। बेटी साक्षी ने कठिन मेहनत और पूरी लगन से घर पर रहकर ऑनलाइन के माध्यम से पढ़ाई कर बीपीएससी से लेकर यूपीएससी की परीक्षा में सफलता हासिल की। बछवाड़ा प्रखंड के चमथा पंचायत -01 छोटखुट गांव निवासी अंजनी सिंह के पुत्र अभिषेक कुमार हैं। इन्होंने अपने दूसरे प्रयास में यूपीएससी सिविल सेवा की परीक्षा में 87वां रैंक लाकर अपने दियारा क्षेत्र का नाम जिले में रौशन किया। अंजनी सिंह का पुत्र अभिषेक कुमार ने देश के सबसे कठिन परीक्षा में सफलता हासिल किया है। इनके पिता अंजनी सिंह और मां सोना देवी अपने पुत्र के साथ गुजरात में रहकर कारोबार करने के साथ अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई करवाया। वहीं तीसरा छात्र यूपीएससी की परीक्षा में 1008 रैंक लाने वाले बरौनी गांव निवासी आईपीएस लक्ष्मण प्रसाद सिंह के छोटे पुत्र हैं दिव्यांशु शाडिल्य। इन्होंने कठिन मेहनत और लगन के साथ पढाई कर यूपीएससी की परीक्षा में सफलता हासिल की। दिव्यांशु की मां कॉलेज ऑफ कॉमर्स में प्रो लक्ष्मी सिंह, बहन डॉक्टर रिमझिम और बहनोई भी डॉक्टर उज्जवल हैं। एक बहनोई इनके विजय कुमार इनकम टैक्स में जॉइंट कमिश्नर हैं, तो दूसरे बहनोई इंद्रजीत भी आईपीएस अधिकारी है। इनके अपने चचेरे भाई प्रवीण शेखर हैं, जो अभी बेगूसराय जिला परिषद के सदस्य हैं। सभी लोगों ने मिलकर उनकी सफलता हासिल करने पर बधाई दी है।

बिहार के नए व्यापम घोटाले के रूप में लोगों के सामने आएगा बीपीएससी पेपर लीक मामला : राजेश राम

बीपीएससी पेपर लीक मामले में कांग्रेस सड़क से लेकर सदन तक चलाएगी आंदोलन

दिव्य दिनकर पवन कुमार चौधरी

पटना। बिहार लोक सेवा आयोग अंतर्गत 67 वीं प्रारंभिक परीक्षा में तथाकथित पेपर लीक मामले को लेकर कांग्रेस ने राज्य सरकार को घेरने का प्रयास किया है। सदाकत आश्रम पटना में आयोजित एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राजेश राम ने इशारों ही इशारों में सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि बीपीएससी पेपर लीक मामले में कांग्रेस पार्टी अब सड़क से लेकर सदन तक सरकार से दो-दो हाथ करने की तैयारी में है। कांग्रेस अध्यक्ष ने बीपीएससी पेपर लीक को बिहार का नया व्यापम घोटाला करार देते हुए बीपीएससी अभ्यार्थियों के हक और अधिकार की लड़ाई को धारदार बनाने का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि बीपीएससी 67वीं प्रारंभिक परीक्षा में कथित अनियमितता को छुपाने के लिए सरकार की ओर से लगातार प्रयास किए

जा रहे हैं। लेकिन इस पेपर लीक को लेकर जो सबूत माननीय न्यायालय के सामने प्रस्तुत किए गए हैं, उससे साफ स्पष्ट है कि यह कोई साधारण घोटाला नहीं बल्कि बिहार के इतिहास में यह सबसे बड़े घोटाले के रूप में खुलकर लोगों के बीच खुलकर सामने आएगा। यह बिहार का नया व्यापम घोटाला है जिस पर बिहार की भाजपा समर्थित एनडीए सरकार पर्दा डालने की जुगत में है। बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस अध्यक्ष शिव प्रकाश गरीब दास ने राज्य सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि मेरा नाम गरीब दास है लेकिन मैं छात्रों के अधिकार की लड़ाई के मामले में अमीर हूं। छात्रों को न्याय और उनका अधिकार दिलाने के लिए सड़कों पर डंडे खाकर भी सत्य और न्याय की मशाल जलाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हूं। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राजेश राम ने बीपीएससी पेपर लीक मामले में एनडीए सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि इस मामले से भारतीय जनता पार्टी का सीधा-सीधा कनेक्शन है। जिस प्रकार से मध्य प्रदेश में तत्कालीन भाजपा सरकार ने व्यापम घोटाले को अंजाम दिया था, उसी प्रकार से बिहार में बीपीएससी पेपर लीक करने में भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का हाथ है। इस घोटाले का सबसे बड़ा सबूत है कि बड़े-बड़े योग्य व्यक्ति बिहार में होने के बावजूद बिहार लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी बिहार से बाहर के राज्य के व्यक्ति को सौंपा गया। इस पूरे प्रकरण में भारतीय जनता पार्टी और गुजरात कनेक्शन पूरी तरह से संलिप्त है। छात्रों को न्याय दिलाने के लिए कांग्रेस पार्टी सड़क से लेकर सदन तक आंदोलन चलाएगी। इस मामले में माननीय न्यायालय भी जल्द घोटालेबाजों का पदार्फाश करेगी।

पोषण को बढ़ाना और कुपोषण को दूर करना ही पोषण पखवाड़ाः डॉ. सहर अफरोज

पोषण पखवाड़ा पर स्वयंसेवकों के बीच प्रशिक्षण का सर्टिफिकेट वितरण

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। राष्ट्रीय सेवा योजना व सेहत केंद्र के स्वयंसेवकों के बीच पोषण पखवाड़ा मनाया गया। जिसका उद्देश्य सुपोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और कुपोषण को दूर करना था। इसको लेकर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन जीडी कॉलेज के सेहत केंद्र में पोषण विशेषज्ञ डॉ. बुसरा के द्वारा स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में शामिल स्वयंसेवकों के बीच प्रमाण पत्र का वितरण किया गया। डॉ. बुसरा ने इस कार्यक्रम में गर्भवती और धात्री माताओं को एनीमिया की रोकथाम के लिए आयरन युक्त भोजन और विटामिन सी एवं फोलिक एसिड के सेवन करने की सलाह दी। वर्ष 2025 को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मोटे अनाज वर्ष के रूप में घोषित किया गया है। जिसका उद्देश्य कुपोषण को दूर करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करना है। लोगों को पोषण के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिनमें साफ-सफाई, स्वस्थ, जीवन शैली और पोषण संबंधी जानकारी दी जा शामिल है।राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के पदाधिकारी सह सेहत केंद्र की नोडल अधिकारी डॉ. सहर अफरोज ने कहा कि पोषण के महत्व को बढ़ावा देने और कुपोषण को दूर करने के लिए लगातार काम कर रहे हैं।एनीमिया एक स्वास्थ्य समस्या है, जिसमें शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या या हीमोग्लोबिन की मात्रा कम हो जाती है। हीमोग्लोबिन एक प्रोटीन है, जो लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाता है और ऑक्सीजन को शरीर के विभिन्न भागों तक पहुंचाने में मदद करता है। एनीमिया को दूर करने के लिए आयरन युक्त भोजन का सेवन, विटामिन बी12 और फोलेट युक्त भोजन का सेवन नियमित रूप से करना चाहिए। पियर एडुकेटर सुमित कुमार व नीतीश कुमार ने कहा कि प्रशिक्षण उपरांत स्वयंसेवकों के उत्साहवर्धन के लिए प्रशस्ति पत्र दिया गया। उन्होंने बताया कि कुपोषण की रोकथाम के लिए संतुलित आहार का सेवन करना आवश्यक है। कुपोषण एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है। जिसमें शरीर को आवश्यक पोषक तत्व नहीं मिलते हैं। यह समस्या तब होती है, जब आहार में पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व नहीं होते हैं या जब शरीर पोषक तत्वों को सही तरीके से अवशोषित नहीं कर पाता है। कुपोषण के इलाज के लिए संतुलित आहार का सेवन करना आवश्यक है। प्रशस्ति पत्र वितरण के दौरान अजित कुमार, सूरज कुमार, नीतीश कुमार, सुमित कुमार, विक्रम राठौर, राहुल कुमार, गुलशन कुमार, श्रीराम कुमार, उज्जवल कुमार, गुलशन, मुस्कान, सुमित, अंकिता कुमारी, शफक इरशाद, सादिया प्रवीण, शिवानी, सोनी कुमारी सहित अन्य स्वयंसेवक मौजूद थे।

विश्व मलेरिया दिवस पर एएनएम प्रशिक्षुओं ने निकाली जागरूकता रैली

एएनएम प्रशिक्षुओं के बीच पेंटिंग प्रतियोगिता का भी किया गया आयोजन

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर

विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर एएनएम स्कूल, तारापुर की प्रथम एवं द्वितीय सत्र की प्रशिक्षु एएनएम ने मलेरिया से बचाव को लेकर एक जागरूकता रैली निकाली। इस रैली का नेतृत्व स्कूल की प्रभारी प्राचार्या श्रीमती नाएमा खान ने किया। रैली की शुरूआत अनुमंडलीय अस्पताल, तारापुर परिसर से की गई, जिसे अस्पताल की प्रभारी उपाधीक्षक डॉ. बिंदु कुमारी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।वहीं डॉ. बिंदु कुमारी ने मलेरिया की गंभीरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह एक जानलेवा बीमारी है, लेकिन थोड़ी सी सावधानी और जागरूकता से इससे बचा जा

सकता है। उन्होंने साफ-सफाई, मच्छरदानी के उपयोग तथा समय पर जांच एवं इलाज पर बल दिया।प्रशिक्षु एएनएम ने हाथों में मलेरिया से बचाव संबंधी स्लोगन लिखे पोस्टर एवं बैनर लेकर नारेबाजी करते हुए फजेलीगंज के विभिन्न गली-मोहल्लों में रैली निकाली। रैली का उद्देश्य लोगों को मलेरिया के लक्षण, कारण एवं बचाव के उपायों की जानकारी देना था।अस्पताल परिसर में प्रशिक्षुओं द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक को भी खूब सराहना मिली। अस्पताल प्रबंधक मनीष कुमार प्रणय, प्रशिक्षिका लीली हेंब्रोम, दीप्ति भारती समेत अन्य स्वास्थ्यकर्मियों ने नुक्कड़ नाटक की प्रशंसा की।कार्यक्रम के अंत में एक संक्षिप्त सभा आयोजित की गई, जिसमें मलेरिया उन्मूलन हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर बीसीएम पूनम कुमारी, अस्पताल के चिकित्सक एवं स्वास्थ्यकर्मी भी उपस्थित थे। हरी झंडी दिखाकर रवाना करते प्रभारी उपाधीक्षक

आतंकी हमले के विरोध में निकाला आक्रोश कैंडल मार्च

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर

पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में तारापुर में भाजपा युवा मोर्चा ने निकाला आक्रोश कैंडल मार्च, पाकिस्तान से सभी संबंध तोड़ने की मांग।जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में निर्दोष लोगों की हत्या के खिलाफ तारापुर में भाजपा युवा मोर्चा और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने मिलकर आक्रोश जताया। इस अवसर पर एक कैंडल मार्च का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया।तारापुर पुरानी बस स्टैंड से शहीद स्मारक तक निकाले गए इस मार्च के दौरान लोगों ने आतंकवाद और पाकिस्तान के खिलाफ जोरदार नारेबाजी की। मार्च में गौतम राज, रोशन वत्स, राहुल सिंह, शशि वत्स, विराट वत्स, सुमित चौधरी, मोहित, मानव, सौरव, पुनीत, अंकित, सूरज, शुभम, निलेश, सुमित, गोलू सहित अनेक युवा शामिल हुए।युवाओं ने मोमबत्तियां जलाकर हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। साथ ही, प्रदर्शनकारियों ने पाकिस्तान को आतंकी घटनाओं का जिम्मेदार ठहराते हुए केंद्र सरकार से पाकिस्तान के साथ सभी राजनयिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध समाप्त करने की मांग की। युवा मोर्चा के नेताओं ने कहा कि देश अब आतंकवाद और उसके समर्थनकताओं को बर्दाश्त नहीं करेगा और आवश्यकता पड़ने पर बड़ा कदम उठाने से भी पीछे नहीं हटेगा। कैंडल मार्च में शामिल युवा

वीर कुंवर सिंह जयंती पर शिशु भारती के तहत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा मंत्रिमंडल को दिलाई गई शपथ

दिव्य दिनकर बिहार उप-प्रभारी पवन कुमार चौधरी

जमालपुर। ज्योति युगल सरस्वती शिशु मंदिर फुलका में गुरूवार को वीर कुंवर सिंह जयंती समारोह आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य दिनेश कुमार तथा संचालन कविता कुमारी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व छात्र प्रणव कुमार, विशिष्ट अतिथि विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष सुनील कुमार, उपाध्यक्ष महेश यादव एवं नंद फाउंडेशन के सचिव परम नवीन कुमार मौजूद थे। आगंतुक अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान अतिथियों के द्वारा 1857 क्रांति के अग्रदूत वीर कुंवर सिंह के तैलीय चित्र पर माल्यार्पण तथा पुष्पांजलि अर्पित की गई। विद्यालय के भैया बहनों की मौजूदगी में अतिथियों ने भारतीय स्वतंत्रता के महानायक के वीर कुंवर सिंह के जीवन संघर्ष व योगदानों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत सहित दुनिया के विभिन्न लोकतांत्रिक व्यवस्था का उदाहरण देते हुए लोकतंत्र तथा इसकी महत्ता पर

व्याख्यान प्रस्तुत किया। विद्या भारती के निर्देश पर सरस्वती शिशु मंदिर में विद्यालय स्तरीय लोकतांत्रिक व्यवस्था लागू करने के उद्देश्य से विगत दिनों संपन्न हुए चुनाव के परिणाम की घोषणा की गई। शिशु भारती अंतर्गत अध्यक्ष पद तथा उपाध्यक्ष पद के लिए संपन्न हुए चुनाव में तीन-तीन प्रत्याशियों ने हिस्सा लिया था। शिशु भारती के चुनाव में कक्षा प्रथम से कक्षा पंचम तक के कुल 41 मतदाता भैया-बहनों ने मतदान किया। अध्यक्ष के चुनाव में रुद्रांश कुमार ने 31 मत प्राप्त कर जीत हासिल किया। जबकि रौनक कुमार को 9 मत और आर्यन राज को 1 मत प्राप्त हुआ। वहीं उपाध्यक्ष के चुनाव में प्रेम कुमार ने 26 मत प्राप्त कर जीत हासिल किया। जबकि प्रशांत कुमार 11 और कृष कुमार ने 4 मत प्राप्त किया। अध्यक्ष के रूप में चयनित रुद्रांश कुमार को तथा उपाध्यक्ष के रूप में चयनित प्रेम कुमार को सभी भैया बहनों के अलावा अतिथियों ने बधाई दी। इस दौरान मंत्रिमंडल का गठन करते हुए बाल पत्रकार तथा सेनापति की जिम्मेदारी के अलावा वंदना विभाग, स्वच्छता विभाग, खोया पाया विभाग, साज सज्जा विभाग, जल विभाग, चिकित्सा विभाग, जयंती विभाग, अनुशासन विभाग, आपूर्ति विभाग, अतिथि सत्कार विभाग, शारीरिक एवं खेलकूद विभाग, भोजन विभाग, कला एवं संगीत विभाग के विभाग प्रमुख का गठन किया गया। मुख्य अतिथि प्रणव कुमार ने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, बाल पत्रकार, सेनापति तथा सभी विभागों के विभाग प्रमुख को पद एवं गोपनीयता की शपथ खिलाते हुए उन्हें विद्यालय से संबंधित शैक्षिक तथा गैर शैक्षणिक गतिविधियों में उन्हें दिए जाने वाले दायित्व से अवगत कराया। मौके पर शिक्षिका मनीषा रानी, अनिता कुमारी, मोनिका कुमारी, कविता कुमारी, शिक्षक पुष्पेंद्र भारती मनोज कुमार मंडल, छात्र प्रतिनिधि अंजलि, नंदिनी, तन्वी, प्रिया, सेजल, माही, तान्या, इशिका, प्रेम, नवयुग, आयुष, गुलशन, आदर्श, दिव्यांशु, प्रिया, रुद्रांश, आर्यन, प्रशांत, विहान, कृष, रौनक मौजूद थे।

संघ में इजाजत : न्यौता या जाल!

विचार

> वर्ष 2018 में जब भागवत से गोलवलकर के उनकी किताब बंच ऑफ थॉट्स में मुसलमानों को शत्रु कहे जाने के बारे में पूछा गया था, तो उन्होंने कहा था कि बातें जो बोली जाती हैं, वह स्थिति विशेष, प्रसंग विशेष के संबंध में बोली जाती हैं, वह शाश्वत नहीं रहती हैं। अब गोलवलकर के विचारों के संकलन के नए संस्करण में आंतरिक शत्रु वाला प्रसंग हटा दिया गया है। कहने की जरूरत नहीं कि सिर्फ किताब में से ही हटाया गया है।

बादल सरोज

इन दिनों अब मुसलमानों पर हेज उमड़ रहा है। आजादी के बाद का सबसे बड़ा क़ानून बनाकर संपत्ति हड़पो घोटाला वक्फ कब्जा कांड करने के साथ ही देश के इस सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बनाकर बयान दागे जा रहे हैं। यह बात अलग है कि वे शब्दों में कुछ भी हों, भावों में और पंक्तियों के बीच के अर्थ में एक समान हैं। इसी तरह का एक बयान खुद संघ प्रमुख का है, जिसमे उन्होंने कहा है कि मुसलमान भी संघ में शामिल हो सकते हैं। इसी के साथ यह दावा भी किया है कि संघ किसी की पूजा पद्धति या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करता। वे यहीं तक नहीं रुके, इससे आगे बढ़ते हुए यह भी बोले कि संघ केवल हिंदुओं के लिए नहीं है। संघ का दरवाजा हर जाति, संप्रदाय और धर्म के लिए खुला है। चाहे वह हिंदू हो, मुसलमान हो, सिख हो या ईसाई-हर कोई इसमें शामिल हो सकता है। संघ मतलब आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत वाराणसी में यह एकदम नयी पेशकश तब कर रहे थे, जब होली और जुमे को लेकर उन्हीं कुनबे द्वारा घमासान मचाया जा चुका था। यह बात वे उस उत्तरप्रदेश में कह रहे थे, जिसमें ईद की नमाज को कहां, कैसे, कब पढ़ना है, की सख्त हिदायते जारी की जा रही थी, खुले मैदानों की बात अलग रही, घर की छतों तक पर नमाज अदा करना प्रतिबंधित किया जा रहा था। यह बात वे तब कह रहे थे, जब उन्हीं के मंत्री, संत्री, मुख्यमंत्री, यहां तक कि खुद प्रधानमंत्री मुसलमानों के खिलाफ उन्माद भडकाने में पूरे प्राणप्रण से जुटे हुए थे। हालांकि इस एलान के साथ उन्होंने 'शर्तें लागू' का किन्तुक-परंतुक भी जोड़ा है। इन शर्तों में भारत माता की जय का नारा स्वीकार करना और भगवा झंडे का सम्मान करना तो है ही, एक अतिरिक्त चेतावनी भी नत्थी कर दी है कि जो खुद को औरंगजेब का वारिस समझते हैं, उनके लिए संघ में कोई जगह नहीं है। और जैसा कि इस तरह के बयान देने के पीछे का मकसद होता है, इस बार भी था, वही हुआ; कईयों ने यह मानना शुरू कर दिया कि बताइये बेचारे को यूंही बदनाम करते रहते हैं, देखिये संघ तो मुसलमानों के लिए भी बाहें खोले खड़ा है। भले ही हिंदुत्व की विचारधारा से जुड़ा हो, लेकिन वह ऐसे मुस्लिमों को भी स्वीकार करने को तैयार है, जो भारत की संस्कृति को अपनाते हैं और राष्ट्रवाद में विश्वास रखते हैं। क्या सच में बात इतनी ही सीधी-सादी और सरल है? नहीं! यह औरंगजेब के नाम पर योजनाबद्ध तरीके से सुलगाई गयी ध्रुवीकरण की भट्टी में खुद श्रीमुख से सूखी लकडियाँ झोंके जाने की कोशिश है। क्या भारत में ऐसा कोई मुसलमान है, जिसने अपने आपको औरंगजेब का वारिस बताया हो? कोई नहीं। अविभाजित भारत को भी जोड़ लें, तो ऐसा कोई है, जिसने औरंगजेब को अपना पुरखा या किसी भी तरह का नायक बताया हो? हाँ, वंशावली के आधार पर देखा जाए, तो औरंगजेब की एक सचमुच की वारिस और निकटतम जैविक रिश्तेदार जरूर हैं और वे राजस्थान में भाजपा सरकार में उपमुख्यमंत्री पद की शोभा अवश्य बढ़ा रही हैं। बहरहाल बयानों की शिगूफेबाजी को अलग रखते हुए असल मुद्दे पर आते हैं कि जैसा कि भागवत साहब ने फरमाया है, क्या वैसा संघ में हो सकता है? क्या कोई मुसलमान या अहिंदू आरएसएस का सदस्य बन सकता है? बिल्कुल नहीं! पहली बात तो यह है कि खुद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कहना है कि उसकी कोई औपचारिक सदस्यता नहीं होती। जो लोग आरएसएस की शाखाओं में भाग लेते हैं, उन्हें स्वयंसेवक कहा जाता है। अब स्वयंसेवक कौन बन सकता है? संघ के मुताबिक़ कोई भी हिंदू पुरुष स्वयंसेवक बन सकता है। यहां हिन्दू पुरुष पर गौर फरमाने की आवश्यकता है, क्योंकि यह वह संगठन है, जो दावा तो अखिल ब्रह्माण्ड के हिन्दुओं को एकजुट और संगठित करने का करता है, लेकिन जिसकी सदस्य महिलायें झ हिन्दू महिलायें भी - नहीं बन सकतीं। इसकी वेब साईट के एफएक्यू यानि 'फ्रीक्वेंटली आस्क्ड क्वेश्चंस' मतलब 'अक्सर पूछे जाने वाले सवालों' के अध्याय में लिखा गया है कि "उसकी स्थापना हिंदू समाज को संगठित करने के लिए की गई थी और व्यावहारिक सीमाओं को देखते हुए संघ में महिलाओं को सदस्यता नहीं दी जाती है, सिर्फ हिन्दू पुरुष ही इसमें शामिल हो सकते हैं, इसके स्वयंसेवक बन सकते है। सौवें साल में भी संघ महिलाओं के प्रवेश के बारे में कोई पुनर्विचार करने को तैयार नहीं है। बस इतना भर कहा गया है कि अपने शताब्दी वर्ष में महिला समन्वय कार्यक्रमों के ज़रिए वो भारतीय चिंतन और सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाना चाहता है। बहरहाल फिलहाल चूँकि भागवत साहब ने अपने संघ में हिन्दू महिलाओं की नहीं, 'म्लेच्छ' मुसलमानों के दाखिले की बात की है, इसलिए उसी पर संघ की धारणा और नीति पर नजर डालना ठीक होगा। मुसलमानों के बारे में संघ की सोच की झलक इसके दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर की किताब बंच ऑफ़ थॉट्स" में मिलती है। गोलवलकर ने लिखा था, "हर कोई जानता है कि यहां- भारत में - केवल मुट्ठी भर मुसलमान ही दुश्मन और आक्रमणकारी के रूप में आए थे। इसी तरह यहां केवल कुछ विदेशी ईसाई मिशनरी ही आए। अब मुसलमानों और ईसाइयों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। इसी रौ में वे आगे लिखते हैं कि वे मछलियों की तरह सिर्फ गुणन से नहीं बढे, उन्होंने स्थानीय आबादी का धर्मांतरण किया। हम अपने पूर्वजों का पता एक ही स्रोत से लगा सकते हैं, जहां से एक हिस्सा हिंदू धर्म से अलग होकर मुसलमान बन गया और दूसरा ईसाई बन गया। बाक़ी लोगों का धर्मांतरण नहीं हो सका और वे हिंदू ही बने रहे। यही वह किताब है, जिसमें गोलवलकर झ जिन्हें संघ अपना परम पूज्य गुरु मानता है ने मुसलमानों, ईसाइयों और कम्युनिस्टों को राष्ट्र का आंतरिक शत्रु बताया था। सनद रहे कि वर्ष 2018 में जब भागवत से गोलवलकर के उनकी किताब बंच ऑफ़ थॉट्स में मुसलमानों को शत्रु कहे जाने के बारे में पूछा गया था, तो उन्होंने कहा था कि बातें जो बोली जाती हैं, वह स्थिति विशेष, प्रसंग विशेष के संबंध में बोली जाती हैं, वह शाश्वत नहीं रहती हैं। अब गोलवलकर के विचारों के संकलन के नए संस्करण में आंतरिक शत्रु वाला प्रसंग हटा दिया गया है। कहने की जरूरत नही कि सिर्फ किताब में से ही हटाया गया है, एजेंडे में वह पहले से भी कही अधिक प्राथमिकता पर ले आया गया है। क्या इस सबसे भागवत जी ने किनारा कर लिया है? अब उनकी बाँहें और उनके संघ के दरवाजे मुसलमानों और बाकी अहिंदुओं के लिए खुल गए है? क्योंकि अगर ऐसा है, तो फिर इसे अपने संस्थापक के कहे से भी पल्ला झाड़ना होगा। अपने संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की स्वयं आरएसएस द्वारा प्रकाशित आधिकारिक जीवनी में से एक में यह साफ किया गया है कि हेडगेवार स्वतंत्रता संघर्ष से क्यों अलग हुए। जीवनी बताती है कि यह साफ़ है कि गांधीजी हिंदू-मुस्लिम एकता को हमेशा केंद्र में रखकर ही काम करते थे ... लेकिन डाक्टरजी को इस बात में खतरा दिखायी दिया। दरअसल वे हिंदू-मुस्लिम एकता के नए नारे को पसंद तक नहीं करते थे। 1937 में महाराष्ट्र के अकोला में सीपी एंड बरार (अब महाराष्ट्र) की हिन्दू महासभा के सावरकर की अध्यक्षता में हुए प्रांतीय अधिवेशन से लौटने पर, कांग्रेस छोड़ने की वजह पूछे जाने पर हेडगेवार का जवाब था क्योंकि कांग्रेस हिंदू-मुस्लिम एकता में विश्वास करती है। उनका मुस्लिम विरोध किस ऊंचाई का था, यह संघ के शुरुआती दिनों में उनके स्वयं के व्यवहार से समझ आ जाता है। उनकी एक जीवनी में बताया गया है कि मस्जिदों के आगे बैंड बाजा बजाने, शोर मचाने की कार्यविधि उन्हीं की खोज थी, जिसे संघ आज तक आजमा रहा है। जब कभी-कभी बैंड (संगीत) बजाने वाली टोली मस्जिद के सामने बैंड बजाने में हिचकिचाती थी, तो हेडगेवार "खुद ड्रम ले लेते और शांतिप्रिय हिंदुओं को उत्तेजित कर उनकी मर्दानगी को ललकारते थे।" गौरतलब है कि 1926 तक, मस्जिदों के बाहर ढोल-बाजे बजाना सांप्रदायिक दंगों के उकसाने की मुख्य वज़ह था। हेडगेवार ने हिंदुओं में आक्रमक सांप्रदायिकता उकसाने में निजी तौर पर भूमिका अदा की। इस तथ्य को उनके घनिष्ठ और आरएसएस के संस्थापक सदस्यों मे से एक रहे नागपुर की इस्पात मिल के मालिक अन्नाजी वैद का कथन पुष्ट करता है। उन्होंने बताया है : सन् 1926 में कई जगह हिंदू-मुसलमान दंगे होना प्रारंभ हुआ था। इसलिए हम लोगों ने तय किया कि हर एक मस्जिद के सामने से जुलूस निकलते समय ढोल बजने ही चाहिए। एक बार शुक्रवार के दिन जब वाद्य बजाने वाले एक मस्जिद के दरवाजे पर पहुंचे, तो संगीत बजाना बंद कर दिया। तब डाक्टरजी ने स्वयं ढोल खींच कर अपने गले में बांध कर बजाया। उसके बाद ही बाजा बजना प्रारंभ हुआ। क्या भागवत साहब ने हेडगेवार के इन सब किये-धरों को अनकिया करने का मन बना लिया है और सचमुच में आरएसएस को मुसलमानों और बाकी धर्मों के मानने वालों के लिए खोलने का फैसला कर लिया है? यदि हाँ, तो फिर वे अपने उस संविधान का क्या करेंगे, जिसमे कुछ और ही दर्ज किया हुआ है। गांधी हत्याकांड में प्रतिबंधित होने के बाद भारतीय संविधान के प्रति निष्ठा रखते हुए और गोपनीयता से दूर रहते हुए और हिंसा से दूर रहते हुए राष्ट्रीय ध्वज को मान्यता देते हुए एक लोकतांत्रिक, सांस्कृतिक संगठन के रूप में कार्य करने की अनुमति हासिल करने के लिए बनाये गये संघ के संविधान में क्या इसकी गुंजाइश है संघ के इस संविधान की शुरुआत ही हिन्दू समाज में अलग-अलग पंथों, आस्थाओं, जाति और नस्लों, राजनीतिक, आर्थिक, भाषायी, प्रांतीय फ़र्कों को समाप्त कर हिन्दू समाज का सर्वोन्मुखी उत्थान" करने के वाक्य से होती है। संघ के साथ जुड़ने का एकमात्र तरीका उसका स्वयंसेवक बनना है और संविधान में स्वयंसेवक बनने के लिए ली जाने वाली शपथ में दर्ज है कि "सर्वशक्तिमान श्री परमेश्वर तथा अपने पूर्वजों का स्मरण कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने पवित्र हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दू समाज की अभिवृद्धि कर भारत वर्ष की सर्वांगीण उन्नति करने क लिए मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का घटक बना हूँ ...।" इस संविधान का पहला लक्ष्य ही "हिन्दू समाज के विविध समूहों को साथ लाना, उन्हें धर्म और सस्कृति के आधार पर पुनर्जीवित और पुनः युवतर करने" का है। क्या मुसलमानों, सिखों और बाकियों को शामिल करने के लिए भागवत अपने संघ का संविधान बदलेंगे? वे कुछ नहीं बदलने वाले। अपने इस तरह के दिखावटी बयानों से भी वे अपने एजेंडे को ही आगे बढ़ाने का जाल बिछा रहे होते हैं। ऐसे भ्रामक, निराधार और कभी भी अमल में न लाये जा सकने वाले बयानों के जरिये जहां जनता के एक हिस्से में वे अपने सुधरे, सुथरे और भले रूप की मरीचिका का आभास देना चाहते हैं, वहीं दूसरी ओर, मुस्लिम समुदाय के बारे ऐसा अहसास दिलाना चाहते हैं, जैसे वे इतनी बड़ी पेशकश को भी ठुकरा कर अपनी संकीर्णता का परिचय दे रहे हों।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक)

संपादकीय

बिलों पर कुंडली मार कर बैठना

गृह मंत्रालय में उपसचिव अथवा वरिष्ठ स्तर के अधिकारी तय किए जाते हैं, जो राष्ट्रपति के आधार पर निर्णय लेते हैं और फिर राष्ट्रपति उस फाइल पर हस्ताक्षर करते हैं। बेशक सर्वोच्च अदालत गृह मंत्रालय के अधिकारियों को निर्देश दे सकती है। दलीलें यहां तक दी गईं कि राष्ट्रपति देश के प्रधान न्यायाधीश और सर्वोच्च अदालत के अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति करते हैं। एक नौकर नियोक्ता को निर्देश कैसे दे सकता है? दरअसल ऐसे निर्णय भी सरकार और कैबिनेट के स्तर पर लिए जाते हैं और फिर संबद्ध मंत्रालय द्वारा भेजी गई फाइल पर राष्ट्रपति हस्ताक्षर करते हैं। राष्ट्रपति एक मायने में, लिखित रूप से, नियोक्ता हैं और सरकार की कार्यप्रणाली के मुताबिक, नियोक्ता नहीं भी हैं। हमें नहीं लगता कि न्यायपालिका ने संवैधानिक लक्ष्मण-रेखाओं को पार किया है। बल्कि ऐसी हरकत भाजपा सांसदों ने की है। झारखंड से भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कहा-'इस देश में जितने गृहयुद्ध हो रहे हैं, उनके जिम्मेदार केवल यहां के चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया जस्टिस संजीव खन्ना साहब हैं।' भाजपा सांसद ने यहां तक आरोप लगाया कि अदालत इस देश को अराजकता की ओर ले जाना चाहती है। अदालत राष्ट्रपति को निर्देश कैसे दे सकती है? आपने नया कानून कैसे बना दिया? किस कानून में लिखा है कि राष्ट्रपति को तीन माह में ही फैसला लेना है? बहरहाल भाजपा नेतृत्व ने यह अच्छा किया कि सांसदों की ऐसी टिप्पणियों से किनारा कर लिया और ऐसे बयानों को खारिज कर दिया। अलबत्ता यहां से राजनीति नया तूल ले सकती थी। सर्वोच्च अदालत ने भी कोई संज्ञान नहीं लिया और ऐसे बयानों को नजरअंदाज कर दिया। आजकल अधिकतर राज्यपाल 'राजनीतिक' होते हैं, लिहाजा बिलों को दबाते रहते हैं। पारित बिलों पर कुंडली मार कर बैठना उचित और संवैधानिक नहीं है

वैश्विक धरोहर बनती प्राचीन भारतीय पांडुलिपियां

प्रमोद भार्गव

महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश पर आधारित श्रीमद्भगवद्गीता और भारत की ललित कलाओं का मूल ग्रन्थ मने जाने वाले भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र को यूनेस्को ने अपने स्मृतिकोश विश्व पंजीयन अभिलेख में शामिल किया है। यह कदम विश्व धरोहर दिवस 21 अप्रैल को उठाया गया है। यह पहल हमारे सनातन शाश्वत ज्ञान और समृद्ध विज्ञान सम्मत संस्कृति को वैश्विक मान्यता देती है। इन दोनों ग्रंथों में मानवता का संदेश देने के साथ जीवन को बेहतर बनाने के मार्ग दिखाए गए हैं। गीता दुनिया का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसके सांस्कृतिक ज्ञान में विश्व कल्याण और सम्पूर्ण जीव-जगत की रक्षा की कामना की गई है। अतएव इन प्राचीन पांडुलिपियों को न केवल सहेजने की जरूरत है, बल्कि इनमें उल्लेखित ज्ञान विज्ञान को खंगालने की भी जरूरत है। भारत में प्राचीन पांडुलिपियां कितनी हैं, इनका सुसंगत अनुमान कठिन है। अनेक पांडुलिपि संग्रह व संरक्षण संस्थान ज्ञान-विज्ञान की पांडुलिपियों में भरे पड़े हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के निदेशक डॉ सुरेंद्रमोहन मिश्र कहते हैं कि लगभग डेढ़ करोड़ पांडुलिपियां उपलब्ध हैं। राज्यसभा सांसद राकेश सिन्हा द्वारा संसद में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में कहा गया था कि ब्रिटेन के संग्रहालय में मुख्य रूप से चार लाख पांडुलिपियां आज भी सुरक्षित हैं। यद्धपि वहां से अब तक 50 हजार पांडुलिपियां मंगाई जा चुकी हैं। इन पांडुलिपियों में खगोल गणित, ज्योतिश, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, रसायन, धातु विज्ञान, खेती-किसानी, अस्त्र-शस्त्र और आवागमन के साधनों से लेकर ईंधन की खोज और मानव मनोविज्ञान तक के धरातल की पड़ताल की गई है। पांडुलिपियों में सामाजिक जीवन के विविध पहलू संरक्षित हैं। प्राचीन भारतीय पांडुलिपियां कितनी महत्वपूर्ण हैं, इस सिलसिले में एक प्रसंग यहां उद्घाटित है। संस्कृत के भोपाल के बड़े विद्वान और संस्कृत विष्वविद्यालय दिल्ली के कुलपति रहे डॉ राधावल्लभ त्रिपाठी को लंदन की इंडिया हाउस लायब्रेरी में उपलब्ध सुंदरकवि द्वारा रचित 'नाट्य-प्रदीप' पांडुलिपि की आवष्यकता थी। उक्त पुस्तकालय में उपलब्ध सूची की पुस्तकों में इस पांडुलिपि का नाम अंकित है। त्रिपाठी जी के मित्र पाठक जी लंदन जाते-आते रहते थे। अतएव उन्होंने पांडुलिपि के लाने का दायित्व पाठक जी को सौंप दिया। पाठक जी ने लंदन से लौट आने पर त्रिपाठी जी को नाट्य प्रदीप ग्रंथ की पांडुलिपि एक गोल डिब्बी में दी। त्रिपाठी जी अचंभित हुए तब पाठक जी ने बताया कि इस डिब्बी में एक माइक्रो चिप है। इसे माइक्रो फिल्म रीडर के माध्यम से कंप्युटर पर खोलकर प्रिंट आउट निकल आएंगे। भोपाल में तो यह काम संभव नहीं हुआ, तब उन्होंने दिल्ली के राष्ट्रीय कला केंद्र में जाकर प्रिंट निकलवाए। चार-पांच सौ पृष्ठ की नागरी लिपि में हस्तलिखित पांडुलिपि उनके हाथों में थी। उन्हें संदेह हुआ कि नाट्य-प्रदीप तो इतने पृष्ठों की नहीं है, फिर यह क्या? परंतु भोपाल आने पर जब उन्होंने पांडुलिपि पढ़ना आरंभ की तो उनका संदेह सच निकला। वह नाट्य-प्रदीप की पांडुलिपि नहीं थी। हालांकि पांडुलिपि के प्रथम पृष्ठ पर शीर्षक व अन्य जानकारियां सूची के अनुरूप ही थीं। दरअसल वह महाकवि दंडी के 'दशकुमारचरित' के तीसरे खंड की अधूरी प्रति थी। त्रिपाठी जी ने इसे ऊंचे पेड़ पर लगा एक फल माना और अध्ययन-मनन में लग गए। अंत में त्रिपाठी जी ने पूरी पांडुलिपि पढ़ने के बाद निष्कर्ष निकाला कि यह पांडुलिपि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की कथा है। कालांतर में उन्होने इस विक्रमादित्य कथा का गद्यानुवाद करते हुए उपन्यास का रूप दिया। इस उपन्यास को भारतीय ज्ञानपीठ ने छापा है। उपन्यास में खगोलीय घटनाओं और विक्रम संवत के प्रारंभ होने के विज्ञान सम्मत, आख्यान तो हैं ही, विक्रमादित्य के इतिहास नायक होने के तथ्य भी हैं। सच्चाई यह है कि इस औपन्यासिक कथा में ईसा के पहले की शताब्दी के भारत की एक व्यापक प्रस्तुति है। इस पांडुलिपि का प्राप्ती रोचक गाथा उपन्यास की भूमिका में दी है। पांडुलिपि के उपन्यास के रूप में प्रकाशन से यह स्पश्ट होता है कि पुरातन ग्रंथों में इतिहास, भूगोल, युद्ध, विज्ञान, समयमान के चित्रण तो हैं ही, भारतीय इतिहास-नायकों की गाथाएं भी हैं। यही संयुक्त वर्णन कहानियों-किस्सों के रूप में किसी राष्ट्र के विकसित श्रेष्ठतम रूप को सामने लाते हैं। पांडुलिपियों के रूप में सुरक्षित ग्रंथों के शोध और संग्रह निरंतर होते रहे हैं। 1803 में इन ग्रंथों का सूची-पत्र तैयार करने की पहली शुरुआत एशियाटिक सोसायटी ने की थी। इस सोसायटी के चौथे अध्यक्ष एचटी कोलब्रुक ने सूची-पत्र तैयार करने के लिए प्रति वर्ष 5-6 रुपए का अतिरिक्त अनुदान का प्रबंध भी कराया। इसी क्रम में गवर्नर एलफिंस्टन ने जब संस्कृत ग्रंथों का अनुसंधान कराया, तब ज्ञात हुआ कि 1840 में जितने ग्रंथ भारत में पाए गए, उनकी संख्या ग्रीक और लेटिन भाषा के समस्त पश्चिमी और कतिपय एशियाई ग्रंथों से कहीं ज्यादा थी। इसके पूर्व 1830 में फ्रेडरिक ने 350 संस्कृत ग्रंथों की सूची बनाई थी। 1859 में बेल के शोधानुसार इन ग्रंथों की संख्या 1300 हो गई। कालांतर में 1891 आते-आते शियोगेर अलफ्रेस्ट ने जो सूची-पत्र बनाया, उसमें इन संस्कृत पांडुलिपियों की संख्या 32 हजार से ऊपर निकल गई। तदुपरांत भारतीय विद्वान हरप्रसाद शास्त्री ने 40 हजार पांडुलिपियों और 1916 में राहुल सांकृत्यायन ने 50 हजार ग्रंथों की खोज कर सूची-पत्र बना लिया। इन सूची-पत्रों की तैयारी के बाद पांडुलिपि शास्त्र के जर्मन ज्ञाता शिलगल ने इन ग्रंथों का विषयवार वर्गीकरण किया। इसी वर्गीकृत अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ये ग्रंथ केवल एक विषय, एक धर्म या अध्यात्म मात्र पर केंद्रित नहीं हैं, अपितु इस वर्गीकरण से ग्रंथों के प्रकार और उनमें अंतर्निहित दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ, जिसे तेरह वर्गों में विभाजित किया गया। वैदिक साहित्य अर्थात चार वेद, वेदांग अर्थात शिक्षा, कल्प, निरूक्त, व्याकरण, ज्योतिष और छंद। वेदांगों से आगे पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और काव्यशास्त्र लिखे गए। उपनिषदों के माध्यम से अध्यात्म खगोल और नैतिकता के दर्शन की स्थापना हुई। इसी क्रम में जैन और बौद्ध दर्शन से लेकर, चार्वाक दर्शन तक सामने आए। इनमें प्रकृति से लेकर मानव वृत्तियों के उल्लेखों के मनोवैज्ञानिक दृष्टान्त हैं, परंतु आडंबरों पर प्रहार है। 1981 में भारत की प्राचीनतम बख्शाली पांडुलिपि को प्राचीनतम गणित की पांडुलिपि माना गया है। यह पांडुलिपि खैबर पख्तूनख्वा, पेशावर (पाकिस्तान) के एक किसान को मिली थी। भोजपत्रों पर यह संस्कृत में लिखी गई है। इसके केवल सत्तर पृष्ठ मिले हैं, शेष नष्ट हो गए। इसे नौवीं शताब्दी का लिखा माना जाता है। परंतु जब इसकी लिखावट की ऑक्सफोर्ड विष्वविद्यालय और बोडालियन पुस्तकालय के शोधकर्त्ताओं ने रेडियो कार्बन डेटिंग से परीक्षण किया तो इसे तीसरी-चौथी शताब्दी का होना पाया गया। इस परिणाम से यह निष्कर्ष भी निकाला गया कि ग्वालियर में स्थित मंदिर की दीवार पर उत्कीर्ण शून्य का षिलालेख नौवीं शताब्दी का है, उससे भी पहले की यह पांडुलिपि है। इसमें एक ऐसे बिंदु का उल्लेख किया है, जो 'शून्य' का प्रतिनिधित्व करने वाला अब तक का सबसे प्राचीन प्रतीक है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक मार्कस डू सौतॉय ने प्रतिपादित किया है कि आज हम जिस शून्य का प्रयोग करते हैं, वह प्राचीन भारत में प्रयोग में लाए गए 'बिंदु' से ही विकसित हुआ है। इस पांडुलिपि का आरंभिक लेखन शारदा लिपि में है। यह लिपि 8वीं से 12वीं शताब्दी तक दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों और कश्मीर के भूखंडों में प्रचलित थी। शारदा लिपि संस्कृत के निकट मानी जाती है। ऋग्वेद में इन लिपियों के प्रारंभिक विकास के चरण पणिय और मग समुदाय के लोगों के द्वारा किए जाने के उल्लेख हैं। इस पांडुलिपि में गणितीय नियमों, उनमें आने वाली समस्याओं के हल उदाहरणों सहित उपलब्ध हैं। अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित और क्षेत्रमिति भी इसमें मिलते हैं। वर्गमूल, घनमूल स्वर्ण की गणना के साथ आय, व्यय, ब्याज और सरल समीकरणों का उल्लेख भी इस पांडुलिपि में है। बख्शाली पांडुलिपि में लिखे जाने से बहुत पहले से ही भारतीय मनीषियों ने इन गणितीय वैदिक ज्ञान के सूत्रों को श्रुति परंपरा से मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी स्मृति में ग्रहण करा दिया था। यही कालांतर में लिखित और मुद्रित रूपों में हमारे समक्ष हैं। सूत्रों को श्रुति परंपरा से मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी स्मृति में ग्राह्य कराया। यही कालांतर में लिखित और मुद्रित रूपों में हमारे समक्ष हैं। दुनिया ने मान लिया है कि ऋग्वेद के सूक्त और मंत्र सबसे प्राचीन मौखिक और भोजपत्रों पर लिखित आख्यान हैं। तथापि 'भृगुसंहिता' भी एक प्राचीन पांडुलिपि है, जिसकी मूल प्रति होशियारपुर में आज भी सुरक्षित है। इसमें ग्रह नक्षत्रों के आधार पर व्यक्ति का भूत और भविष्य वांचने का दावा किया जाता है। रामधारी सिंह दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' में ऋग्वेद की ऋचाओं को विभिन्न विद्वानों के मतानुसार दो हजार से पचहत्तर वर्ष तक का प्राचीन माना है। इनमें सबसे उत्साहजनक दृष्टिकोण डॉ अविनाश दत्त का है। वे ऋग्वेद को पचास से पचहत्तर हजार वर्श पुराना मानते हैं। बहरहाल प्राचीन पांडुलिपियों का संरक्षण तो जरुरी है ही, इनका अध्ययन भी जरूरी है।

छात्रों को अद्वितीय नौकरियों पर विचार क्यों करना चाहिए

विजय गर्ग

तेजी से विकसित होती दुनिया में, स्नातकों को अनुकूलनशीलता और निरंतर सीखने को गले लगाना चाहिए। सफलता अपने आप को फिर से तैयार करने और उत्सुक रहने पर निर्भर करती है। पिछले ज्ञान को जाने देने से नए दरवाजे खुलते हैं और कई जुनून को जोड़कर और एक बहु-विषयक मार्ग का पीछा करके, छात्र अपने लिए अद्वितीय अवसर पैदा कर सकते हैं। यहां तक कि माता-पिता भी गैर-पारंपरिक कैरियर पथ की पूर्ति और मूल्य के महत्व को समझते हैं। अज्ञात के लिए तैयार करने के लिए, स्नातकों को अपने जुनून पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, उनकी समझ को गहरा करना चाहिए, और उन कनेक्शनों को ढूंढना चाहिए जो उन्हें बाहर खड़ा करते हैं। अपने आप को सच होने और विशिष्टता को गले लगाने से एक पूर्ण और समृद्ध भविष्य होता है। सफलता अनुकूलनशीलता, निरंतर सीखने, अनलर्निंग, किसी की सच्ची कॉलिंग खोजने और वित्तीय ज्ञान को एकीकृत करने में निहित है। हाई स्कूल स्नातक सफलता के लिए अपने स्वयं के अनूठे मार्ग का पालन करके आत्मविश्वास से विकसित दुनिया को नेविगेट कर सकते हैं। मौजूदा क्षेत्रों में विघटनकारी नवाचारों से परे, कई नए कैरियर के रास्ते सामने आए हैं, जो विविध हितों और जुनून वाले छात्रों के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं। निम्नलिखित छात्रों के लिए इन रोमांचक नए युग के करियर में से कुछ हैं: ध्वनि इंजीनियरिंग और संगीत साउंड इंजीनियरिंग का क्षेत्र संगीत और ऑडियो उत्पादन के लिए प्यार वाले व्यक्तियों के लिए एक शानदार अनुभव प्रदान करता है। साउंड इंजीनियर संगीत पटरियों को रिकॉर्ड करने, मिश्रण करने और माहिर करने के साथ-साथ लाइव प्रदर्शन और फिल्म निर्माण के लिए ऑडियो समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह क्षेत्र रचनात्मक स्वभाव के साथ तकनीकी विशेषज्ञता को जोड़ती है। कृत्रिम होशियारी एआई के उदय ने विभिन्न उद्योगों में संभावनाओं की दुनिया को खोल दिया है। एआई विशेषज्ञ एल्गोरिदम, मशीन लर्निंग मॉडल और बुद्धिमान प्रणालियों के विकास पर काम करते हैं। स्वायत्त वाहनों से लेकर व्यक्तिगत सिफारिश प्रणालियों तक, एआई पेशेवर डेटा और स्वचालन की शक्ति का उपयोग करके भविष्य को आकार देते हैं।

डिजिटल मार्केटिंग और विज्ञापन डिजिटल युग में, व्यवसाय अपने लक्षित दर्शकों तक पहुंचने के लिए डिजिटल मार्केटिंग और विज्ञापन पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। इस क्षेत्र में करियर में आकर्षक सामग्री बनाना, उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण करना और उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों का उपयोग करना शामिल है। डिजिटल विपणक ब्रांड की सफलता को चलाने के लिए रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक कौशल और रणनीतिक सोच को जोड़ते हैं। ड्रोन और रोबोटिक्स रोबोटिक्स का क्षेत्र आश्चर्यजनक गति से आगे बढ़ रहा है जो रोबोट और ड्रोन को डिजाइन करने और प्रोग्रामिंग करने में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए अवसर प्रस्तुत करता है। रोबोटिक्स इंजीनियर विनिर्माण और स्वास्थ्य सेवा से लेकर रसद और मनोरंजन तक के उद्योगों के लिए रोबोट विकसित करते हैं। इस क्षेत्र में इंजीनियरिंग कौशल और नवाचार के लिए एक जुनून के मिश्रण की आवश्यकता होती है। जैसा कि नौकरी का बाजार विकसित होता है, स्नातकों के लिए उनके लिए उपलब्ध नए युग के कैरियर विकल्पों का पता लगाना आवश्यक है। ये क्षेत्र न केवल रोमांचक अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि दुनिया में एक सार्थक प्रभाव बनाने का मौका भी प्रदान करते हैं। प्रौद्योगिकी, नवाचार और रचनात्मकता की शक्ति को गले लगाकर, छात्र एक सफल और पूर्ण कैरियर का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजा)

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक और प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा विजय प्रेस, नया टोला पटना से मुद्रित तथा 302, मां तारा कंपलेक्स, नारायण मूर्ति पथ, नागेश्वर कॉलोनी, बोरिंग रोड पटना से प्रकाशित! संपादक सरोज चौधरी, R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

संक्षिप्त समाचार

विपक्षी को टारगेट करने और जेल में बंद करने के षड्यंत्र में बीतता है सरकार का कार्यकाल

शकील बेग

नावकोठी, बेगूसराय। प्रखंड के हसनपुर बागर में महागठबंधन की शुक्रवार को बैठक आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता राजद के प्रखंड अध्यक्ष गंगाराम महतो ने की। बैठक में राजद, कांग्रेस, भाकपा, माकपा, माले, वीआईपी के प्रखंड अध्यक्ष सहित वरिष्ठ नेताओं ने हिस्सा लिया। पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए 2 मिनट का मौन धारण किया गया। मृत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गयी। इस अवसर पर नेताओं ने मौजूदा केंद्र सरकार के दावे पर सवालिया निशान लगाते हुए कहा कि केंद्र सरकार के ज्यादातर समय विपक्षी नेताओं को टारगेट करने और उसे जेल में बंद करने के षड्यंत्र में बीतता है। देश की सीमा और सीमा के भीतर आतंकी हमला खुफिया विभाग की नाकामी है। आतंकी हमले की उच्च स्तरीय जांच करने की भी मांग की। सर्वसम्मति से 5 मई को महागठबंधन का प्रखंड मुख्यालय में धरना प्रदर्शन करने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर सीपीआई के अंचल मंत्री चंद्रभूषण चौधरी, माकपा के कामेश्वर झा, वीआईपी के फुलेना सहनी, कांग्रेस के सुरेश पासवान, माले के मुक्तिनारायण सिंह, संजीव सिंह, मो नाजिम, मो नसीम, श्रीराम सिंह, पलटू सिंह, विष्णुदेव सदा, पप्पू सिंह आदि मौजूद थे।

गोह पुलिस ने नामजद अभियुक्तों को किया गिरफ्तार, भेजा गया जेल

रिपोर्ट – अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद) गोह थाना क्षेत्र में लंबित मामलों में फरार चल रहे नामजद अभियुक्तों की गिरफ्तारी तेज कर दी गई है। इसी क्रम में पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में तीन अभियुक्तों को उनके घर से गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। थानाध्यक्ष मो. इरसाद ने बताया कि गोह थाना कांड संख्या 133/25 के तहत नामजद अभियुक्त मनीष राज, पिता अमरेश यादव, निवासी न्यू एरिया गोह को उसके घर से गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। वहीं, एक अन्य मामले में गोह थाना कांड संख्या 317/24 के नामजद अभियुक्त मंजू राम उर्फ कबिन्द्र राम तथा उसके भाई मुकेश राम, दोनों पिता रामदीपक दास, को उनके घर अकुरी से गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने दोनों अभियुक्तों को आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद जेल भेज दिया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि फरार अभियुक्तों की धरपकड़ के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

अपर समाहर्ता ने अस्पतालों का किया औचक निरीक्षण,

HIT Wave को लेकर तैयारियों का लिया जायजा

रिपोर्ट – अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद)जिले के अपर समाहर्ता (आपदा प्रबंधन) उपेंद्र पंडित ने गुरुवार को गोह स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने HIT बेव (गर्मी की लहर) को लेकर अस्पताल प्रशासन की तैयारियों का जायजा लिया। निरीक्षण के क्रम में अपर समाहर्ता सबसे पहलें इमरजेंसी वार्ड में पहुंचे , जहां उन्होंने विभिन्न वार्डों, दवा वितरण केंद्र तथा पीने के पानी की व्यवस्था का मुआयना किया। उन्होंने अस्पताल में मरीजों को दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली और आवश्यक निर्देश भी दिए। इसके बाद उन्होंने रोस्टर चार्ट की समीक्षा की और ओपीडी में आए मरीजों की जांच व्यवस्था को देखा। उन्होंने स्वास्थ्यकर्मियों को निर्देश दिया कि गर्मी के मौसम में मरीजों को हरसंभव राहत पहुंचाने के लिए समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए.इस मौके पर ड्यूटी में तैनात डॉ प्रमोद कुमार सिंह , डॉ अर्जुन कुमार व ए एन एम अनामिका कुमारी, गुड़िया कुमारी, अनीता कुमारी व अनामिका कुमारी, अखिलेश कुमार, नागेंद्र यादव, जितेंद्र शर्मा, बादल कुमार व अरबिंद कुमार मौजूद थे। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन HIT वेव से निपटने के लिए पूरी तरह सजग है और अस्पतालों को अलर्ट मोड में रखा गया है, ताकि किसी भी आपात स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटा जा सके।

एनटीपीसी नबीनगर बना ग्रामीणों का संकटमोचक आपदा में भी मानव सेवा जारी

विद्युत परियोजना से समाज सेवा तक एनटीपीसी नबीनगर का मानवीय चेहरा दिखाई दिया।

रिपोर्ट– प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के सुप्रसिद्ध विद्युत पावर प्लांट नबीनगर एनटीपीसी आपातकालीन स्थितियों में ग्रामीणों की सहायता हेतु अग्निशमन सुविधा प्रदान कर रहा है। परियोजना में नियुक्त केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF) की फायर विंग टीम, परियोजना से सटे ग्रामीण क्षेत्रों में आग लगने की घटनाओं पर त्वरित कार्रवाई कर रही है। गर्मियो में ग्रामीण इलाको में आग लगने की घटनाएं सामने आती रहती है, जिससे फसलों और संपत्ति को भारी नुकसान होता है। उक्त की फायर विंग सूचना मिलते ही नजदीकी इलाको तक पहुंचकर आग बुझाने में लग जाती है। इस त्वरित राहत कार्य से आमजनो को कम से कम छति का सामना करना पड़ता है। CISF की फायर विंग आधुनिक उपकरणों तथा प्रशिक्षित जवानो के बल पर हर आपातकाल की स्थिति में तुरंत करवाई करने के लिए सदैव तैयार रहती है। यह टीम न केवल परियोजना परिसर की सुरक्षा में जुटी रहती है, बल्कि जरुरत पड़ने पर पास के ग्रामीण क्षेत्रों में आपातकालीन स्थितियों, विशेषकर आग लगने की घटनाओं पर भी तुरंत करवाई कर रही है। ग्रामीणों की सुरक्षा हेतु एनटीपीसी नबीनगर द्वारा की जा रही इस पहल को स्थानीय स्तर पर खूब सराहा जा रहा है। यह प्रयास इस बात का प्रमाण है कि एनटीपीसी नबीनगर न केवल विद्युत उत्पादन में अग्रणी है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में भी पूरी गंभीरता से जुटा हुआ है।

मुस्लिम समुदाय के लोगों ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले में शहीद लोगों को दी श्रद्धांजलि

रिपोर्ट– प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद : कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले विरोध में शुक्रवार को जुम्मे की नमाज में हाथ पर काला पट्टी बांधकर मुस्लिम समुदाय ने मस्जिद में नमाज अदा की नमाज अदा के बाद मस्जिद के बाहर जम्मू कश्मीर में शहीद हुए सभी को श्रद्धांजलि अर्पित किया गया। मुस्लिम समुदाय के नमाजियों ने पाकिस्तान मुदार्बाद, आतंकवाद मुदार्बाद, पाकिस्तान का झंडा पोस्टर को जलाया गया। विरोध मार्च निकाल कर प्रदर्शन किया। मार्च में बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग शामिल रहे। नेतृत्व पैगामी इंसानियत के जिलाध्यक्ष मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान, वार्ड परिषद सिकंदर हयात, जामा मस्जिद के सेक्रेटरी नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष रईस, आजम खान के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया गया। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने कहा कि जामा मस्जिद पर जुटे मुसलमानों ने पाकिस्तान को साफ चुनौती देते हुए कहा हिन्दुस्तान का मुसलमान दहशतगर्दी के खिलाफ है। उन तमाम कश्मीर के भाइयों को सलाम करता है। जिन्होंने कश्मीर में आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देने का काम किया है। आज हिन्दुस्तान का हर मुसलमान उन सभी परिवारों के साथ है। जिनके घर का चिराग आतंकवादियों ने बुझा दिया है। हिन्दुस्तान का 30 करोड़ मुसलमान आतंकवाद को हिन्दुस्तान में किसी भी सूरत में पनपने नहीं देगा। बेगुनाह इंसानों का कत्ल इंसानियत का कत्ल है। जामा मस्जिद की सीढ़ियों से हम कहना चाहते हैं। आज से 75 साल पहले हिन्दू, मुसलमान, सिख और इसाई ने मिलकर हिन्दुस्तान की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी थी। अब आज से हिंदू, मुसलमान, सिख और इसाई आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ेगा। कहा कि पहलगाम में जो आतंकी हमला हुआ, यह शर्मनाक हरकत है. ऐसी हरकत है कि निंदा करने के लिए शब्द भी कम पड़ गए। जिन लोगों को धर्म का नाम पूछकर मारा गया, वो वहां अपने परिवार के साथ घूमने गए थे। कहा मैं

समझता हूं कि यह अभ्यर्थियों का काम है। उनका इस्लाम के साथ कोई संबंध नहीं हो सकता। भारत सरकार से मांग की कि हर बार आतंकियों को पकड़ा जाता है, लंबे मुकदमे चलते हैं. इस मामले में ऐसा नहीं होना चाहिए। आरोपियों को पकड़कर फास्ट ट्रैक की अदालत में मुकदमा चलाया जाए और किसी बाजार के अंदर उनको सजा-ए-मौत देनी चाहिए, ताकि आतंकवाद के खिलाफ भारत की ओर से एक मजबूत संदेश दुनिया को दिया जा सके। कहा कि इस दुख की घड़ी में इस बात का ऐलान होना चाहिए कि हम सब आतंकावाद के खिलाफ हैं और आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता. धर्म पूछकर जो गोली मारे, वो सबसे बड़ा अदर्मी है, उनके खिलाफ कार्रवाई करना हम सब का धर्म है। हम सभी को मिलकर यह दिखाना होगा कि कोई भी ताकत, चाहे वो देश के बाहर की हो या भीतर की, हमारे मुल्क की एकता और अमन को नहीं तोड़ सकती है। इस नफरत और खौफ के खिलाफ हमारा सबसे बड़ा हथियार है। जामा मस्जिद के सदस्य मो. अब्बास, मो. मुन्ना, मो. मजहर, अकबर मजहबी, मो. नदीम, मो. राशिद, मो. मुस्ताक, मो. शादाब खान, मो. हसनैन, मो. फारूक, मो. नौशाद राजा, नईमुद्दीन उर्फ नाथू सहित मौजूद रहे।

आईआईटी और नीट की तैयारी को लेकर नंद फाउंडेशन के प्रयास को विधायक ने बताया सराहनीय कदम

दिव्य दिनकर जिला संवाददाता काजल गुप्ता

जमालपुर। शिक्षा के क्षेत्र में गरीब एवं जरूरतमंद छात्रों को कोटा, दिल्ली, पटना जैसी बड़े-बड़े शहरों की तर्ज पर रेल नगरी जमालपुर में आईआईटी और नीट की तैयारी की दिशा में रचनात्मक पहल करने वाले नंद फाउंडेशन की ओर से एकदिवसीय सेमिनार सह मार्गदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नंद फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष आशीष कुमार सिंह तथा मंच संचालन एस के घोष ने किया। कार्यक्रम का संयोजन नंद फाउंडेशन के संरक्षक विनय कुमार यादव, सचिव परम नवीन कुमार एवं सह-संयोजन दिनेश कुमार ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में जमालपुर विधायक डॉ अजय कुमार सिंह तथा विशिष्ट स्थिति के रूप में जगजीवन रामस्वामी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो डॉ देवराज सुमन, उच्चतम न्यायालय दिल्ली के अधिवक्ता सह राजद नेता संजय सिंह यादव, नंद फाउंडेशन की मार्गदर्शक नंद रानी देवी एवं जन सुराज के नेता राजीव नयन मौजूद थे। अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर तथा सरस्वती माता के तैलीय चित्र पर पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सेमिनार को संबोधित करते हुए जमालपुर विधायक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने कहा कि आईआईटी और नीट जैसी प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्रों को कोटा, दिल्ली एवं पटना जैसे बड़े-बड़े शहरों का रुख करना पड़ता है। जहां महंगे कोचिंग संस्थाओं के लाखों रुपए की फीस के कारण गरीब एवं जरूरतमंद बच्चों का इंजीनियरिंग का सपना तक अधूरा रह जाता है। ऐसे में

नव फाउंडेशन की ओर से किया जा रहा प्रयास एक सराहनीय कदम है। जिसे सफल बनाने की दिशा में समाज के हर वर्ग को सहयोग करने की आवश्यकता है। प्रो डॉ देवराज सुमन एवं राजद नेता संजय सिंह यादव ने कहा कि जमालपुर जैसे छोटे शहर में नंद फाउंडेशन की और से आज के युवा वर्ग को राज दिखाया जा रहा है। राजेश रमण उर्फ राजू यादव, बमबम यादव, नागेश्वर यादव, राजेंद्र यादव, राजेश यादव, ब्रह्मदेव चौरसिया, राजकुमार मंडल एवं केडी यादव ने नंद फाउंडेशन के संस्थापक सदस्यों को उनके प्रयास के लिए सराहा। कार्यक्रम के समापन सत्र में जम्मू कश्मीर के पाल गांव में आतंकी हमले में मारे गए सभी पर्यटकों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण किया गया। मौके पर चंदन पासवान, सुनील यादव, अरुण यादव, अशोक यादव, अशोक पासवान, प्रिंस कुमार, महेश यादव, राहुल कुमार, भूपेंद्र सिंह, विपिन श्रीवास्तव, आलोक कुमार, लालू यादव, संजय यादव एवं सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद थे।

कैंडल मार्च निकालकर दिवंगत 27 पर्यटकों को दी गई श्रद्धांजलि

राजद ने केंद्र सरकार से आतंकवादियों के खिलाफ करें करवाई करने की उठाई मांग

दिव्य दिनकर प्रमंडल बिहार
पवन कुमार चौधरी

जम्मू कश्मीर के पहलगांव में विगत दिनों आतंकियों के कायराना हमलों में मारे गए 27 नागरिकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के द्वारा बिहार के सभी जिलों में केंडिल मार्च निकाल कर श्रद्धांजलि दी गई। मुंगेर जिला राष्ट्रीय जनता दल सहित इंडिया गठबंधन के विभिन्न घटक दलों के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को जिला मुख्यालय में राजद के मुंगेर जिला राजद के प्रधान महासचिव संतोष कुमार यादव के नेतृत्व में आजाद चौक स्थित जिला राजद कार्यालय से कैंडल मार्च निकाला गया। आजाद चौक मुंगेर से आरंभ हुए कैंडल मार्च में सैकड़ों की संख्या में विभिन्न चौक चौराहों से होते हुए विजय चौक पर केंडिल मार्च का समापन किया गया। इस दौरान मृत नागरिकों के प्रति दो मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित किया

गया। केंडिल मार्च में मुख्य रूप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष अशोक पासवान, मो परवेज अकरम, चंदन सिंह, वीआईपी के प्रदेश उपाध्यक्ष मो जफर अहमद, वाम दल के अशोक मंडल, दिलीप सिंह, लखन कुमार, मो वसीम उदीन, राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश महासचिव पंकज यादव, प्रमोद यादव, जितेंद्र कुशवाहा, पूर्व प्रत्याशी अविनाश कुमार विद्यार्थी उर्फ मुकेश यादव, उप मेयर मो खालिद हुसैन, संजय सिंह यादव, महानगर मुंगेर अध्यक्ष मो जुनैद मखमूर, मो आबिद हुसैन, संजय पासवान, आकाशदीप यादव, नागेश्वर यादव, सुनील राय, शिशिर कुमार लालू, गजेंद्र कुमार हिमांशु, राजेश रमण उर्फ राजू, आदर्श राजा, सौरभ जायसवाल, कौशल किसलय, संजय रावत, बमबम यादव सहित इंडिया गठबंधन के सैकड़ों नेता कार्यकर्ता मौजूद रहे।

विदेश सेवा अधिकारियों ने की नीतीश कुमार से मुलाकात, बिहार भ्रमण को बताया प्रभावशाली अनुभव

पटनाः मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से आज 1 अणे मार्ग स्थित 'संकल्प' में मध्य सेवा कालीन प्रशिक्षण चरण 2 के तहत बिहार भ्रमण पर आये भारतीय विदेश सेवा के पदाधिकारियों ने शिष्टाचार मुलाकात की। इन भ्रमण करने वाले पदाधिकारियों में बिहार के दरभंगा जिले के रहने वाले विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में पदस्थापित अमित कुमार मिश्रा, सुपौल जिले के रहने वाले ऑस्ट्रेलिया में पदस्थापित डॉ० सुशील कुमार और गया जिले के रहने वाले लाइबेरिया देश में पदस्थापित मनोज बिहारी वर्मा शामिल हैं। भारतीय विदेश सेवा के इन पदाधिकारियों ने 21 से 25 अप्रैल की अवधि में मध्य सेवा कालीन प्रशिक्षण चरण 2 के तहत आर्थिक, व्यापारिक

एवं वाणिज्यिक परिवेश से अवगत होने हेतु बिहार का भ्रमण किया। मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान भारतीय विदेश सेवा के इन पदाधिकारियों ने कहा कि बिहार काफी तरक्की कर रहा है। हर क्षेत्र में यहां विकास दिख रहा है। यहां के लोगों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आया है। बिहार की छवि सभी जगह बदली है। राज्य का माहौल काफी खुशनुमा है और लोगों की विकास के प्रति सकारात्मक मानसिकता दिख रही है। हमलोगों ने भ्रमण के दौरान महसूस किया कि पहले के बिहार और अब के बिहार में काफी बदलाव आया है। मुख्यमंत्री ने भारतीय विदेश सेवा के आगंतुक पदाधिकारियों को शुभकामनायें दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव कुमार रवि, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, सामान्य प्रशासन विभाग की विशेष सचिव रचना पाटिल सहित भारतीय विदेश सेवा के पदाधिकारी उपस्थित थे।

दुष्कर्म आरोपी किशोर को तीन साल की सजा सुनाई गई

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- किशोर न्याय बोर्ड के प्रधान दंडाधिकारी सह एसीजेएम सुशील प्रसाद सिंह ने रफीगंज थाना कांड संख्या -242/22 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए एक मात्र आवासीत किशोर को तीन साल की सजा सुनाई है, अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि आवासीत किशोर 08/07/22 से पर्यवेक्षण गृह गया में संसीमित है बोर्ड द्वारा पर्यवेक्षण गृह गया के अधीक्षक को एक पत्र निर्गत किया गया है जिसमें कहा गया है कि सजा पूरी करने के लिए आवासीत किशोर को विशेष गृह पटना स्थानांतरित किया जाएं, अधिवक्ता ने बताया कि आवासीत किशोर पर भादंवि धारा 376 तथा 06 पोक्सो एक्ट एवं एस सी एस टी जेसे जघन्य अपराध के धाराओ में मामला दर्ज था, बोर्ड ने आगे यह भी कहा है कि विधिक सेवा प्राधिकार औरंगाबाद के माध्यम से पीड़िता को चार लाख रुपए प्रतिकर दिलाया जाए।

बिहार अब उपभोक्ता नहीं, उत्पादक राज्यों में शुमार :कृष्ण कुमार मंटू

पटनाः बिहारवासियों मे लिए एक बड़ी खुशखबरी है। वर्षों से राज्य में निवेश का इंतजार अब खत्म हो चुका है। राज्य के सूचना प्रावैधिकी मंत्री कृष्ण कुमार मंटू ने शुक्रवार को राजधानी पटना के समीप बिहटा के सिकंदरपुर गांव में निमार्णाधीन आईटी पार्क में देश की दो बड़ी कंपनियों लेक्सा लाइटिंग टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड और आईटी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित बेंचमार्क इन्फोटेक की अधारशिला रख दी है। इस मौके पर राज्य के सूचना प्रावैधिकी मंत्री कृष्ण कुमार मंटू ने कहा कि अब बिहार केवक उपभोक्ता राज्य नहीं बल्कि उत्पादक राज्यों की श्रेणी में शामिल हो चुका है। इस आधारशिला कार्यक्रम में राज्य के सूचना प्रावैधिकी विभाग के सचिव अभय कुमार सिंह के साथ लेक्सा लाइटिंग टेक्नोलॉजी के चारों निदेशक और आईटी विभाग के विशेष सचिव अरविन्द कुमार चौधरी मौजूद थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य के आईटी मंत्री कृष्ण कुमार मंटू ने कहा कि अब बिहार की धरती से उत्पादित सोलर लाइट और आईटी से जुड़े उत्पाद न सिर्फ देशभर में बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों में भेजे जाएंगे। उन्होंने कहा कि उनका विभाग इस निवेश के लिए पिछले दो वर्षों से प्रयास कर रहा था। इस निवेश से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। इन दोनों कंपनियों में पाँच सौ से भी अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित हो रहे हैं। इस मौके पर राज्य के सूचना प्रावैधिकी विभाग के सचिव अभय कुमार सिंह ने बिहटा के आईटी पार्क में निवेश करने वाली कंपनियों के लिए सरकार की नई आईटी नीति के तहत कई तरह की सुविधाओं और सहायता उपलब्ध कराने की घोषणा की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आईटी मंत्री मंटू ने कहा कि जिस दिन बिहटा के आईटी पार्क में सौ कंपनियां काम शुरू कर देंगी, उस दिन बिहार के लाखों युवाओं को उनके ही राज्य में रोजगार उपलब्ध हो जाएगा। इसके लिए उन्होंने उन बिहटावासियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया, जिन्होंने अपनी जमीन इस आईटी पार्क के निर्माण के लिए दी है। उन्होंने कहा कि बिहटा के स्थानीय लोगों को यहां रोजगार में प्राथमिकता दी जाएगी। आईटी मंत्री ने कहा कि उनकी सरकार राज्य के सभी जिलों में औद्योगिक पार्क का निर्माण कर रही है,

फोन पर तेज आवाज में बात कर रहा था चचेरा भाई, रोका तो मार डाला...बेटी को विदा करने से पहले की निर्मम हत्या

औरंगाबादः बिहार के औरंगाबाद जिले से रिश्तों को शर्मसार करने वाला मामला सामने आया है, जहां पर मामूली सी बात पर एक भाई ने अपने ही चचेरे भाई की हत्या (Brother Killed Brother) कर दी। वहीं, इस घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई। जानकारी के मुताबिक, मामला जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बिगहा गांव का है। मृतक की पहचान 50 वर्षीय मिश्री चौधरी के रूप में हुई है। घटना के संबंध में मृतक के परिजनों ने बताया कि गुरुवार को मिश्री का चचेरा भाई अशोक चौधरी फोन पर जोर-जोर से बात कर रहा था। मिश्री चौधरी ने उसे धीमी आवाज में बात करने को कहा तो वह भड़क गया। इसके बाद दोनों भाइयों में बहस शुरू हो गई। परिजनों ने किसी तरह दोनों को शांत करवाया। बाद में मिश्री चौधरी अपने घर आ गए। घर आकर वह खाना खाकर गांव के सामुदायिक भवन में सोने चले गए, तभी अशोक चौधरी अपने बेटे और अन्य लोगों के साथ वहां पर आया और अधेड़ पर लाठी-डंडे से हमला कर दिया, जिसके बाद वह गंभीर रूप से घायल हो गए। परिवार के लोग आनन-फानन में घायल को अस्पताल लेकर गए, जहां पर चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल इधर, घटना की सूचना मिलते ही पुलिस (Bihar Police) मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच में जुट गई है। घटना को अंजाम देने के बाद आरोपित अशोक चौधरी सहित अन्य लोग फरार चल रहे हैं। बताया जाता है कि अशोक चौधरी की बेटी की 30 अप्रैल को शादी होने वाली है, जबकि उसी दिन उनके बेटे का तिलक भी है। वहीं, इस घटना के बाद मृतक के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

प्रशासनिक सुधार में बिहार बना मॉडल, IFS अधिकारियों ने जाना अनुभव

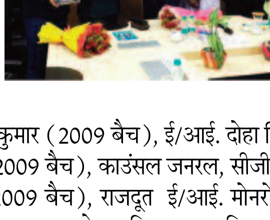

पटनाःभारतीय विदेश सेवा (भा.वि.से.) के चार पदाधिकारियों की एक टीम ने अपने मध्य-सेवकालीन प्रशिक्षण चरण-II (MCTP-II) कार्यक्रम के तहत दिनांक-25.04.2025 को बिहार प्रशासनिक सुधार मिशन सोसाइटी, पटना का परिभ्रमण किया । इस टीम में अमित कुमार मिश्रा (2004 बैच), निदेशक (MEA), संदीप कुमार (2009 बैच), ई/आई. दोहा मिशन के डिप्टी चीफ, डॉ. सुशील कुमार (2009 बैच), काउंसल जनरल, सीजीआई, मेलबर्न और मनोज बिहारी वर्मा (2009 बैच), राजदूत ई/आई. मोनरोविया शामिल थे। इन अधिकारियों के परिभ्रमण का उद्देश्य बिहार प्रशासनिक सुधार मिशन सोसाइटी द्वारा राज्य में लागू किए जा रहे प्रशासनिक सुधार कार्यक्रमों के क्रियान्वयन से अवगत होना था। बिहार प्रशासनिक सुधार मिशन, पटना में एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें पदाधिकारियों को सामान्य प्रशासन विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. बी. राजेन्दर एवं सोसाइटी की अपर मिशन निदेशक डॉ. प्रतिमा द्वारा मिशन के द्वारा प्रशासनिक सुधार के क्षेत्र में संचालित कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया। बैठक में बिहार लोक सेवाओं का अधिकार अधिनियम, बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, बिहार सरकारी सेवक शिकायत निवारण प्रणाली, मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली, जिज्ञासा एवं समाधान कॉल सेंटर के क्रियान्वयन तथा उसके प्रभाव पर एक विस्तृत प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत की गई। अधिकारियों ने इन प्रशासनिक सुधार कार्यक्रमों के राज्य में सफल क्रियान्वयन के लिए सोसाइटी की भूमिका को सराहा एवं सोसाइटी के योगदान की प्रशंसा की ।

अवैध कॉलोनियों में ना करें कोई निर्माण, विभाग द्वारा की जाएगी कार्रवाईः डीटीपी सतीश कुमार

एजेंसी

करनाल। जिला नगर योजनाकार सतीश कुमार ने बताया कि गत दिवस असंध में 4 अवैध कॉलोनियों के विरूद्ध तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया कि असंध में सफीदों रोड पर खाटू श्याम मंदिर के नजदीक लगभग 4 एकड़ में स्थित अवैध कॉलोनी में सभी कच्ची सडक़ों व 2 डी.पी.सी. को तोड़ा गया। इसी प्रकार से मलिकपुर रोड पर लगभग 8.5 एकड़ में फैली अवैध कॉलोनी में सभी कच्ची सड़कों, 3 डी.पी.सी., सीवर नैटवर्क व 2 दुकानों के विरूद्ध तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई। इसके अतिरिक्त 3 दुकानों को सील किया गया। उन्होंने बताया कि असंध बाई पास पर बस स्टैण्ड के पीछे गीता कॉलोनी के साथ लगभग 3 एकड़ में स्थित एक अवैध कॉलोनी में 3 निर्माणाधीन मकान, 5 डी.पी.सी., सीवर नेटवर्क व सभी कच्ची सड़कों को ध्वस्त किया गया। इसी प्रकार करनाल-असंध रोड पर यश होटल के नजदीक लगभग 2.5 एकड़ में स्थित एक अवैध कॉलोनी में 2 डी.पी.सी. व सभी पक्की सडक़ों के विरूद्ध तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया इस अवैध कॉलोनी में विभाग द्वारा पांचवी बार तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई है। कार्रवाई के दौरान जिला नगर योजनाकार व कार्यालय की टीम, ड्यूटी मजिस्ट्रेट व थाना असंध की पुलिस फोर्स उपस्थित रहे।जिला नगर योजनाकार ने लोगों से अपील की कि कोई भी व्यक्ति अवैध कॉलोनी में कोई निर्माण नहीं करें अन्यथा कार्यालय द्वारा तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि अवैध कॉलोनियों व अवैध निर्माणों के विरुद्ध किसी प्रकार की कोताही नहीं बरती जाएगी व तोडफ़ोड़ की कार्यवाही जारी रहेगी तथा दोषियों के विरुद्ध मुकदमे दर्ज करवाये जायेंगे।

तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी के चलते आग हुई जवान

नारनौल। तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी के चलते आग वर्तमान में पूरी जवान हो चुकी है। ऐसे मौसम में होने वाली आग लगी की घटनाओं पर जागरूकता से ही पाया जा सकता है। गर्मी के मौसम में अक्सर फसल अथवा पशु चारे के साथ-साथ ईंधन में आग लगने की घटनाएं सामने आती रहती हैं, जिससे किसानों को आर्थिक समस्या का सामना तो करना पड़ता ही है साथ ही वह मानसिक रूप से भी काफी परेशान हो जाते है। फसल कटाई के दौरान आगलगी जैसी कोई अप्रिय घटना ना घटे इसके लिए किसानों को बेहद जागरूक रहने की दरकार है। अप्रैल का महीने में ही तापमान मई जून जैसा होता जा रहा है, वहीं हवा की वजह से आग लगने की घटनाएं भी बढ़ी है। हालांकि जिला प्रशासन ने जागरूकता अभियान के तहत लोगों को जागरूक तो किया है, लेकिन फिर भी किसानों को इन बातों का ध्यान रखना जरूरी हैं। इस मौसम में यदि खुले में आग जलाते हैं तो उसे बुझाना ना भूलें, क्योंकि कई बार हवा या घास फूस के माध्यम से आग फसल तक पहुंच जाती है। वहीं, रास्ते में चलने वाले राहगीर ध्यान रखें, यदि आप सिगरेट या बीड़ी के जलते टुकड़े इधर उधर ना फेंकें। साथ ही यह भी सुनिश्चित कर लें कि ये टुकड़े पूरी तरह बुझ चुके हैं, और जहां फेंक रहे हैं, वहां फसल तो नहीं है। खेत की मेड़ एवं आसपास की जगह को साफ रखें, जिससे आग पकड़ने का डर नहीं रहे।

पहलगाम आतंकी हमला मानवता के विरुद्ध जघन्य अपराध : गोयल

जींद। अखिल भारतीय अग्रवाल समाज हरियाणा के अध्यक्ष एवं प्रमुख समाजसेवी डॉ. राजकुमार गोयल ने जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए इसे मानवता के विरुद्ध जघन्य अपराध बताया है। गोयल ने कहा कि यह हमला न केवल निर्दोष नागरिकों पर किया गया कायराना कृत्य है बल्कि यह देश की एकता, अखंडता और सामाजिक सौहार्द्र को चोट पहुँचाने का भी षड्यंत्र है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ऐसे आतंकी हमले हमें कमजोर नहीं कर सकते बल्कि हमें आतंकवाद के खिलाफ और अधिक दृढ़ बना देते हैं। उन्होंने कहा कि इस हमले में जिन निर्दोष नागरिकों ने अपने प्राण गंवाए उनके प्रति वे अपनी गहरी संवेदनाएं प्रकट करते हैं और साथ ही घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते है।

समाधान शिविर के माध्यम से हो रहा है नागरिकों की शिकायतों का त्वरित निपटान : एडीसी

जींद। लघु सचिवालय स्थित सभागार में आयोजित समाधान शिविर के दौरान अतिरिक्त उपायुक्त विवेक आर्य ने नागरिकों की विभिन्न शिकायतें सुनीं और मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार की पहल पर अब प्रत्येक सोमवार और समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि आमजन की समस्याओं का एक ही स्थान पर शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जा सके। आयोजित शिविर में कुल 7 शिकायतें प्राप्त हुईं। गांव रधाना से रघुवीर ने बिजली संबंधी समस्या रखी, जबकि गांव राजपुरा निवासी देवेंद्र ने अपनी फैमिली आईडी में सुधार की मांग की।

मंत्री अनिल विज ने विदेश भेजने के नाम पर ठगी की शिकायतों पर लिया कड़ा संज्ञान, डीएसपी को सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए

● कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने वीरवार अपने आवास पर अम्बाला छावनी विधानसभा क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुना

एजेंसी

अम्बाला। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने आज अपने आवास पर अम्बाला छावनी विधानसभा क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुना और उनके निवारण के लिए संबंधित अधिकारियों को कार्रवाई के दिशा-निर्देश दिए।

विदेश भेजने के नाम पर ठगी के अलग-अलग मामलों में कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने पुलिस को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। अशोक नगर निवासी व्यक्ति ने शिकायत देते हुए मंत्री अनिल विज को बताया कि उस मतिदास नगर निवासी एक एजेंट ने उसे झांसा दिया कि वह उसके बेटे को विदेश में भेज देगा।

बेटे को स्लोवाकिया भेजने के लिए उसने ढाई लाख रुपए दिए थे। मगर कुछ समय बाद एजेंट ने यह राशि उसे वापस लौटाते हुए कहा कि स्लोवाकिया का वीजा नहीं लग रहा वह दूसरे देश में उसके बेटे को भेज देंगे और उसे ढाई लाख रुपए वापस कर दिए। इसके बाद एजेंट ने उसके बेटे को कैनेडा भेजने के नाम पर 15 लाख रुपए लिए मगर आज तक

उसके बेटे को कैनेडा भेजा नहीं किया न ही राशि वापस लौटाई गई। कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने मौके पर मौजूद डीएसपी कैंट को मामले में सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। इसी प्रकार कैंट थाना क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने बताया कि एजेंट ने उस विदेश जाने के लिए उसके साथ 25 लाख रुपए की ठगी की। इस मामले में वह कार्रवाई बार एजेंट से मिला मगर उसकी राशि वापस नहीं की गई। इस मामले में मंत्री अनिल विज ने डीएसपी को कार्रवाई के निर्देश दिए।

ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने बिजली से संबंधित शिकायतों के जल्द समाधान के निर्देश दिए

ऊर्जा मंत्री अनिल विज के समक्ष बिजली के संबंधित कई समस्याएं आई जिनपर उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को कार्रवाई को कहा। राजिंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में तारों को कसने व बिजली पोल लगाने की शिकायत दी। इसी प्रकार बाबा बालक नाथ मंदिर के निकट रहने वाली महिला ने बिजली विभाग पर उसका मीटर जबरन उतारने की शिकायत दी। अमन नगर निवासी व्यक्ति ने उसके मीटर रीडिंग में गड़बड़ी होने व मीटर जांच की मांग करी। इसके अलावा बिजली से संबंधित अन्य शिकायतें भी आई।

ऊर्जा व परिवहन मंत्री अनिल विज को महेशनगर निवासी महिला ने शिकायत देते हुए बताया कि उसके पति ने उसके साथ मारपीट करते हुए उसे घर से निकाल दिया है। इसी तरह सदर क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने शटरिंग के सामान व पैसों के लेनदेन को लेकर व्यक्ति से विवाद की शिकायत दी, राजेंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में नया ट्यूबवेल लगाने की शिकायत दी जिसपर मंत्री अनिल विज ने जन स्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन को कार्रवाई के निर्देश दिए।

राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने नौसेना अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के परिवार से की बात

● पहलगाम आतंकी हमला मानवता के खिलाफ सबसे जघन्य अपराध- बंडारू दत्तात्रेय

एजेंसी

चण्डीगढ़। हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने नौसेना अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों से बात की। विनय देश के वीर सपूत थे, जिन्होंने पहलगाम में हुए आतंकी हमले में अपनी जान गंवा दी। राज्यपाल ने शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की और एक साहसी युवा अधिकारी के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया।

श्री बंडारू दत्तात्रेय ने पहलगाम आतंकी हमले को मानवता के खिलाफ सबसे जघन्य अपराध बताते हुए इस क्रूर कृत्य की कड़ी निंदा की और कहा कि इस तरह के कायरतापूर्ण हमले कभी भी भारतीय नागरिकों, सशस्त्र बलों या राष्ट्र की भावना के संकल्प को हिला नहीं पाएंगे। राज्यपाल ने कहा कि एक बहादुर और युवा नौसेना अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की क्षति को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। उन्होंने परिवार के सदस्यों से कहा कि हरियाणा और पूरा देश इस दुख की घड़ी में आपके साथ खड़ा है। घृणित आतंकी हमले के पीड़ितों के प्रति

सम्मान व्यक्त करते हुए श्री दत्तात्रेय ने बताया कि भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ से अपनी आत्मकथा 'जनता की कहानी मेरी आत्मकथा' के विमोचन समारोह को स्थगित करने का अनुरोध किया था, जो मूल रूप से 24 अप्रैल को उपराष्ट्रपति भवन में होना था। जिसे देर रात स्थगित कर दिया गया।

निहत्थे और निर्दोष पर्यटकों को निशाना बनाना आतंकियों की कायर्ता को दर्शाता है- कैप्टन अभिमन्यु

एजेंसी

चण्डीगढ़। जम्मू-कश्मीर के प्रमुख पर्यटन स्थल पहलगाम में हाल ही में हुए कायरतापूर्ण आतंकी हमले को लेकर वरिष्ठ नेता कैप्टन अभिमन्यु ने गहरा दुख और आक्रोश प्रकट किया है। उन्होंने इस जघन्य हमले को मानवता पर कलंक बताया और स्पष्ट कहा कि इसका माक़ूल जवाब जरूर दिया जाएगा।

'कश्मीर घाटी जैसे शांतिपूर्ण और खूबसूरत स्थल पर निहत्थे और निर्दोष पर्यटकों को निशाना बनाना आतंकियों की कायर्ता को दर्शाता है। ये हमला केवल पर्यटकों पर नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन और भारत की आत्मा पर किया गया है। देश इसे कभी माफ नहीं करेगा।'उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और गृहमंत्री श्री अमित शाह जी, इस नृशंस हमले का 140 करोड़ भारतवासियों की भावनाओं के अनुरूप जवाब देंगे। 'ये नया भारत है, जवाब जरूर मिलेगा – निर्णायक, सटीक और ऐसा जो दुश्मनों को संदेश देगा कि भारत के धैर्य की परीक्षा लेना कितना महँगा पड़ता है।

कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि वह

समय दूर नहीं जब क्षेत्र में फिर से शांति और खुशहाली लौटेगी। 'पहलगाम की वादियाँ फिर से गूंजेंगी, पर इस बार आतंक की नहीं, शांति, प्रेम और न्याय की गूंज होगी।उन्होंने पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि पूरा देश उनके साथ खड़ा है।

सहकारिता क्षेत्र अगले पांच साल में एक खरब डॉलर का योगदान देगा : कृष्णपाल गुर्जर

एजेंसी

अम्बाला। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने आज अपने आवास पर अम्बाला छावनी विधानसभा क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुना और उनके निवारण के लिए संबंधित अधिकारियों को कार्रवाई के दिशा-निर्देश दिए। विदेश भेजने के नाम पर ठगी के अलग-अलग मामलों में कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने पुलिस को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। अशोक नगर निवासी व्यक्ति ने शिकायत देते हुए मंत्री अनिल विज को बताया कि उस मतिदास नगर निवासी एक एजेंट ने उसे झांसा दिया कि वह उसके बेटे को विदेश में भेज देगा। बेटे को स्लोवाकिया भेजने के लिए उसने ढाई लाख रुपए दिए थे। मगर कुछ समय बाद एजेंट ने यह राशि उसे वापस लौटाते हुए कहा कि स्लोवाकिया का वीजा नहीं लग रहा वह दूसरे देश में उसके बेटे को भेज देंगे और उसे ढाई लाख रुपए वापस कर दिए। इसके बाद एजेंट ने उसके बेटे को कैनेडा भेजने के नाम पर 15 लाख रुपए लिए मगर आज तक

उसके बेटे को कैनेडा भेजा नहीं किया न ही राशि वापस लौटाई गई। कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने मौके पर मौजूद डीएसपी कैंट को मामले में सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। इसी प्रकार कैंट थाना क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने बताया कि एजेंट ने उस विदेश जाने के लिए उसके साथ 25 लाख रुपए की ठगी की। इस मामले में वह कार्रवाई बार एजेंट से मिला मगर उसकी राशि वापस नहीं की गई। इस मामले में मंत्री अनिल विज ने डीएसपी को कार्रवाई के निर्देश दिए।

ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने बिजली से संबंधित शिकायतों के जल्द समाधान के निर्देश दिए

ऊर्जा मंत्री अनिल विज के समक्ष बिजली के संबंधित कई समस्याएं आई जिनपर उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को कार्रवाई को कहा। राजिंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में तारों को कसने व बिजली पोल लगाने की शिकायत दी। इसी प्रकार बाबा बालक नाथ मंदिर के निकट रहने वाली महिला ने बिजली विभाग पर उसका मीटर जबरन उतारने की शिकायत दी। अमन नगर निवासी व्यक्ति ने उसके मीटर रीडिंग में गड़बड़ी होने व मीटर जांच की मांग करी। इसके अलावा बिजली से संबंधित अन्य शिकायतें भी आई।

ऊर्जा व परिवहन मंत्री अनिल विज को महेशनगर निवासी महिला ने शिकायत देते हुए बताया कि उसके पति ने उसके साथ मारपीट करते हुए उसे घर से निकाल दिया है। इसी तरह सदर क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने शटरिंग के सामान व पैसों के लेनदेन को लेकर व्यक्ति से विवाद की शिकायत दी, राजेंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में नया ट्यूबवेल लगाने की शिकायत दी जिसपर मंत्री अनिल विज ने जन स्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन को कार्रवाई के निर्देश दिए।

जिले में अवैध माइनिंग करने वालों के खिलाफ होगी कड़ी कार्रवाई डीसी मीणा ने दिए सख्त आदेश

एजेंसी

नूंह।उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि जिला में अवैध माइनिंग की गतिविधियों में शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जा रही है। 1 जनवरी 2025 से मार्च 2025 तक अवैध खनन करते हुए पकड़े जाने पर 40 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है और 30 वाहनों को जब्त किया गया है। अवैध माइनिंग करने वाले लोगों और वाहनों के ओवरलोडिंग के चालान कर अब तक 160611 रुपए राशि

का जुर्माना लगाया गया है। उपायुक्त अवैध खनन मामलों को रोकने के लिए गठित जिला स्तरीय टास्क फोर्स कमेटी की अध्यक्षता करते हुए यह जानकारी दी। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिला में अवैध माइनिंग की गतिविधियों पर पूर्ण रूप से रोक सुनिश्चित की जाए। इसके लिए खनन, वन, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पुलिस विभाग तथा इनफोर्समेंट ब्यूरो की टीमें आपसी तालमेल से कार्य करें तथा दोषियों लोगों के खिलाफ त्वरित कार्यवाही की जाए। कोई भी व्यक्ति अवैध खनन जैसी गतिविधियों में संलिप्त पाया जाता है तो उनके खिलाफ तुरंत मामला दर्ज कर कानूनी कार्यवाही की जाए। उन्होंने बैठक में जिला में अवैध खनन पर स्थिति रिपोर्ट, जब्त किए वाहनों व उन पर लगाए गए जुर्माने का विवरण, ओवरलोड वाहनों पर अब तक की गई कार्रवाई के मामलों की समीक्षा की। बैठक में एसडीएम नूंह अश्वनी कुमार, एसडीएम पुन्हाना कंवर आदित्य सिंह, खनन विभाग के अधिकारी तथा इनफोर्समेंट ब्यूरो से एसएचओ सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

नूंह के नवनियुक्त पुलिस कप्तान राजेश कुमार ने संभाला कार्यभार

अपराध व अपराधियों पर पूर्णतया अंकुश लगाने के साथ-साथ आमजन को न्याय दिलाना होगी प्राथमिकता : राजेश कुमार

एजेंसी

नूंह। नूंह जिले के नवनियुक्त पुलिस कप्तान राजेश कुमार आईपीएस ने बुधवार को देर सायं नूंह पहुंच का कार्यभार संभाल लिया है। जिला पुलिस कार्यालय नूंह पहुंचने पर उप-पुलिस अधीक्षक फिरोजपुर झिरका अजायब सिंह ने फूलों का गुलदस्ता भेंट कर पुलिस अधीक्षक नूंह का स्वागत किया । पुलिस अधीक्षक नूंह राजेश कुमार भारतीय पुलिस सेवा हरियाणा कैडर के 2014 बैच के अधिकारी है। एसपी राजेश कुमार आमजन के कार्यों के लिये समर्पित पुलिस अधिकारी के तौर पर जाने जाते हैं और अपराधियों के लिए सिरदर्द बने रहते हैं । इनकी प्राथमिकता हमेशा शांति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखना, क्राइम कंट्रोल के साथ-साथ अपराधियों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई करना तथा आमजन की समस्यायों का

अविलम्ब निपटारा व समाधान करने की रही है। जोखिम व चुनोतिपूर्ण कार्यों में उन्होंने हमेशा सफलता पाई है । एसपी राजेश कुमार हरियाणा के रेवाडी एवं फतेहाबाद जिलों सहित एंटी करप्शन ब्यूरों में बतौर पुलिस अधीक्षक कार्यरत रह चुके हैं । अपनी नियुक्ति के दौरान संबंधित क्षेत्र में कानून व्यवस्था को सुचारू एवं शांति पूर्वक बनाए रखने एवं अपराध / अपराधियों पर लगाम लगाने में इनकी अहम भूमिका रही है।

कार्यभार ग्रहण करने उपरांत नव-नियुक्त पुलिस कप्तान राजेश कुमार ने कहा कि जिला नूंह में अपराधियों पर लगाम लगाने के लिये पहले से ही कार्य किया जा रहा हैं फिर भी और मजबूती के साथ अंकुश लगाने का कार्य करेंगे । इसके अतिरिक्त जिले में नशा उन्मूलन, सड़क दुर्घटनाओं को रोकने, साइबर अपराध नियंत्रण सहित सभी तरह के अपराधों पर रोक लगाने में उनकी प्राथमिकता रहेगी । नशीले पदार्थों व साइबर क्राइम पर अंकुश लगाने के लिए हर संभव प्रयास किये जायेंगे और पुलिस द्वारा नशीले पदार्थों का व्यापार करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी । साथ ही अपराधियों को सूचना और पनाह देने वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जायेगी और उनकी सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा ।

जिला में बेहतर कानून व्यवस्था एवं शांति बनाए रखने में आमजन के सहयोग की अपेक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि स्थानीय पुलिस आमजन की सेवा, सुरक्षा एवं सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहेगी । उन्होंने कहा कि थाना एवं कार्यालय में आने वाले किसी भी आगंतुक / शिकायतकर्ता से सभ्य तरीके से पेश आए । भ्रष्टाचार किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं होगा ।

परिवार पहचान पत्र में पारिवारिक रिश्तों में शुद्धिकरण के लिए सरकार को लिखा जाएगा : धीरेंद्र खडग़टा

एजेंसी

रोहतक । उपायुक्त धीरेंद्र खडग़टा ने कहा कि परिवार पहचान पत्र में पारिवारिक रिश्ता के शुद्धिकरण के बारे में सरकार को पत्र लिखा जाएगा ताकि परिवार पहचान पत्र में दर्ज गलत पारिवारिक रिश्तों को ठीक किया जा सके। धीरेंद्र खडग़टा स्थानीय लघु सचिवालय स्थित सभागार में अतिरिक्त उपायुक्त नरेंद्र कुमार, नगर निगम के संयुक्त आयुक्त भूपेंद्र सिंह के साथ समाधान शिविर में नागरिकों की शिकायतें सुन रहे थे। धीरेंद्र खडग़टा ने स्थानीय अमृत कॉलोनी निवासियों की पेयजल कनेक्शन से संबंधित शिकायत की सुनवाई करते हुए जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे पुलिस सहायता लेकर पेयजल पाइप लाइन में तुरंत कनैक्शन करवाए ताकि इस एरिया के लोगों को पेयजल की आपूर्ति हो सके। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार नागरिकों की शिकायतों के निपटारे के लिए प्रति सप्ताह सोमवार व वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे है। उन्होंने समाधान शिविर में शिकायतों की सुनवाई करते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे शिविर में प्राप्त शिकायतों का यथाशीघ्र निपटारा सुनिश्चित करें। से संबंधित शिकायत की सुनवाई करते हुए कहा कि संबंधित विभाग द्वारा नाले का विस्तार करवाया जाएगा ताकि जल निकासी में सुविधा हो सके। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत द्वारा गंदे पानी की निकासी के लिए बनाए गए नाले की नियमित

प्रत्येक शुक्रवार को सरकार द्वारा समाधान शिविरों की शिकायतों के निपटारे की वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम समीक्षा की जाती है। उन्होंने समचाना निवासी की सडक़ पर किए गए अनाधिकृत निर्माण को हटाने की शिकायत की सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे पुलिस बल के साथ अनाधिकृत निर्माण को शीघ्र हटाए। उपायुक्त धीरेंद्र खडग़टा ने जसिया गांव के निवासियों की जसिया-सांघी मार्ग पर बनाए गए नाले के विस्तार रूप से सफाई करवाई जाए। उन्होंने सनसिटी निवासी की प्लॉट एरिया में शुद्धिकरण से संबंधित शिकायत की सुनवाई करते हुए जिला नगर योजनाकार को निर्देश दिए कि वे इस संदर्भ में आवश्यक कार्रवाई करवाए। उन्होंने वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, परिवार पहचान पत्र में आय कम करने, सरप्लस भूमि इत्यादि से संबंधित शिकायतों की सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को शिकायतों के निपटारे बारे निर्देश दिए।

छीनाझपटी के मामले में आरोपी को 5 वर्ष की कैद

गुरुग्राम। छीनाझपटी के मामले की सुनवाई करते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश संदीप चौहान की अदालत ने आरोपी को पुख्ता सबूतों व गवाहों के आधार पर दोषी करार देते हुए 5 वर्ष की कैद व जुर्माने की सजा सुनाई है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि वर्ष 2023 की 7 जनवरी को एक व्यक्ति ने थाना पालम विहार में शिकायत दी कि सेक्टर-22 से बाइक पर आए व्यक्तियों ने उसका मोबाइल फोन छीन लिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी निखिल का काबू कर लिया। गुरुग्राम पुलिस द्वारा आरोपी को गिरफ्तार करने उपरांत मामले की तफ्तीश बहुत ही गहनता से की गई। पुलिस ने इस मामले में आरोपी के खिलाफ सभी आवश्यक साक्ष्य व गवाह एकत्रित करके अदालत में पेश किए गए तथा उपरोक्त आरोपी के खिलाफ अदालत में चार्जशीट दाखिल की गई। अदालत ने पुलिस द्वारा आरोपी के खिलाफ दिए गए साक्ष्यों व गवाहों के आधार पर आरोपी को दोषी करार दिया गया।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने सबको एक समान अधिकार देने का काम किया : रवनीत सिंह बिट्टू

एजेंसी

अंबाला। केन्द्रीय राज्यमंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने कहा कि भारत रत्न डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने सबको एक समान अधिकार देने का काम किया हैं और आज उनकी ही देन है कि हमसब एक हैं। उन द्वारा बनाए गए संविधान की सराहना दुनिया में होती हैं। केन्द्रीय राज्यमंत्री रवनीत सिंह बिट्टू अम्बाला शहर में अम्ब कमल कार्यालय में आयोजित डॉ. भीम राव अम्बेडकर जिला गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे थे और यह अभिव्यक्ति उन्होंने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहीं। इस मौके पर वशिष्ठ अतिथि के तौर पर पूर्व राज्यमंत्री असीम गोयल नन्यौला भी उपस्थित रहें। सिख समाज की ओर से, भाजपा जिला अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारियों द्वारा मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि को पुष्पगुच्छ व शॉल भेंटकर उनका अभिनंदन किया गया। केन्द्रीय राज्यमंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने इस मौके पर जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुई घटना को निंदनीय बताते हुए दो मिनट का मौन रखकर जो शहीद हुए है उन्हें अपने श्रद्धासुमन भी अर्पित किए। उन्होंने कहा कि आतंकियों ने ऐसा कायराना काम किया है, जिनको दुनिया में कहीं भी जगह नहीं मिलेगी। उन्होंने इस अवसर पर यह भी कहा कि उनके स्वर्गीय दादा सरदार बेअंत सिंह ही केवल देश को आगे ले जाने में नहीं थे बल्कि उनके साथ-साथ बीजेपी व आरएसएस के अलावा जिन लोगों ने देश के लिए सोचा है उन्होंने देश को आगे ले जाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

विक्रम सोलर को महाराष्ट्र से 150 मेगावाट सौर मॉड्यूल की आपूर्ति का ऑर्डर

एजेंसी

कोलकाता। भारत के सबसे बड़े और सबसे विश्वसनीय सौर पीवी मॉड्यूल निर्माताओं में से एक, विक्रम सोलर लिमिटेड को महाराष्ट्र सरकार की पहल, महाराष्ट्र स्टेट पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड (महाजेनको) से एक बड़ा ऑर्डर मिला है। कंपनी ने घोषणा की है कि, उसे महाजेनको से 150 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना के लिए सौर मॉड्यूल की आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण ऑर्डर मिला है। यह रणनीतिक ऑर्डर कंपनी के परियोजना पोर्टफोलियो में उच्च क्षमता वाले सौर मॉड्यूल भी शामिल हो गये है। यह ऑर्डर भारत की अनुमोदित मॉडल और निर्माता सूची (एएलएमएम) में अग्रणी कंपनियों में से एक के रूप में कोलकाता मुख्यालय वाली विक्रम सोलर की स्थिति को और मजबूत करता है। कंपनी 150 मेगावाट क्षमता वाले उन्नत एन-टाइप मॉड्यूल की आपूर्ति करेगी। ये मॉड्यूल अपने उच्च प्रदर्शन और ऊर्जा उत्पादन के लिए जाने जाते हैं। ये मॉड्यूल मुख्यमंत्री सौर कृषि वाहिनी योजना (एमएसकेवीवाई) परियोजना 2.0 के तहत महाराष्ट्र राज्य के जलगांव और सोलापुर जिलों में महाजेनको परियोजनाओं को प्रदान किए जाएंगे। साथ ही, इस ऑर्डर के तहत वित्तीय वर्ष 2025-26 में यह मॉड्यूल वितरित किए जाएंगे। इस परियोजना के कार्यान्वयन से महाराष्ट्र की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ेगी। यह भी आशा है कि, इससे कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा पर्यावरणीय स्थिरता को और बढ़ाने में मदद मिलेगी। विक्रम सोलर के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री ज्ञानेश चौधरी ने कहा, हमें यह ऑर्डर पाकर बहुत गर्व है।

क्रेडिफिन लिमिटेड ने 213.6 करोड़ रुपये की पूंजी जुटाईः गुप्ता

जालंधर। अचल संपत्ति के बदले बंधक ऋण (संपत्ति के बदले ऋण या एलएपी) और ई-वाहनों, मुख्य रूप से ई-रिक्शा, ई-लोडर और ईवी, दुपहिया वाहन को वित्तपोषण प्रदान करने वाली गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी क्रेडिफिन लिमिटेड (पहले पीएचएफ लीजिंग लिमिटेड) ने इक्विटी और ऋण के रूप में 213.6 करोड़ रुपये की पूंजी जुटाई है। क्रेडिफिन लिमिटेड के सीईओ शल्य गुप्ता ने यहां बताया कि कंपनी भारत के मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध, एनबीएफसी है। इसका मुख्यालय जालंधर और इसका कॉर्पोरेट कार्यालय दिल्ली-एनसीआर में है। उन्होंने कहा कि कंपनी ने इक्विटी और ऋण के रूप में 2.49 करोड़ अमेरिकी डॉलर (213.6 करोड़ रुपये) की पूंजी जुटाई है। इसमें लगभग 6.7 प्रतिशत इक्विटी और 93.3 प्रतिशत ऋण शामिल है। इस पैसे का इस्तेमाल कंपनी द्वारा अपने परिचालन वाले क्षेत्रों में देखी जा रही जोरदार वृद्धि को निधि देने के लिए किया जाएगा। श्री गुप्ता ने कहा कि क्रेडिफिन ने पिछले चार वर्षों में प्रभावशाली वृद्धि दर्ज करते हुए विकास की गति को तेज कर दिया है। यह मौजूदा कार्यालयों को मजबूत कर रहा है, तेजी से नए भौगोलिक क्षेत्र खोल रहा है और पारंपरिक ऋण चैनलों से पीछे छूट गए लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए उत्पाद पेश कर रहा है। क्रेडिफिन लिमिटेड देश के वित्तीय समावेशन के दृष्टिकोण के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है और श्रृंखला में निचले खंड को व्यवहार्य वित्तीय समाधान प्रदान करने के लिए अथक प्रयास कर रहा है और ऐसे व्यवहार्य वित्तीय समाधान लेकर आ रहा है जो प्रभाव डालते हैं।

ग्रीनलाइन ने बेकार्ट के साथ मिलकर शुरू की ग्रीन लॉजिस्टिक्स की नई पहल

मुंबई। देश में हरित लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए एस्सार समूह की इकाई ग्रीनलाइन मोबिलिटी सॉल्यूशंस लिमिटेड ने टायर सुदृढ़ीकरण तकनीकों में वैश्विक अग्रणी कंपनी बेकार्ट के लिए एलएनजी (लिक्विफाइड नैचुरल गैस) संचालित ट्रकों के एक बेड़े को हरी झंडी दिखाई। कंपनी ने बयान जारी कर बताया कि यह पहल पुणे के समीप स्थित बेकार्ट के रंजनगांव संयंत्र में शुरू की गई है। यह पायलट परियोजना बेकार्ट के लॉजिस्टिक्स संचालन को डीकार्बोनाइज करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो भारत सरकार की गैस-आधारित अर्थव्यवस्था के विज़न के साथ भी मेल खाता है। ग्रीनलाइन के मुताबिक, प्रत्येक एलएनजी ट्रक से सालाना 24 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी आने की संभावना है। इससे बेकार्ट के इस लक्ष्य को मजबूती मिलेगी, जिसमें वह 2050 तक कार्बन नेट-ज़ीरो बनने और अपने 65 प्रतिशत बिक्री स्थायी समाधानों से प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है। ग्रीनलाइन मोबिलिटी सॉल्यूशंस लिमिटेड के सीईओ आनंद मिमानी ने कहा, बेकार्ट के साथ हमारी यह साझेदारी दूरदर्शी कॉरपोरेट्स की पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

डीएस ग्रुप का अगले पांच साल में 20 हजार करोड़ राजस्व का लक्ष्य

नयी दिल्ली। एफएमसीजी समूह और बहुव्यवसायी कॉर्पोरेशन धर्मपाल सत्यपाल ग्रुप (डीएस ग्रुप) ने वित्त वर्ष 2024-25 में 10 हजार करोड़ रुपए का के राजस्व हासिल करते हुए अगले चार से पांच वर्षों में इसको दोगुना करने का लक्ष्य तय किया है। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि 10 हजार करोड़ रुपए के राजस्व के साथ ही यह भारत की शीर्ष 15 एफएमसीजी कंपनियों में शामिल हो गया है। इस उपलब्धि में सबसे बड़ा योगदान खाद्य एवं पेय सेगमेंट का रहा, जो कुल राजस्व का 42 प्रतिशत है। इसके बाद माउथ फ्रेशनर सेगमेंट 38 प्रतिशत, हॉस्पिटैलिटी 3 प्रतिशत और अन्य व्यवसायों का संयुक्त योगदान रहा, जिसमें तंबाकू सेगमेंट का हिस्सा 10 प्रतिशत से भी कम है।

2024 की अक्षय तृतीया से अभी तक सोने में हुआ 35 प्रतिशत का फायदा

एजेंसी

नई दिल्ली। इस साल 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया है। हिंदू धर्मावलंबी आमतौर पर सोने-चांदी की खरीदारी के लिए धनतेरस के अलावा इस दिन को भी काफी शुभ मानते हैं। पिछले 1 साल के दौरान सोने के भाव में आई तेजी के कारण ठीक अक्षय तृतीया के दिन ही सोना में निवेश करने वाले निवेशकों को अभी तक करीब 35 प्रतिशत का मुनाफा हो चुका है। ऐसे में अब लोग इस बात का अनुमान लगाने में जुटे हैं कि इस साल अक्षय तृतीया के दिन सोने में किए गए निवेश का अगले साल अक्षय तृतीया के दिन क्या असर होगा। पिछले साल 10 मई को अक्षय तृतीया थी। उस दिन घरेलू सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 73 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिका था। वहीं इस साल अक्षय तृतीया से 5 दिन पहले आज 24 कैरेट सोना 98,330 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है। तीन दिन पहले ही 24 कैरेट सोना का

भाव कुछ देर के लिए 1 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक भी पहुंचा था। इस तरह पिछले साल अक्षय तृतीया के दिन 10 मई को सोना में निवेश करने वाले निवेशकों को अभी तक 34.25 प्रतिशत से अधिक का फायदा हो चुका है। माना जा रहा है कि 5 दिन बाद अक्षय तृतीया के दिन घरेलू सर्राफा बाजार में सोने की मांग बढ़ने के कारण इसकी कीमत में और भी तेजी का रुख बन सकता है।

हालांकि सोने की चाल अगले 1 साल के दौरान कैसी रहेगी, इसको लेकर मार्केट एक्सपर्ट्स एक मत नहीं हैं। जानकारों का कहना है कि अगर टैरिफ वॉर को लेकर दुनिया भर में बनी असमंजस की स्थिति जल्द खत्म नहीं हुई, तो आने वाले दिनों में घरेलू सर्राफा बाजार में सोना 1,35,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर को भी पार कर सकता है। दूसरी ओर, अगर वैश्विक अर्थव्यवस्था में जारी उतार-चढ़ाव पर काबू पा लिया गया और टैरिफ को लेकर विवाद शांत हो गया, तो सोने की कीमत में बड़ा करेक्शन भी आ सकता है। इस करेक्शन के कारण सोना 75 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक गिर भी सकता है। कैपेक्स गोल्ड एंड इन्वेस्टमेंट्स के सीईओ राजीव दत्ता का कहना है कि पिछले 1 साल के दौरान वैश्विक स्तर पर बढ़ी महंगाई, दुनिया के कई देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा की गई सोने की खरीदारी और दुनिया के कई देशों के बीच जारी तनाव की वजह से निवेशकों ने सेफ इन्वेस्टमेंट के रूप में सोने में निवेश करना ज्यादा पसंद किया। इसी वजह से पिछले 1 साल की अवधि में सोने की कीमत में लगभग 35 प्रतिशत तक का उछाल आ गया।

मुकेश अंबानी ने पहलगाम हमले में घायलों के मुफ्त इलाज की पेशकश की

एजेंसी

नई दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आंतकी हमले के घायल लोगों के लिए रिलायंस फाउंडेशन अस्पताल में मुफ्त इलाज की पेशकश की है। इस हमले में 26 लोग मारे गए थे। पहलगाम आतंकी हमले पर मुकेश अंबानी ने पीड़ितों के परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले में निर्दोष भारतीयों की मौत पर रिलायंस परिवार के सभी सदस्यों के साथ शोक व्यक्त करता हूं। हम हमले में घायल हुए सभी लोगों के शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ होने की कामना करते हैं। अंबानी ने कहा कि मुंबई में हमारा रिलायंस फाउंडेशन सर एचएन अस्पताल पहलगाम आतंकी हमले में सभी घायलों को मुफ्त इलाज मुहैया कराएगा। रिलायंस परिवार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत सरकार और पूरे देश के साथ पूरी तरह से खड़ा है। आतंकवाद मानवता का दुश्मन है। इसे किसी भी तरह से किसी भी व्यक्ति द्वारा समर्थन नहीं दिया जाना चाहिए।

एलआईसी ने पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों के लिए रियायतों का किया ऐलान

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनी भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने पहलगाम की सुंदर बैसरन घाटी में हुई निर्दोष लोगों की दुखद मृत्यु पर गहरा दुख व्यक्त किया है। एलआईसी ने मृतक व्यक्तियों के लिए मृत्यु दावों के निपटान में तेजी लाने के लिए विशेष विंडो की घोषणा की है।

एलआईसी ने पीड़ितों के मृत्यु दावे को जल्द से जल्द निपटाने के लिए विशेष रियायतों की घोषणा भी की है। मृत व्यक्तियों के आश्रितों को वित्तीय राहत प्रदान करने और दावों के निपटान में तेजी लाई जाएगी। एलआईसी ऑफ इंडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी सीईओ और एमडी सिद्धार्थ मोहंती ने कहा कि एलआईसी ऑफ इंडिया इस दुख की घड़ी में पीड़ित परिवार के साथ मजबूती से खड़ा है। सिद्धार्थ मोहंती ने एलआईसी पॉलिसियों के दावेदारों की कठिनाइयों को कम करने के लिए कई रियायतों की घोषणा की। उन्होंने कहा कि मृत्यु प्रमाण पत्र के बदले केंद्र या राज्य सरकार द्वारा भुगतान किया गया

कोई भी मुआवजा मृत्यु के प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाएगा। एलआईसी ने कहा कि नॉमिनी को पता होना चाहिए कि मृत्यु दावा दायर करने की प्रक्रिया पूरी तरह से ऑफलाइन है। होम ब्रांच से संपर्क करने से पहले मृत्यु दावा दायर करने के लिए सभी आवश्यक दस्तावेज़ अपने पास रख लेने चाहिए, जहां से पॉलिसी जारी की गई थी। बीमा कंपनी ने कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास किए जाएंगे कि प्रभावित परिवारों के दावों का शीघ्रता से निपटान किया जाए। आगे की सहायता के लिए दावेदार निकटतम एलआईसी शाखा/मंडल/ग्राहक क्षेत्रों से संपर्क कर सकते हैं।

डॉलर के मुकाबले 17 पैसे की मजबूती के साथ बंद हुआ रुपया

एजेंसी

नई दिल्ली। डॉलर इंडेक्स की कमजोरी और मुद्रा बाजार में डॉलर की आवक जारी रहने के कारण आज रुपया डॉलर की तुलना में 17 पैसे की मजबूती के साथ 85.26 (अस्थायी) के स्तर पर बंद हुआ। इसके पहले पिछले कारोबारी दिन बुधवार को भारतीय मुद्रा 85.43 रुपये प्रति डॉलर के स्तर पर बंद हुई थी। रुपये ने आज के कारोबार की शुरुआत कमजोरी के साथ की थी। पूरे दिन उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद रुपये ने न केवल निचले स्तर से रिकवरी की, बल्कि डॉलर की तुलना में मजबूत स्थिति में पहुंच कर बंद हुआ।

भारतीय मुद्रा ने आज सुबह डॉलर के मुकाबले 15 पैसे की कमजोरी के साथ 85.58 रुपये के स्तर से कारोबार की शुरुआत की थी। दिन के कारोबार के दौरान डॉलर की मांग बढ़ने पर रुपया 24 पैसे फिसल कर 85.67 के स्तर तक भी आ गया था, लेकिन इसके बाद डॉलर की आवक बढ़ने पर रुपया 19 पैसा मजबूत होकर 85.24 के स्तर तक

पहुंच गया। हालांकि बाद में शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों की बिकवाली के कारण बढ़ी डॉलर की मांग के कारण रुपया ऊपरी स्तर से थोड़ा गिर कर 85.26 के स्तर पर बंद हुआ। भारतीय मुद्रा रुपये ने डॉलर के साथ ही ज्यादातर दूसरी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले भी मजबूती दिखाई। आज के कारोबार के बाद ब्रिटिश पौंड (जीबीपी) की तुलना में रुपया 36 पैसे की मजबूती के साथ 113.43 के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह यूरो की तुलना में रुपया आज 46 पैसे की मजबूती के साथ 97.07 के स्तर पर पहुंचने में सफल रहा।

मौद्रिक नीति समिति की पिछली बैठक में एक ही राग अलाप रहे थे सदस्य

एजेंसी

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) में अप्रैल की बैठक की कार्यवाही के विवरण में सदस्यों के विचारों में उल्लेखनीय तालमेल दिखा। उल्लेखनीय है कि सात से नौ अप्रैल को हुई इस बैठक में रिजर्व बैंक ने अपनी मुख्य ब्याज दर को 0.25 प्रतिशत घटा कर छह प्रतिशत पर ला दिया है और उसके बाद बैंकिंग क्षेत्र में ब्याज में नरमी दिखने लगी है। रिजर्व बैंक द्वारा एमपीसी की इस बैठक में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के आयात-प्रशुल्क के फैसलों से संभावित नकारात्मक प्रभाव के जोखिमों के साथ ही भारत में मुद्रास्फीति में गिरावट को भी रेपो रेट-कटौती के निर्णय का आधार बताया गया। बैठक में माना गया है कि वैश्विक अनिश्चितता को देखते हुए निकट अवधि के नीतिगत-मार्ग पर स्पष्टता लाने की आवश्यकता है। गवर्नर संजय मल्होत्रा ने नीतिगत ब्याज दर में 0.25 प्रतिशत की कटौती के प्रस्ताव का पक्ष लेते हुए बैठक में कहा, ऐसे समय जब खुदरा मुद्रास्फीति अच्छी तरह से 4.0 प्रतिशत के अपने लक्षित स्तर के आसपास है और आर्थिक वृद्धि दर अब भी मध्यम स्तर पर है और इसमें सुधार हो रहा है, तो ऐसी मौद्रिक नीति वृद्धि की गति को और बढ़ाने के लिए घरेलू मांग आवेगों को पोषित करने वाली होनी चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि आगे भी, विकसित विकास-मुद्रास्फीति प्रक्षेपवक्र को देखते हुए, मौद्रिक नीति को समायोजन करने की आवश्यकता है। वित्तीय सेवा कंपनी एमके ग्लोबल ने आरबीआई की बैठक के विवरण का विश्लेषण करते हुए कहा है कि एमपीसी की जून की अगली द्वैमासिक बैठक में भी ब्याज में 0.25 प्रतिशत की कमी तय है और उसके बाद आगे चल कर 0.25-0.50 प्रतिशत तक कटौती की जा सकती है। एमके ग्लोबल ने कहा है कि इस बैठक में एमपीसी के सदस्य एक ही राग अलाप रहे हैं। सदस्यों के विचारों और दृष्टिकोण में उल्लेखनीय तालमेल दिखाई देता है जो कि रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की कटौती करने के सर्वसम्मत निर्णय से स्पष्ट है। इस रुख को 'तटस्थ' से बदल कर उदार या 'समायोज्य' में बदल दिया गया है। बैठक में सदस्य इस राय के सहमत थे कि मुद्रास्फीति के सौम्य स्थिति और आगे इसमें नरमी बने रहने के परिदृश्य के बीच आर्थिक वृद्धि का समर्थन करने की आवश्यकता है। एमपीसी एकमत थी कि अमेरिका की शुल्क की घोषणाएं बनी रही तो वैश्विक आर्थिक वृद्धि को काफी क्षती पहुंचेगी और उसका भारत की निकट अवधि की आर्थिक वृद्धि की संभावनाओं को भी नुकसान पहुंचेगा। समिति के ज्यादातर सदस्यों ने कहा कि भारत की आर्थिक वृद्धि मुख्य रूप से घरेलू मांग से प्रेरित है जो महत्वपूर्ण वैश्विक झटकों के खिलाफ एक बफर की सुविधा उपलब्ध कराती है। गवर्नर मल्होत्रा का मानना है कि मजबूत घरेलू मांग वैश्विक बाधाओं के खिलाफ एक सुरक्षा प्रदान करेगी। डॉ. राजीव रंजन ने भारत की अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति की ओर इशारा किया क्योंकि यह मुख्य रूप से घरेलू संचालित है। सदस्यों ने राय व्यक्त की कि बाहरी हालात से के संभावित प्रभाव से वृद्धि के लिए जोखिम बढ़ गए हैं। सौगत भट्टाचार्य अमेरिकी प्रशुल्क कार्रवाई के मद्देनजर ऐसे संभावित बाहरी प्रभावों के असर को लेकर थोड़ा अधिक चिंतित थे ।

नाबार्ड ने ग्रामीण ऋण डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के लिए ऐग्री–फ़िनटेक स्टार्टअप 24×7 मनीवर्क्स कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड में 10फीसदी हिस्सेदारी हासिल की

एजेंसी

नई दिल्ली। मुंबई, 24 अप्रैल 2025 - नैशनल बैंक फ़ॉर ऐग्रीकल्चर ऐंड रूरल डेवलपमेंट (नाबार्ड) ने अगली पीढ़ी के ऐग्री-फ़िनटेक उद्यम, 24म7 मनीवर्क्स कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड में इक्विटी हिस्सेदारी हासिल की है। यह किसी बूटस्ट्रैप्ड स्टार्टअप में नाबार्ड का पहला निवेश है, जो ग्रामीण भारत में डिजिटल बदलाव के लिए अपनी प्रतिबद्धता को मज़बूत करता है। 24म7 मनीवर्क्स कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड का प्रमुख प्लैटफ़ॉर्म, eKisanCredit , सहकारी बैंकों, PACS और RRB के लिए डिज़ाइन किया गया एक पूरी तरह से डिजिटल लोन ओरिजिनेशन सिस्टम है। eKCC प्लैटफ़ॉर्म भूमि रिकॉर्ड, आधार, eKCC, कोर बैंकिंग सिस्टम और ePACS के साथ मूल रूप से एकीकृत करता है, जो ग्रामीण क्रेडिट लाइफ़साइकल के एंड-टू-एंड ऑटोमेशन को सक्षम करता है। पिछले ढाई वर्षों में, नाबार्ड ने कई बैंकों में eKCC का संचालन किया है और यह प्रणाली अब राष्ट्रव्यापी स्तर पर रोल-आउट के लिए तैयार है। नाबार्ड के अध्यक्ष श्री शाजी के.वी. ने कहा, 'नाबार्ड को एक ऐसे स्टार्टअप का सहयोग करने पर गर्व है जो ग्रामीण वित्तीय क्षेत्र में नवाचार और प्रभाव शामिल करता है। "eKCC ने कृषि ऋण के वितरण के मामले में ऐक्सेस, पारदर्शिता और दक्षता में सुधार करने की क्षमता का प्रदर्शन किया है। यह रणनीतिक सहयोग सहकारी बैंकों, PACS और RRBs को छोटे और हाशिये पर खड़े किसानों को तेज़ी-से, पारदर्शी और अधिक समावेशी ऋण सेवाएँ मुहैया करवाने में मदद करेगा।

केंद्र ने भूमिगत कोयला खनन में तेजी लाने के लिए अग्रिम भुगतान से छूट दी

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सराकर ने भूमिगत कोयला ब्लॉक के परिचालन में तेजी लाने के लिए अग्रिम भुगतान से छूट देने जैसे नए प्रोत्साहन उपायों की घोषणा की। भूमिगत कोयला खनन को बढ़ावा देने से जुड़ा यह कदम देश के टिकाऊ कोयला उत्पादन अभियान के तहत उठाया गया है।

कोयला मंत्रालय के मुताबिक भूमिगत कोयला खदानों के लिए राजस्व हिस्सेदारी का न्यूनतम प्रतीशत चार फीसदी से घटाकर दो फीसदी कर दिया गया है। इस कमी से पर्याप्त राजकोषीय राहत मिलेगी और वित्तीय रूप से भूमिगत परियोजनाओं व्यवहारिक होंगी। इसके साथ ही भूमिगत खनन उद्यमों के लिए अनिवार्य अग्रिम भुगतान की

आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। यह उपाय वित्तीय बाधा को दूर करने के साथ ही निजी क्षेत्र से व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करेग, जिससे परियोजना के क्रियान्वयन में तेजी आएगी।

मंत्रालय के मुताबिक इन प्रोत्साहन उपायों के साथ भूमिगत कोयला ब्लॉक के लिए प्रदर्शन सुरक्षा पर मौजूदा 50 फीसदी छूट को बरकरार रखा गया है। यह सामूहिक रूप से प्रवेश सीमा को कम करता है और परियोजना क्रियान्वयन को भी सुचारू बनाता है।

भूमिगत कोयला खनन अधिक पर्यावरण अनुकूल है, क्योंकि यह खुले खदान में खनन की तुलना में सतह पर काफी कम बाधा उत्पन्न करता है। इन नीतिगत उपायों से कंपनियों के आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित होने की उम्मीद है जो पर्यावरण संतुलन सुनिश्चित करते हुए उत्पादकता को बढ़ावा देंगे।

नेस्ले इंडिया का मुनाफा मार्च तिमाही में 6.5 फीसदी घटकर 873.46 करोड़ रुपये

एजेंसी

नई दिल्ली। नेस्ले इंडिया लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2024-25 की जनवरी-मार्च तिमाही के नतीजे का ऐलान कर दिया है। 31 मार्च को समाप्त चौथी तिमाही में कंपनी का मुनाफा 6.5 फीसदी घटकर 873.46 करोड़ रुपये रहा है। इससे पिछले वित?त वर्ष 2023-24 की जनवरी-मार्च तिमाही में कंपनी का शुद्ध लाभ 934.17 करोड़ रुपये था। नेस्ले इंडिया ने शेयरधारकों को 10 रुपये प्रति शेयर डिविडेंड देने का ऐलान किया है। स्विस बहुराष्ट्रीय कंपनी नेस्ले इंडिया ने शेयर बाजार को नियामकीय फाइलिंग में दी जानकारी में बताया कि कंपनी की उत्पादों की बिक्री से आय जनवरी-मार्च तिमाही में 3.67 फीसदी बढ़कर 5,447.64 करोड़ रुपये रही। इससे पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 5,254.43 करोड़ रुपये थी।

कंपनी का मार्च तिमाही में कुल खर्च 4,307.76 करोड़ रुपये रहा। नेस्ले इंडिया की घरेलू बिक्री वित्त वर्ष 2024-25 की मार्च तिमाही में 4.24 फीसदी बढ़कर 5,234.98 करोड़ रुपये रही, जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 5,021.61 करोड़ रुपये थी।

कंपनी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक सुरेश नारायणन ने कहा, ''जनवरी-मार्च तिमाही में पेय पदार्थ और कन्फेक्शनरी में दहाई अंक की वृद्धि हुई है। हमारी घरेलू बिक्री 5,235 करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गई, जो किसी भी तिमाही में अब तक की सबसे अधिक बिक्री है।'

सोनीपत की मंडियों में 3,65,429 टन गेहूं की आवक

सोनीपत। हरियाणा में सोनीपत की विभिन्न मंडियों में शाम तक तीन लाख 65 हजार 429 टन गेहूं की आवक हो चुकी है। यह जानकारी उपायुक्त मनोज कुमार ने दी। उन्होंने बताया तीन लाख 65 हजार 429 गेहूं में से खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने एक लाख 14 हजार 31 टन, हैफेड एक लाख 50 हजार 683 टन, हरियाणा वेयर हाउसिंग 76 हजार 977 टन और फूड कार्पोरेशन आफ इंडिया (एफसीआई) दस हजार 842 टन गेहूं एवं आमजन के द्वारा (कमर्शियल गेहूं) 12896 टन गेहूं की खरीद की

जिला की मंडियों में पहुंचे गेहूं में बरोदा खरीद केन्द्र पर 3995 टन, भैंसवाल 3750 टन, बिचपड़ी 1204 टन, दातौली 4973 टन, फरमाणा 9684 टन, गन्नौर 31574 टन, गोहाना 124894 टन, हुल्लाहेड़ी 1268 टन, कासंडी 8580 टन, कथूरा 6994 टन, खानपुर खरीद केन्द्र पर 8142 टन, खरखौदा 54977 टन, मोहाना 9574 टन, मुण्डलाना 8040 टन, मुरथल 9835 टन, नाहरा 7890 टन, पुगथला 11550 टन, पुरखास 7887 टन, रूखी 10315 टन, सनपेड़ा 9074 टन तथा सोनीपत 31229 टन गेहूं की आवक हुई है। उपायुक्त ने बताया कि तीन लाख 65 हजार 429 टन गेहूं को 29 हजार 42 किसान लेकर आए हैं ।

शेयर बाजार में 7 कारोबारी दिन से जारी तेजी पर लगा ब्रेक, गिरावट के साथ बंद हुए सेंसेक्स और निफ्टी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली, 24 अप्रैल (हि.स.)। घरेलू शेयर बाजार में पिछले 7 कारोबारी दिन से जारी तेजी के सिलसिले पर आज ब्रेक लग गया। आज के कारोबार की शुरुआत भी गिरावट के साथ हुई थी। बाजार खुलने के कुछ देर बाद खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक कुछ देर के लिए हरे निशान में भी पहुंचे, लेकिन थोड़ी देर में ही एक बार फिर बिकवाली का दबाव बन गया, जिसकी वजह से दोनों सूचकांकों ने दोबारा लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.39 प्रतिशत और निफ्टी 0.34 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए।आज दिन भर के कारोबार के दौरान रियल्टी, एफएमसीजी और आईटी सेक्टर के शेयरों में लगातार दबाव बना रहा। इसी तरह बैंकिंग, ऑटोमोबाइल, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, ऑयल एंड गैस, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और टेक इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। दूसरी ओर, फार्मास्यूटिकल और मेटल सेक्टर के शेयरों में आज खरीदारी होती रही। ब्रॉडर मार्केट में भी आज आमतौर पर बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.16 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.01 प्रतिशत की सांकेतिक गिरावट के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज शेयर बाजार में आई कमजोरी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 80 हजार करोड़ रुपये से अधिक की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 429.63 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी बुधवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 430.47 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 84 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 4,086 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,922 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,013 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 151 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,541 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,210 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,331 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 13 शेयर बढ़त के साथ और 17 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 20 शेयर हरे निशान में और 30 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 58.06 अंक फिसल कर 80,058.43 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के कुछ देर बाद यह सूचकांक खरीदारी के सपोर्ट से उछल कर हरे निशान में 80,173.92 अंक के स्तर तक पहुंचा। बाजार की ये तेजी अधिक देर तक नहीं टिक सकी। थोड़ी ही देर बाद मुनाफा वसूली शुरू हो गई, जिसकी वजह से यह सूचकांक लगातार गिरता चला गया। लगातार हो रही बिकवाली के कारण शाम 3 बजे तक यह सूचकांक 391.94 अंक टूट कर 79,724.55 अंक के स्तर तक गिर गया। हालांकि आखिरी वक्त में हुई मामूली खरीदारी के कारण सेंसेक्स निचले स्तर से करीब 75 अंक की रिकवरी करके 315.06 अंक की कमजोरी के साथ 79,801.43 अंक के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 51.05 अंक की गिरावट के साथ 24,277.90 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के कुछ देर बाद खरीदारी के सपोर्ट से यह सूचकांक 18.90 अंक की तेजी के साथ 24,347.85 अंक के स्तर तक पहुंचने में सफल रहा, लेकिन इसके बाद मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण इस सूचकांक की चाल में गिरावट आ गई।

इजिप्ट में होने वाली सब-जूनियर स्पीड बॉल इंटरनेशनल प्रतियोगिता के लिए छात्र अर्पित शिवगोत्रा का हुआ चयन

एजेंसी

आरएस पुरा। इजिप्ट में 26 अप्रैल से लेकर 30 अप्रैल तक होने वाली सब-जूनियर स्पीड बॉल इंटरनेशनल प्रतियोगिता के लिए रेनू नेशनल हायर सेकेंडरी स्कूल टांडा आरएस पुरा के छठी कक्षा के छात्र अर्पित शिवगोत्रा पुत्र प्रीतम शिवगोत्रा का चयन हुआ है। स्कूल प्रबंधन की तरफ से कार्यक्रम का आयोजन कर सब जूनियर अंतर्राष्ट्रीय स्पीड बॉल प्रतियोगिता के लिए चयन होने पर छात्र अर्पित शिवगोत्रा को सम्मानित किया गया। स्कूल के प्रधानाचार्य प्रीतम शिवगोत्रा की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मानित समारोह के दौरान स्कूल स्टाफ के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे। इस मौके पर स्कूल के प्रधानाचार्य प्रीतम शिवगोत्रा ने कहा कि जम्मू कश्मीर के साथ-साथ क्षेत्र के लिए भी गर्व की बात है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली जूनियर इंटरनेशनल स्पीड बॉल चैंपियनशिप के लिए उनके स्कूल के छात्र अर्पित शिवगोत्रा का चयन हुआ है। उन्होंने बताया कि छात्र अर्पित पिछले 2 साल से स्पीड बॉल प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहा है और हाल ही में हिमाचल प्रदेश में संपन्न हुई प्रतियोगिता में भी अर्पित का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा है और अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता के लिए उसका चयन हुआ है जो की एक गर्व की बात हैं। उन्होंने बताया कि जम्मू कश्मीर के तीन प्रतिभागियों का इस प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है। स्कूल के प्रधानाचार्य ने बताया कि कोच सनी नंदा की अध्यक्षता में सभी खिलाड़ी आज इजिप्ट के लिए रवाना होंगे।

फेडरेशन कप: ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने की अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी

नई दिल्ली। ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने कोच्चि में फेडरेशन कप के दौरान अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। चित्रवाल ने महाराजा कॉलेज स्टेडियम में 17.37 मीटर की छलांग दर्ज की, जिससे उन्होंने 2023 में क्यूबा के हवाना में होने वाले प्रूबा डे कॉन्फ़्रॉन्टेसियन इवेंट में बनाए गए अपने रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। 23 वर्षीय चित्रवाल ने इस प्रयास के साथ ही इस वर्ष की एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप और विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भी क्वालीफिकेशन हासिल कर लिया है। तमिलनाडु के इस जम्पर ने प्रतियोगिता से हटने से पहले फेडरेशन कप में अपनी दूसरी छलांग के साथ कीर्तिमान स्थापित किया।

फेडरेशन कप: ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने की अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी

नई दिल्ली। ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने कोच्चि में फेडरेशन कप के दौरान अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। चित्रवाल ने महाराजा कॉलेज स्टेडियम में 17.37 मीटर की छलांग दर्ज की, जिससे उन्होंने 2023 में क्यूबा के हवाना में होने वाले प्रूबा डे कॉन्फ़्रॉन्टेसियन इवेंट में बनाए गए अपने रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। 23 वर्षीय चित्रवाल ने इस प्रयास के साथ ही इस वर्ष की एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप और विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भी क्वालीफिकेशन हासिल कर लिया है। तमिलनाडु के इस जम्पर ने प्रतियोगिता से हटने से पहले फेडरेशन कप में अपनी दूसरी छलांग के साथ कीर्तिमान स्थापित किया।

रॉयल रेंजर्स, ड्रीम एफसी और एमिटी की रोमांचक जीत

नई दिल्ली। अनीता की शानदार हैट्रिक की मदद से रॉयल रेंजर्स ने सिटी एफसी को 3-0 से हरा कर डीएसए महिला प्रीमियर लीग में शानदार जीत दर्ज की।नेहरू स्टेडियम में खेले गए दिन के पहले मैच में हंस कैपिटल फुटबाल क्लब ने ईव्स स्पोर्ट्स क्लब पर 4-2 की जीत दर्ज की। विजेता के लिए दो शानदार गोल करने वाली सृष्टि कुमार को 'प्लेयर ऑफ द मैच' के पुरस्कार से नवाजा गया। वी चिंग और पायल ने एक-एक गोल बांटे। वहीं ईव्स के लिए नैंसी और नेहा ने एक-एक गोल किये। पुरुषों की ए डिवीजन के एक मैच में आशुतोष के दो दर्शनीय गोलों से द ड्रीम टीम ने उत्तराखंड फुटबाल क्लब को 2-0 से पराजित किया। विजेता टीम ने अधिकांश समय दबदबा बनाया लेकिन कई आसान मौके गँवाए। वरना जीत का अंतर बड़ा हो सकता था। अम्बेडकर स्टेडियम में खेले गए सीनियर डिवीजन लीग के मैच में एमिटी इंडियन नेशनल फुटबाल क्लब ने अहबाब एफसी को 5-3 से हराया। रोमांचक मुकाबले में विजेता टीम के लिए विकास दलाल और विनय ने दो दो तथा तनिश ने एक गोल किया। अहबाब के टी मिसाओ, मंगते और एल बेंजमीन ने एक-एक गोल दागे।

आईपीएल: सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ियों की सूची में दूसरे स्थान पर पहुंचे विराट कोहली

एजेंसी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 (आईपीएल) में एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर और राजस्थान रॉयल्स के बीच हुए मुकाबले के बाद सर्वाधिक रन बनाने वालों और विकेट लेने वालों की सूची में कई बदलाव हुए।

साई सुदर्शन शीर्ष पर कायम, कोहली दूसरे स्थान पर पहुंचे

गुजरात टाइटंस के युवा बल्लेबाज बी. साई सुदर्शन 417 रन बनाकर अब भी पहले स्थान पर बने हुए हैं। उन्होंने आठ मैचों में 52.12 की औसत और 152.18 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं। वहीं, विराट कोहली ने लगातार दूसरा अर्धशतक जमाते हुए ऑरेंज कैप की दौड़ में लंबी छलांग लगाई है। राजस्थान के खिलाफ उन्होंने 42 गेंदों में 70 रन बनाए और अब उनके नाम नौ पारियों में 392 रन हो गए हैं।

निकोलस पूरन खिसके, सूर्यकुमार चौथे नंबर पर

लखनऊ सुपर जायंट्स के निकोलस पूरन ने प्रतियोगिता की शुरुआत धमाकेदार अंदाज में की थी और काफी मैचों तक सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी बने रहे। लेकिन हाल के मुकाबलों में खराब फॉर्म की वजह से अब वह तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं। उनके नाम 377 रन हैं। मुंबई इंडियंस के सूर्यकुमार यादव इस सत्र में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने हर मैच में उपयोगी योगदान दिया है और अब 373 रनों के साथ चौथे स्थान पर हैं।

पर्पल कैप की दौड़: हेज़लवुड ने पकड़ी रफ्तार

गुजरात टाइटंस के तेज़ गेंदबाज़ प्रसिद्ध कृष्णा अब भी सर्वाधिक विकेट लेकर पर्पल कैप धारक हैं। उन्होंने आठ मैचों में 16 विकेट लिए हैं। लेकिन रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के जोश हेज़लवुड ने राजस्थान के खिलाफ 4 विकेट लेकर 16 विकेट पूरे कर लिए हैं। हालांकि उनकी रनगति (इकोनॉमी रेट) अधिक होने के कारण वह दूसरे स्थान पर हैं।

12 विकेट लेने वाले गेंदबाजों की होड़

प्रसिद्ध कृष्णा और जोश हेज़लवुड के बाद सात गेंदबाज ऐसे हैं जिनके नाम 12-12 विकेट हैं। इनमें आरसीबी के क्रुणाल पांड्या (2 विकेट बनाम राजस्थान) नया नाम हैं।

ग्लोबल कबड्डी लीग: मराठी वल्चर्स की धमाकेदार जीत, अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंची

एजेंसी

गुरुग्राम। ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीग (जीआईपीकेएल) के पुरुष वर्ग के मुकाबले दर्शकों के लिए रोमांच से भरपूर रहे। गुरुग्राम यूनिवर्सिटी स्टेडियम में खेले गए मैचों में मराठी वल्चर्स, तमिल लायंस और पंजाबी टाइगर्स ने शानदार जीत दर्ज करते हुए अंक तालिका में अपनी स्थिति मजबूत की। आज की जीत के साथ मराठी वल्चर्स 13 अंकों के साथ अंक तालिका में शीर्ष स्थान पर पहुंच गई है। वहीं, पंजाबी टाइगर्स 12 अंकों के साथ दूसरे और तमिल लायंस 10 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर काबिज हैं। मैचों में मुख्य अतिथि के तौर पर गुरुग्राम के उपायुक्त अजय कुमार और भारतीय सेना के ब्रिगेडियर एस.के. सरीन उपस्थित रहे। दोनों ने खिलाड़ियों को 'प्लेयर ऑफ द मैच' सम्मान प्रदान किया और उनके प्रदर्शन की सराहना की। अजय कुमार ने कहा कि खिलाड़ियों का समर्पण और जोश इस लीग को खास बना रहा है। मुकाबलों की बात करें तो पहले मैच में तमिल लायंस ने भोजपुरी लेपर्ड्स को 35-33 से हराया। मुकाबला आखिरी क्षणों तक कांटे का रहा, लेकिन तमिल टीम की रणनीतिक रेडिंग और निर्णायक सुपर रेड ने उन्हें जीत दिलाई। दूसरे मैच में पंजाबी टाइगर्स ने तेलुगु पैंथर्स को 47-39 से पराजित किया। उनकी आक्रामक रेडिंग और मजबूत डिफेंस ने 6 ऑल-आउट के साथ टीम को जीत दिलाई। तीसरे और अंतिम मुकाबले में मराठी वल्चर्स ने हरियाणवी शार्क्स को 52-35 से हराकर अपनी ताकत का प्रदर्शन किया। मराठी टीम ने रेडिंग, टैकल और ऑल-आउट में शानदार संतुलन दिखाया।

मैड्रिड ओपन से हटे कार्लोस अल्कराज, चोट बनी वजह

एजेंसी

मैड्रिड। विश्व रैंकिंग में तीसरे स्थान पर काबिज स्पेनिश टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अल्कराज ने मेड्रिड ओपन से अपना नाम वापस ले लिया है। पैर की चोट के कारण वे टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं ले पाएंगे। मैड्रिड में उनका मुकाबला शनिवार को होना था। अल्कराज ने बताया कि उन्हें ऊपरी पैर में पहले से चोट थी, जो उन्हें बीते रविवार को बार्सिलोना ओपन के फाइनल के दौरान भी परेशान कर रही थी। इसके अलावा, अब उनके बाएं पैर में भी चोट है। उन्होंने कहा कि मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद ही उन्होंने खेलने से इनकार करने का फैसला लिया।

अल्कराज ने 2022 और 2023 में मैड्रिड ओपन का खिताब जीता था। इस बार वे टूर्नामेंट के दूसरे वरीय खिलाड़ी थे और उनका ड्रा नोवाक जोकोविच के साथ एक ही हाफ में था। बार्सिलोना फाइनल में होल्गर रून से हार के दौरान उन्हें ट्रीटमेंट लेना पड़ा था। अल्कराज ने कहा कि उनकी ये चोट फ्रेंच ओपन में खेलने में बाधा नहीं बनेगी। उन्होंने

पिछले साल रोलां गैरो (फ्रेंच ओपन) में अलेक्जेंडर ज़्वेरेव को हराकर खिताब जीता था। इस बार भी वे खिताब बचाने उतरेंगे। ज़्वेरेव ने हाल ही में म्यूनिख ओपन जीतकर अल्कराज को पीछे छोड़ दूसरा स्थान हासिल कर लिया है।

अल्कराज ने इस साल अब तक 24 मुकाबलों में जीत और केवल 5 में हार दर्ज की है। उन्होंने फरवरी में रॉटरडैम (हार्ड कोर्ट) और अप्रैल में मोंटे कार्लो (क्ले कोर्ट) पर खिताब जीता है। हालांकि, हालिया कार्यक्रम को लेकर उन्होंने थकान की शिकायत भी की थी।

सुपरबेट रैपिड एंड ब्लिट्ज 2025: कार्लसन की गैरमौजूदगी में प्रज्ञानानंद खिताब के प्रबल दावेदार

एजेंसी

नई दिल्ली। ग्रैंड चेस टूर का हिस्सा सुपरबेट रैपिड और ब्लिट्ज शतरंज टूर्नामेंट शनिवार से शुरू हो रहा है। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में इस बार नॉर्वे के स्टार खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन हिस्सा नहीं ले रहे हैं, जिससे भारतीय ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानानंद खिताब के सबसे बड़े दावेदारों में शुमार हो गए हैं। इस टूर्नामेंट में भारत की ओर से आर. प्रज्ञानानंद और अरविंद चिथंबरम भाग ले रहे हैं। कार्लसन की गैरमौजूदगी ने मुकाबले को पूरी तरह खुला बना दिया है और ऐसे में प्रज्ञानानंद की तेजी से खेले जाने वाले फॉर्मेट में सटीकता उन्हें बेहद खतरनाक खिलाड़ी बनाती है। उन्होंने इस साल टाटा स्टील मास्टर्स में विश्व चैंपियन डी. गुकेश को हराकर खिताब जीता था, जिससे उनके आत्मविश्वास में जबरदस्त इजाफा हुआ है। अरविंद चिथंबरम ने प्राग मास्टर्स में शानदार प्रदर्शन कर यह वाइल्ड कार्ड एंट्री हासिल की है। यह टूर्नामेंट उनके लिए बड़ी परीक्षा की तरह होगा, जहां उन्हें विश्व स्तरीय खिलाड़ियों का सामना करना है। फ्रांस के अलीरेजा फिरूज़जा को भी खिताब का प्रबल दावेदार माना जा

रहा है। वहीं उनके हमवतन मैक्सीम वाचिए-लाग्रेव भी पिछले दशक में फ्रेंच खिलाड़ियों की छवि को आगे बढ़ाने की उम्मीदों के साथ उतरेंगे। पोलैंड के डूडा और अमेरिका के लेवोन अरोनियन भी खिताब की रेस में रह सकते हैं। विश्व नंबर-1 मैग्नस कार्लसन ने क्लासिकल फॉर्मेट में अपनी रुचि कम होने की बात स्वीकार करते हुए इस टूर्नामेंट से दूरी बना ली है। वे अब 'फ्रीस्टाइल चेस' की ओर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और हाल ही में लगातार दो टूर्नामेंट जीत चुके हैं।

इस टूर्नामेंट में कुल पुरस्कार राशि 1,75,000 अमेरिकी डॉलर है, और इसके साथ-साथ पूरे सीजन के अंत में ग्रैंड प्राइज का हिस्सा बनने का मौका भी मिलेगा। हर टूर्नामेंट में प्रदर्शन के आधार पर अंक मिलते हैं, जो अंत में ग्रैंड चेस टूर के विजेता का फैसला करेंगे।

मैड्रिड ओपन: स्वियातेक ने मियामी की हार का लिया बदला, एलेक्स ईला को दी शिकस्त

एजेंसी

मैड्रिड। पोलैंड की स्टार टेनिस खिलाड़ी इगा स्वियातेक ने मैड्रिड ओपन के दूसरे दौर में रोमांचक मुकाबले में फिलीपींस की 19 वर्षीय उभरती सितारा एलेक्स ईला को 4-6, 6-4, 6-2 से हराया। पिछले महीने मियामी ओपन में ईला से मिली करारी हार के बाद यह जीत स्वियातेक के लिए बदला लेने जैसी रही।मैच की शुरुआत में ईला ने शानदार खेल दिखाते हुए स्वियातेक की सर्विस तोड़ी और पहला सेट 6-4 से अपने नाम कर लिया। लेकिन इसके बाद स्वियातेक ने अनुभव का फायदा उठाते हुए गेम पर पकड़ मजबूत की और अगले दोनों सेट 6-4, 6-2 से जीतकर मुकाबला अपने नाम किया। एलेक्स ईला ने मियामी ओपन में स्वियातेक को सीधे सेटों में हराकर सुर्खियां बटोरी थीं। उन्होंने उस टूर्नामेंट में जेलेना ओस्तापेंको और मैडिसन कीज़ जैसी ग्रैंड स्लैम विजेताओं को भी शिकस्त दी थी। हालांकि उनका सफर सेमीफाइनल में जेसिका पेगुला के हाथों हार के साथ समाप्त हुआ था। इस प्रदर्शन की बदौलत वह टॉप 100 में जगह बनाने वाली पहली फिलिपीना खिलाड़ी बनीं और फिलहाल रैंकिंग में 72वें स्थान पर हैं। दुनिया की नंबर 2 खिलाड़ी और गत विजेता स्वियातेक इस साल अब तक तीन सेमीफाइनल (ऑस्ट्रेलियन ओपन, इंडियन वेल्स, और एक अन्य) तक पहुंच चुकी हैं लेकिन फाइनल नहीं खेल सकी हैं। पिछले हफ्ते स्टटगार्ट में उन्हें जेलेना ओस्तापेंको के हाथों तीन सेटों में हार का सामना करना पड़ा था।

अन्य मुकाबलों में एंड्रीवा और निशिकोरी का जलवा

महिला वर्ग में रूस की मिर्रा एंड्रीवा ने मेरी बौजकोवा को 6-3, 6-4 से हराकर तीसरे दौर में जगह बनाई। ब्राज़ील की बीया हद्दाद मायिया ने पेरा को 2-6, 6-3, 6-1 से मात दी। अमेरिका की केटी वोलिनेट्स को डायना श्नाइडर ने 6-1, 6-2 से हराया जबकि एम्मा नवारो ने माया जॉइंट को 7-5, 7-5 से हराकर जीत दर्ज की।

केई निशिकोरी का 450वां टूर-स्तरीय जीत

पुरुष वर्ग में जापान के पूर्व विश्व नंबर 4 केई निशिकोरी ने अलेक्ज़ेंडर वुकिक को 6-4, 3-6, 6-3 से हराकर अपने करियर की 450वीं टूर-स्तरीय जीत दर्ज की। उन्होंने कहा, 'मुझे इसका अंदाजा नहीं था। बस एक-एक मैच खेलता हूंज अब तक 18 साल का सफर रहा है, उम्मीद है 500 तक पहुंच जाऊं।÷ उनका अगला मुकाबला 29वीं वरीयता प्राप्त डेनिस शापोवालोव से होगा।

खिलाड़ियों को आवेदन की जरूरत नहीं,अब सरकार खुद देगी इनाम: मनसुख मांडविया

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने इंदिरा गांधी स्टेडियम में डिजीलॉकर के माध्यम से खेल प्रमाणपत्र जारी करने के पहल की शुरुआत की।

इस मौके पर उन्होंने नेशनल सेंटर फॉर स्पोर्ट्स साइंस एंड रिसर्च का भी उद्घाटन किया।डॉ. मांडविया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी सरकार की हर खेल पहल खिलाड़ी-केंद्रित है। उन्होंने बताया कि नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल 2024, नेशनल स्पोर्ट्स पॉलिसी 2024 और एज फ्रॉड के खिलाफ नेशनल कोड 2025 जैसे कदम सरकार की पारदर्शिता और सुशासन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। मांडविया ने ऐलान किया कि डिजीलॉकर से जुड़े खेल प्रमाणपत्र जल्द ही नेशनल स्पोर्ट्स रिपॉजिटरी सिस्टम से जोड़े जाएंगे। इससे खिलाड़ियों को सरकार द्वारा मिलने वाली नकद पुरस्कार राशि डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के माध्यम से उनके बैंक खातों में सीधे मिलेगी।

उन्होंने कहा कि अब खिलाड़ी को सरकार से इनाम पाने के लिए आवेदन नहीं करना पड़ेगा। जब पूरी दुनिया ने देखा है कि उसने पदक जीता है, तो फिर प्रमाण देने की जरूरत क्यों? मांडविया ने 2036 ओलंपिक की मेज़बानी की तैयारी के रोडमैप का जिक्र किया और 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मेज़बानी में भी रुचि दिखाई।

आरसीबी ने घरेलू मैदान पर दर्ज की सीजन की पहली जीत, राजस्थान रॉयल्स को 11 रन से हराया

एजेंसी

बेंगलुरु। आईपीएल 2025 के 42वें मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने अपने घरेलू मैदान एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम पर शानदार प्रदर्शन करते हुए राजस्थान रॉयल्स (आरआर) को 11 रनों से शिकस्त दी। यह जीत आरसीबी की इस सत्र में अपने होम ग्राउंड पर पहली है और इसके साथ ही टीम अंक तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गई है। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी आरसीबी की टीम ने 5 विकेट पर 205 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। ओपनर्स फिल सॉल्ट (26) और विराट कोहली (70) ने तेज शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 61 रन जोड़े। कोहली ने अपनी 70 रनों की शानदार पारी में 8 चौके और 2 छक्के लगाए। इसके बाद देवदत्त पडिक्कल (50 रन) ने विराट के साथ मिलकर दूसरे विकेट के लिए 105 रनों की अहम साझेदारी की।

अंत में टिम डेविड (23 रन, 15 गेंद) और जितेश शर्मा (नाबाद 20 रन, 10 गेंद) की तेज पारियों ने स्कोर को 200 के पार पहुंचाया। राजस्थान की ओर से संदीप शर्मा ने दो विकेट, जबकि हसरंगा और जोफ्रा आर्चर ने एक-एक विकेट लिया। 206 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान रॉयल्स की शुरुआत अच्छी रही। यशस्वी जायसवाल (49 रन, 19 गेंद) ने आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी की, लेकिन उन्हें जॉश हेजलवुड ने आउट कर दिया। इसके बाद लगातार विकेट गिरते गए। रियान पराग (22 रन), नीतीश राणा (28 रन) और हेटमायर (11 रन) पिच पर टिक नहीं सके। हालांकि ध्रुव जुरेल (47 रन) ने अंत तक संघर्ष किया, लेकिन जोश हेजलवुड के शानदार 19वें ओवर ने मैच का रुख पूरी तरह आरसीबी की ओर मोड़ दिया। राजस्थान की टीम 20 ओवरों में 9 विकेट पर 194 रन ही बना सकी और मैच 11 रन से हार गई।

आरसीबी के लिए जॉश हेजलवुड ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 4 विकेट चटकाए और क्रुणाल पंड्या ने 2 विकेट झटके। भुवनेश्वर कुमार को एक सफलता मिली। इस जीत के साथ आरसीबी के 12 अंक हो गए हैं, और अब वो गुजरात टाइटंस और दिल्ली कैपिटल्स के साथ शीर्ष तीन में शामिल हो गई है।

मुंबई सिटी एफसी ने कलिंगा सुपर कप में चेन्नईयिन एफसी को 4-0 से हराया

भुवनेश्वर। लल्लियनजुआला छांगते के दो गोल के शानदार गोल के दम पर मुंबई सिटी एफसी ने कलिंगा सुपर कप के राउंड ऑफ 16 के मुकाबले में चेन्नईयिन एफसी को 4-0 से हरा दिया।कलिंगा स्टेडियम में बुधवार रात खेले गये मुकाबला का पहला हाफ 1-0 से बराबरी पर समाप्त हुआ। मुंबई सिटी एफसी की ओर से निकोलाओस करेलिस ने (43वें) मिनट पहला गोल दागकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद लल्लियनजुआला छांगते ने (64वें, 86वें) मिनट में दो गोल करके स्कोर 3-0 कर दिया। इसके बाद सब्सटीट्यूट बिपिन सिंह ने (90वें) में गोलकर मुकाबला 4-0से जीत लिया।लल्लियनजुआला छांगते को उनके शानदार खेल के लिए कलिंगा प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार से नवाजा गया।

सैफ चैंपियनशिप 2025 स्थगित, अब 2026 में होगा आयोजन

एजेंसी

नई दिल्ली। दक्षिण एशियाई फुटबॉल महासंघ (सैफ) ने घोषणा की कि आगामी सैफ चैंपियनशिप 2025 को स्थगित कर अब 2026 में आयोजित किया जाएगा। महासंघ के मुताबिक, प्रतियोगिता को बेहतर और भव्य तरीके से आयोजित करने के लिए अभी और तैयारियों की आवश्यकता है। हालांकि अभी तारीखों का ऐलान नहीं किया गया है।

सैफ ने अपने मीडिया बयान में कहा, हमारे सदस्य संघों और साझेदार स्पोर्टफाइव के साथ विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि टूर्नामेंट की सफलता सुनिश्चित करने हेतु इसे 2026 तक के लिए टाल दिया जाए, जिससे सभी संबंधित पक्षों को आयोजन के लिए पर्याप्त समय मिल सके। 2025 संस्करण को शुरू में होम एंड अवे फॉर्मेट में कराने की योजना थी, जिसे बाद में बदलकर श्रीलंका में केंद्रीकृत

आयोजन का निर्णय लिया गया था। हालांकि, अब वह योजना भी रद्द कर दी गई है और आयोजन की नई तारीख और स्थान की घोषणा अभी नहीं की गई है। सैफ ने यह भी बताया कि चूंकि 2026 में फीफा वर्ल्ड कप भी आयोजित होगा, इसलिए समय और स्थान के निर्धारण में अतिरिक्त सतर्कता बरती जाएगी ताकि दोनों टूर्नामेंटों में तालमेल बना रहे।

बयान में आगे कहा गया, हम अपने सभी प्रशंसकों, मीडिया और सदस्य संघों से अनुरोध करते हैं कि वे हमारे साथ सहयोग करें ताकि सैफ चैंपियनशिप को एक प्रतिष्ठित और त्रुटिहीन आयोजन के रूप में प्रस्तुत किया जा सके। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2023 में यह टूर्नामेंट भारत में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ था, जहां भारत ने रिकॉर्ड नौवीं बार खिताब जीता था। भारत के दिग्गज खिलाड़ी सुनील छेत्री को उस संस्करण में गोल्डन बॉल (सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी) और गोल्डन बूट (सर्वाधिक गोल) से सम्मानित किया गया था।

ग्फेडरेशन कप: ओडिशा के अनीमेश कुजुर ने 200 मीटर दौड़ में तोड़ा राष्ट्रीय रिकॉर्ड

एजेंसी

कोच्चि। ओडिशा के अनिमेष कुजूर ने कोच्चि के महाराजा स्टेडियम में संपन्न राष्ट्रीय महासंघ सीनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2025 में पुरुषों की 200 मीटर में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा। उन्होंने 20.40 सेकंड में दौड़ को पूरा करते हुए पिछले रिकॉर्ड धारक अमलान बोरगोहेन को पीछे छोड़ स्वर्ण पदक अपने नाम किया। दौड़ पूरी करते ही अनीमेश ने जोरदार गर्जना के साथ अपनी खुशी का इजहार किया। उन्होंने कहा, 100 मीटर में शानदार प्रदर्शन के बाद मुझे यकीन हो गया था कि 200 मीटर में कुछ बड़ा होने वाला है। अनीमेश के कोच मार्टिन ओवेन्स, जो उन्हें ओडिशा रिलायंस सेंटर में प्रशिक्षण देते हैं, ने कहा, यह सफलता लंबे समय से प्रतीक्षित थी। हमें उन एथलीट्स का भी धन्यवाद करना चाहिए जिन्होंने उन्हें प्रेरित किया–मणि, रघुल और अमलान।

ट्रिपल जंप और लॉन्ग जंप में भी रिकॉर्ड की बौछार

वहीं तमिलनाडु के प्रवीण चित्रवेल ने भी ट्रिपल जंप में 17.37 मीटर की छलांग लगाकर न केवल अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी की, बल्कि टोक्यो वर्ल्ड्स के लिए क्वालिफाई भी कर लिया। उन्होंने अपनी जर्सी के पीछे '17.20मिनट फॉर माई कोच यॉन्ड्रिस' लिखकर एक भावुक संदेश भी दिया। प्रवीण ने कहा, 'मैं

अपनी एड़ी की चोट से जूझ रहा था, इसलिए सिर्फ तीन प्रयासों के बाद रुक गया।' इस स्पर्धा में एशियाई चैंपियन अब्दुल्ला अबूबक्कर ने 16.99 मीटर के साथ रजत पदक जीता। वहीं, लंबी कूद में शैली सिंह ने शानदार 6.64 मीटर की छलांग लगाकर अपनी मेंटर अंजू बॉबी जॉर्ज का 23 साल पुराना मीट रिकॉर्ड तोड़ दिया। एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता एंसी सोजन को 6.46 मीटर के साथ दूसरा स्थान मिला। शैली के कोच रॉबर्ट बॉबी जॉर्ज ने उम्मीद जताई थी कि वह 6.75 मीटर तक जाएंगी। हालांकि शैली उस आंकड़े तक नहीं पहुंच सकीं, लेकिन पिछले दो सालों में यह उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था।

शॉट पुट और जैवलिन में भी चौंकाने वाले नतीजे

शॉट पुट में समरदीप गिल ने 19.34 मीटर की थ्रो के साथ एशियाई खेलों के स्वर्ण विजेता तजिंदरपाल सिंह तूर (18.77 मीटर) को पीछे छोड़ दिया और सभी को चौंका दिया। महिलाओं की भाला फेंक प्रतियोगिता में अन्नू रानी अपनी पूरी लय में नहीं थीं, लेकिन फिर भी उन्होंने आराम से खिताब जीत लिया। फेडरेशन कप का यह संस्करण भारतीय एथलेटिक्स के लिए कई मायनों में ऐतिहासिक रहा। नए रिकॉर्ड, उभरते सितारे और अनुभवी खिलाड़ियों की वापसी ने इसे यादगार बना दिया है।

इस तरह से करें बेकार पड़े प्लास्टिक के कपों का इस्तेमाल

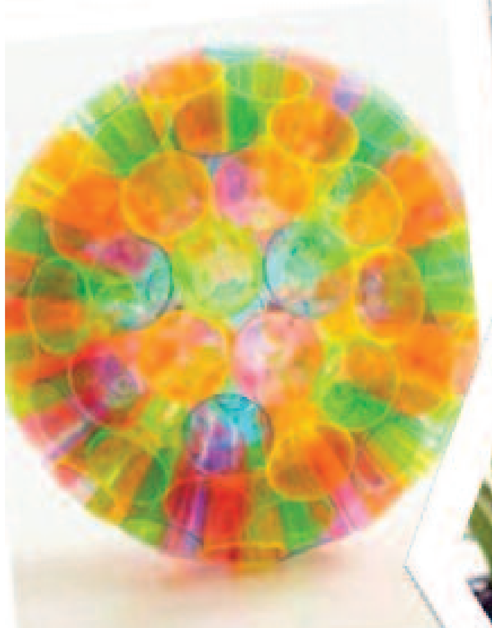

हम सभी बाजार से बहुत सी ऐसी चीजें ला कर इस्तेमाल करते हैं जो प्लास्टिक के कपों, बोतल, बर्तनों, थैलों आदि में आती है। हम घर की सफाई करने के लिए इन कपों, बोतलों आदि का इस्तेमल करने के बाद कचरे में फेक देते हैं। पर यह सभी चीजें फेंकने के बाद भी जल्दी से गलती नहीं हैं। ऐसी प्लास्टिक की चीजों को गलने में बहुत समय लगता है। बहुत से शहरों और राज्यों में इन चीजों का उपयोग करने के लिए प्रतिबंध लगाएं गए हैं। इसलिए आज हम आपको इन प्लास्टिक के कपों को घर में इस्तेमाल करने के लिए कुछ आसान से टिप्स बताएगें। इसे आप इन चीजों को फिर से रीसायकल बिन कर सकते हैं। तो आइए जानते हैं...

- पेन रखने के लिए स्टैंड बनाएं

आप इन कपों से पेन रखने के लिए स्टैंड बना सकते हैं। ताकि बच्चें अपना प्रोजेक्ट बनाने का सारा सामान इसमें इकट्ठा करके रख सकें। - टूथब्रश रखने के लिए होल्डर अक्सर हम सभी जब बाजार से दही लेकर आते हैं तो दही खाने के बाद उन कपों को फेक देते हैं। आप इन कपों को फेंकने की जगह रंगों से डिजाइन बना कर घर में इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे कि उन्हें बाथरूम में टूथब्रश रखने के लिए होल्डर बना कर टांग सकते हैं।

- पैसे रखने के लिए

आप इन बेकार पड़े प्लास्टिक कपों में टूटे सिक्कों रख सकते हैं, ताकि आप सिक्को को एक जगह पर रखे सकें और ढूंढने में किसी तरह की दिक्कत भी न हो। - एस्सेसरीज चीजें रखने के लिए

जब भी हम किसी फंक्शन से आते हैं तो अपनी कीमती चीजें जैसे कि ईयरिंग्स या चैन आदि को घर में कही भी रख देते हैं। जिसे यह सारी चीजें गुम हो सकती हैं। इसलिए इन्हें एक जगह पर रखने के लिए ऐसी एस्सेसरीज चीजों को इकट्ठा करके इन प्लास्टिक कपों में संभाल कर रख सकती हैं। - पौधे लगाने के लिए बीज बोएं

आप घर में इन बेकार पड़े प्लास्टिक कपों और बाल्टियों में मिट्टी डालकर पौधो के बीज लगा सकते हैं, जैसे कि धनिया, पुदिना आदि के बीज। - कपों का पेपरवेट बनाएं

बाजार से मंहगे पेपरवेट लाने की जगह पर आप घर में बेकार पड़े सामान और प्लास्टिक के हैवी कपों का पेपरवेट बना सकते है। - कलर पैलेट

अगर आपके बच्चों चित्रकला का करने का शौक रखते हैं तो उन्हें रंगों के अलग-अलग शेड बनाने के लिए प्लास्टिक के कप दें सकते है। इन कपों में रंग सूखते नहीं है और उन्हें इस्तेमाल में भी लाया जा सकता हैं।

घर में कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए अपनाएं ये टिप्स

आजकल हर घर में कॉकरोच आम देखने को मिलते हैं। कॉकरोच घर में जगह-जगह पर आपना घर बना कर मजे से रहते हैं। ऐसे में अगर हमारी किचन में खाने पीने की चीजों के आस पास कॉकरोच घुमते रहें तो पेट जैसी बहुत सी बीमारियां हो जाती हैं। अगर आप कॉकरोचों से परेशान हो गए है तो आज हम आपको कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए कुछ आसान से घरेलू टिप्स बताएगें। तो आइए जानते हैं...

- लौंग

वैसे तो हम सभी लौंग का इस्तेमाल खाने में करते हैं, पर अगर आपके रसोईघर में बहुत ज्यादा कॉकरोच है तो उनसे मुक्ती पाने के लिए भी इसका उपयोग कर सकते है। ऐसे में अगर आप किचन कैबिनेट के अंदर थोड़े लौंग रख दें ताकि कॉकरोच भाग जाए।

- रेड वाइन

आप रसोईघर में बनी कैबिनेट के अंदर एक कटोरी में 1/3 रेड वाइन रख कर भी इनका खात्मा कर सकते हैं। - पाउडर वाली चीनी कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए आप एक कटोरी में या फिर किसी बोतल की ढक्कन में चीनी का पाउडर डाल कर रख दें। चीनी को बोरिक एसिड के साथ मिलाकर भी रख सकते है।

- अण्डा

घर में हर कोई अंडा तो खाता ही है। पर हम सभी अण्डे के छिलकों को कचरे के डिब्बा में फेक देते है। अब आप ऐसा न करें। यदि आपकी किचन में कॉकरोच हैं तो उन्हें दूर करने के लिए आप अण्डे के छिलको को कैबिनेट या स्लेब पर रख दें।

- बेकिंग पाउडर

किचन में कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए कटोरे में बेकिंग पाउडर डाल कर कैबिने के अंदर और बाहर रख दें। ध्यान में रखें कि 10-15 दिनों के बाद इस बदल जरूर दें क्योंकि नमी की वजह से इसकी महक चली जाती है।

घर में रखा है पालतू जानवर, तो इस तरह से करें

साफ-सफाई

जिन लोगों को घर में जानवर रखने का शौक है उन्हें उसकी देखभाल के साथ-साथ घर की साफ-सफाई का भी बहुत ध्यान रखना पड़ता है। वह जानवर की देखभाल अपने बच्चों की तरह करते हैं। फिर भी वह जितनी भी कोशिश कर लें, पर उनके लिए घर की सफाई करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। ऐसे में जानवर आपके घर की साफ-सफाई को खराब कर ही देता है क्योंकि उसके शरीर के बाल घर में जगह-जगह पर बिखरे रहते हैं। इसलिए आज हम आपको बताएंगे कि आप जानवर होने पर किस तरह से घर की साफ-सफाई करें। तो आइए जानते है कैसे...

- नस्ल के बारे में जान लें घर में जानवर रखने से पहले उसकी नस्ल के बारे में जरूर जान लें क्योंकि कुछ नस्ल के जानवरों के बाल गिरते रहते हैं। ऐसे में आप घर पर हल्के बालों वाले जानवर ही पाले।

- देखभाल

अगर आपने घर में ऐसी नस्ल वाला जानवर रखा है जिसके बाल गिरते है तो ऐसे जानवरों के बालों की देखभाल जरूर करें। ऐसे में उसे समय पर नहलाएं और उसकी एक ड्रेस बना कर पहनाएं। हो सके तो जानवर के बालों को अच्छा रखने वाली दवा व क्रीम लगाएं।

- कारपेट और कपड़े

घर की सफाई करते समय कॉरपेट, बेडशीट, बिस्तर, सोफा आदि को अच्छे से साफ जरूर करें क्योंकि इस पर जानवर के बाल भी लगे हो सकते हैं। कोशिश करें कि हर हफ्ते एक बार वैक्यूम क्लीनर से घर के साफ जरूर करें।

- दाग

जानवर घर में कहीं भी मल या मूत्र देखे हैं, जिससे उस जगह पर दाग पड़ जाते हैं।अगर वह कॉरपेट पर कर दें तो यह जल्दी खराब हो जाता है। इसलिए उस जगह को शीघ्र ही साफ करें।

- कमरे की सजावट

कमरे में पड़े महंगे सामान को जानवर की पहुंच से दूर रखें। कमरे को तभी खोंले जब घर में मेहमान आएं। हो सके तो सभी चीजों की दिन में एक बार डस्टिंग जरूर कर लें।

- जानवर से फर्श को बचाएं

अगर आपके घर में पीवीसी शीट वाली फर्श बिछी है तो जानवर से फर्श को बचाएं क्योंकि सभी जानवरों के पंजे गढ़ाने की गंदी आदत होती है। वह शीट वाली फर्श को खराब कर सकता है। - प्रशिक्षण दें

अगर आप घर में जानवर को रखना चाहते हैं तो उसे घर में बैठने-उठने की अच्छी ट्रेनिंग दें।

खुश रहना है बहुत आसान

आपको यह बात थोड़ी अटपटी लग सकती है, लेकिन सच है कि कुछ छोटी–छोटी बातों को अपनी जीवनशैली में शामिल करके हमेशा तनावमुक्त और खुश रह सकती हैं।

1. सुबह अपने लिए थोड़ा समय जरूर निकाले ताकि आपके मस्तिष्क में अच्छे विचार आ सकें। इसके लिए आंखें बंद करके सकारात्मक भाव वाली किसी कविता या प्रार्थना का सस्वर पाठ करते हुए गहराई से उसका अर्थ समझने का प्रयास करे। इस दौरान नाक से सांस लें और उसे मुंह से वापस छोड़े। दिन भर तनावमुक्त रहने के लिए यह अच्छा व्यायाम है।

2. हाल ही में किए गए सर्वेक्षणों से यह तथ्य सामने आया है कि जो लोग सुबह का नाश्ता नहीं करते उनमें शारीरिक और मानसिक तनाव बहुत अधिक होता है और जो लोग सुबह के नाश्ते में पौष्टिक चीजें जैसे स्प्राउट्स, फल, जूस आदि लेते है उन्हे किसी तरह के तनाव का अनुभव नहीं होता। नाश्ते में मौजूद जिंक, विटमिन सी, विटमिन बी और मैग्नीशियम आपके शरीर को तनाव के नकारात्मक असर से लड़ने की ऊर्जा देते है।

3. अपने शारीरिक और मानसिक तनाव के लक्षणों को पहचानने की कोशिश करे कि किस स्थिति में आप स्वयं को ज्यादा तनावग्रस्त महसूस करती है। जब कभी तनाव महसूस हो तो इसे दूर करने के लिए आप यह करे–अपनी पीठ बिलकुल सीधी रखें, पेट के निचले हिस्से को भीतर की ओर हलका सा सिकोड़े और वापस उसी अवस्था में छोड़ दें। कम से कम चार–पांच बार ऐसा करने से आप स्वयं को तनावमुक्त महसूस करेगी। इससे सांस सही ढंग से चलने लगती है।

4. कंप्यूटर पर लगातार काम करते–करते आंखें थक जाती है। इस समस्या से बचने के लिए कम से कम हर तीन घंटे के अंतराल पर अपनी हथेलियों से दो मिनट के लिए पलकें बंद करे और फिर धीरे–धीरे आंखें खोलें। इससे आराम महसूस होगा।

5. हंसना तनाव दूर करने का सबसे आसान उपाय है। इसलिए टीवी पर गंभीर कार्यक्रमों के बजाय कोई कॉमेडी शो देखें।

6. संगीत तनाव दूर करने का सबसे बेहतर जरिया है। इसलिए वीकएंड में न सिर्फअपनी पसंद का संगीत सुनें, बल्कि खुद भी खुले गले से गुनगुनाएं। वैज्ञानिक सर्वेक्षणों से साबित हो चुका है कि गाने से मस्तिष्क तक ऑक्सीजन का प्रवाह तेज गति से होता है और इससे व्यक्ति तनावमुक्त महसूस करता है।

तीसरी शादी, एक्स वाइफ श्वेता से अनबन का असर और बेटी पलक तिवारी

राजा चौधरी ने किए कई खुलासे

टीवी की मशहूर एक्ट्रेस श्वेता तिवारी के एक्स-हस्बैंड राजा चौधरी की सोनी सब टीवी के शो 'तेनाली रामा' में एंट्री हो रही है. इस सीरियल में वो 'चौडप्पा राया' का किरदार निभाने वाले हैं. राजा चौधरी को आखिरी बार सीरियल 'कैसा है ये रिश्ता अंजाना' शो में देखा गया था. इस शो के बाद उन्होंने एक छोटा ब्रेक लिया था. अपनी वापसी पर खुशी जाहिर करते हुए टाइम्स ऑफ़ इंडिया के साथ की अपनी बातचीत में कहा कि पूरी यूनिट और दोस्तों के साथ दोबारा जुड़कर बहुत अच्छा लग रहा है. इस दौरान उन्होंने ये भी कहा कि उनकी एक्स-वाइफ श्वेता तिवारी के साथ हुई अनबन का असर उनकी प्रोफेशनल जिंदगी पर भी पड़ा है.

राजा चौधरी ने कहा, मुझे नहीं लगता कि मुझे उतना काम मिला, जिसका मैं सही में हकदार था. शायद ये मुझसे जुड़ी निगेटिव पब्लिसिटी की वजह से हुआ. जिन लोगों ने मुझसे कभी मुलाकात भी नहीं की, वे भी मान लेते हैं कि मैं दूसरों के लिए हमेशा समस्याएं खड़ी करता हूं. अगर मैं सच में दूसरों को परेशान करता, तो 'तेनाली रामा' के प्रोड्यूसर मुझे वापस क्यों लाते? हां, दूसरों की मेरे बारे में बनी इस धारणा के कारण मुझे प्रोफेशनल रूप से नुकसान उठाना पड़ा.

शराब छोड़ने के लिए शुरू किया पिकल बॉल

राजा ने अपनी शराब की लत (Alcoholism) के बारे में भी बात की. उन्होंने बताया कि वो अब कुछ समय से सोबर हैं (शराब का सेवन नहीं कर रहे हैं). उन्होंने कहा, शराब की लत मेरी ज़िंदगी में एक बड़ी

समस्या थी, लेकिन मुझे इसका एहसास काफी बाद में हुआ. मैंने पिकलबॉल खेलना शुरू किया, ताकि मैं इस आदत पर काबू पा सकूं. मैंने खुद को इस खेल में पूरी तरह लगा दिया, जिसने मुझे व्यस्त रखा और मेरी लत से लड़ने में मदद की, शुक्र है मैंने इस पर काबू पा लिया है. 2021 से मैं एक सोबर जीवन जी रहा हूं और अब मैं अधिक स्पष्ट रूप से सोच सकता हूं, शांत रह सकता हूं, और खुश हूं.

परिवार ने की मदद

राजा ने अपनी रिकवरी का श्रेय उनके परिवार को भी दिया. वो बोले, मेरे माता-पिता मेरी शराब की लत से परेशान थे. आखिरकार, आप अपने परिवार के लिए जीते हैं, और जब वे आपसे खुश नहीं होते हैं, तो आपको एहसास होता है कि आपको बदलने की जरूरत है. जब मैंने अपनी गलतियों को स्वीकार किया, तब मुझे खुद पर काम करने की ताकत आ गई. मेरा परिवार इस सब में मेरे साथ रहा है. उन्होंने मुझे सपोर्ट किया.

अब शादी नहीं करनी

दो शादियां टूटने के बाद (एक एक्ट्रेस श्वेता तिवारी और दूसरी दिल्ली की कॉर्पोरेट प्रोफेशनल श्वेता सूद के साथ), अब राजा फिलहाल प्यार या शादी की तलाश में नहीं हैं. वो कहते हैं, मैं प्यार और शादी के खिलाफ नहीं हूं, लेकिन फिलहाल मैं इस बारे में नहीं सोच रहा. अपनी पहली शादी से हुई बेटी, एक्ट्रेस पलक तिवारी के साथ अपने रिश्ते के बारे में उन्होंने कहा, हम अब भी संपर्क में रहते हैं. जब भी उसे अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय मिलता है, वो मुझसे बात करती है और मैं भी ऐसा ही करता हूं. मुझे उस पर बहुत गर्व है.

'रामायण' के 'हनुमान' की बहू थी ये मुस्लिम एक्ट्रेस, पहले सिख फिर हिंदू से रचाई थी शादी

90 के दशक में बॉलीवुड में अपनी शुरुआत करने वाली तब्बू ने अपने करियर में अच्छा खासा नाम कमाया था. हालांकि उनकी बड़ी बहन फराह नाज को इस तरह की लोकप्रियता हासिल नहीं हो पाई. फराह ने 80 और 90 के दशक में बॉलीवुड में काम किया था, लेकिन वो बड़ी एक्ट्रेस बनने में नाकाम रहीं.फराह नाज ने अपने दौर में कई फिल्मों में काम किया था, लेकिन वो अपने समय की एक्ट्रेसेस के मुकाबले चर्चा में नहीं रहीं और वो अब एक गुमनाम जीवन जी रही हैं. लेकिन एक्ट्रेस अपनी पर्सनल लाइफ के चलते सुर्खियों में रही हैं. तब्बू जहां आज तक 53 साल की उम्र में भी कुंवारी हैं, तो वहीं फराह ने दो-दो शादी की थी. मुस्लिम धर्म से संबंध रखने वाली फराह ने पहली शादी सिख एक्टर से जबकि दूसरी शादी हिंदू एक्टर से की थी.

1985 में किया एक्टिंग डेब्यू

56 वर्षीय फराह का जन्म 9 दिसंबर 1968 को हैदराबाद में हुआ था. उन्होंने साल 1985 में आई फिल्म 'फासले' से एक्टिंग डेब्यू किया था. इसके बाद एक्ट्रेस के खाते में 'लव 86' और 'नसीब अपना-अपना' जैसी हिट फिल्में आईं. फिर उन्होंने 'घर घर की कहानी', 'यतीम', 'रखवाला', 'जवानी जिंदाबाद', 'ईमानदार', 'अचानक' और 'हलचल' जैसी फिल्मों में भी काम किया.

'रामायण' के 'हनुमान' दारा सिंह की बहू थीं फराह

फराह नाज ने अपने करियर के पीक पर शादी करने का फैसला लिया था. मुस्लिम धर्म से ताल्लुक रखने के बावजूद उन्होंने सिख एक्टर विंदु सिंह से साल 1996 में शादी की थी. विंदु दिवंगत पहलवान और रामानंद सागर के धारावाहिक 'रामायण में 'हनुमान' की भूमिका निभाने वाले दारा सिंह के बेटे हैं. शादी के बाद विंदु और फराह एक बेटे फतेह रंधावा के पैरेंट्स बने. लेकिन कपल ने शादी के 6 साल बाद साल 2002 में तलाक ले लिया था.

फिर हिंदू एक्टर से की दूसरी शादी

विंदु सिंह से अलग होने के बाद फराह नाज ने जल्द ही दूसरी शादी करने का फैसला कर लिया था. सिख एक्टर के बाद उन्होंने हिंदू एक्टर सुमीत सहगल को अपना लाइफ पार्टनर चुना. सुमीत बॉलीवुड में काम कर चुके हैं. सुमीत और फराह ने साल 2003 में शादी रचाई थी. अब कपल की शादी को करीब 22 साल बीत चुके हैं. कभी अपनी खूबसूरती के लिए भी चर्चा में रहीं फराह अब काफी बदल चुकी हैं.

जब जूते पहनकर रणबीर कपूर ने कर दी थी ऐसी हरकत, पिता ऋषि कपूर ने जड़ दिया था थप्पड़

बॉलीवुड के दिवंगत अभिनेता ऋषि कपूर अपने सख्त मिजाज के लिए भी जाने जाते थे. एक बार उन्होंने अपनी इस सख्ती के चलते बेटे रणबीर कपूर को जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया था. तब रणबीर काफी छोटे थे. हालांकि तब बचपन में अनजाने में रणबीर से एक गलती हो गई थी, जिसे ऋषि कपूर बर्दाश्त नहीं कर सके.रणबीर कपूर अपने पिता ऋषि कपूर के साथ बेहद अच्छा रिश्ता रखते थे. हालांकि अब ऋषि इस दुनिया में नहीं हैं. लेकिन उनसे जुड़े कई किस्से काफी मशहूर हैं. आज ऐसा ही एक किस्सा हम आपको बता रहे हैं, जो खुद रणबीर ने अपने एक इंटरव्यू के दौरान शेयर किया था. दरअसल एक बार बचपन में रणबीर पूजा घर में जूते पहनकर चले गए थे और गुस्से में तब रणबीर को ऋषि ने तमाचा जड़ दिया था.

पूजा घर में जूते पहनकर चले गए थे रणबीर

ये किस्सा उस समय का है जब रणबीर बिल्कुल बच्चे और नादान थे. उन्हें सही गलत का भेद पता नहीं था. तब उनकी उम्र थी 12 साल. एक दिन रणबीर जूते पहनकर अपने घर के पूजा स्थल में चले गए थे, जिससे ऋषि का गुस्सा सातवे आसमान पर था और उन्होंने रणबीर पर तुरंत सारा गुस्सा निकाल दिया.

ऋषि ने रणबीर को मारा थप्पड़

एक इंटरव्यू के दौरान रणबीर ने बचपन की इस घटना को शेयर करते हुए कहा था, मैं अपने पापा का हमेशा से फैन रहा हूं, उनके डिफरेंट किरदारों को देखना मुझे अच्छा लगता है. यूं तो पापा कभी मुझ पर चिल्लाए नहीं लेकिन बचपन में एक बार मुझे बहुत जोर का चांटा मारा था, क्योंकि मैं जूते पहनकर पूजा रूम में चला गया था. तब मैं करीब 12 साल का था.

2007 में हुआ था रणबीर का डेब्यू

रणबीर कपूर ने पिता ऋषि कपूर और मां नीतू कपूर की राह पर चलते हुए साल 2007 में अपने बॉलीवुड करियर की शुरुआत फिल्म 'सावरिया' से की थी. इसमें उनके अपोजिट सोनम कपूर नजर आई थीं. हालांकि ये पिक्चर पिट गई. लेकिन रणबीर ने जल्द ही फैंस के दिलों को जीता और बॉलीवुड के सुपरस्टार कहलाए.

अब रामायण में नजर आएंगे रणबीर

रणबीर ने अपने 18 साल के करियर में 'बर्फी', 'संजू', 'ए दिल है मुश्किल', 'ये जवानी है दीवानी', 'तू झूठी मैं मक्कार', 'ब्रह्मास्त्र-पार्ट वन', 'एनिमल', रॉकस्टार', और 'राजनीति' जैसी शानदार फिल्में दी हैं. अब रणबीर 1 हजार करोड़ के बजट में बन रही फिल्म 'रामायण' में भगवान श्री राम की भूमिका में नजर आने वाले हैं.

वरुण धवन

की 5 सुपरहिट रॉम-कॉम फिल्में, जिन्हें फैमिली या पार्टनर के साथ कहीं भी देख सकते हैं

2012 में करण जौहर की सुपरहिट फिल्म स्टूडेंट ऑफ द ईयर से तीन नए कलाकारों ने डेब्यू किया था, जिनके नाम आलिया भट्ट, सिद्धार्थ मल्होत्रा और वरुण धवन हैं. यहां बात वरुण धवन की करें तो उन्होंने सबसे ज्यादा सफल फिल्में दी हैं और अलग-अलग समय में उनका हर तरह का किरदार देखने को मिला. वरुण को हमेशा रोमांटिक-कॉमेडी फिल्मों में देखना फैंस पसंद करते हैं.

24 अप्रैल 1987 को मुंबई में जन्में वरुण धवन के पिता मशहूर फिल्म डायरेक्टर डेविड धवन हैं. इस साल वरुण अपना 38वां बर्थडे मना रहे हैं और आने वाले समय में उनकी कई बेहतरीन फिल्में रिलीज भी होने वाली हैं. उन फिल्मों के पहले वरुण की कुछ रोम-कॉम फिल्मों को एक बार फिर देख लेना चाहिए.

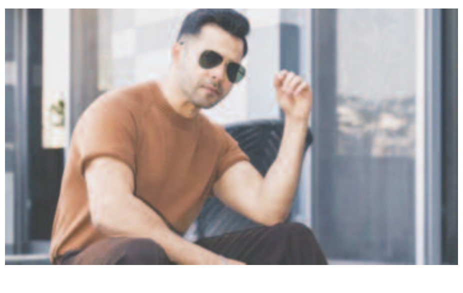

वरुण धवन की सुपरहिट रोम-कॉम फिल्में

आज के यंगस्टर्स वरुण धवन को देखना पसंद करते हैं. वरुण ने अपने अभी तक के करियर में कॉमेडी और सीरियस दोनों तरह के किरदारों को निभाया और उसके साथ जस्टिस भी किया है. अगर आप वरुण की कॉमेडी फिल्में पसंद करते हैं तो ये 5 फिल्में भी जरूर पसंद करते होंगे.

'जुग जुग जियो'

24 जून 2022 को रिलीज हुई इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की थी. फिल्म में वरुण धवन और कियारा आडवाणी की जोड़ी बनी थी और इनके अलावा अनिल कपूर, नीतू कपूर भी अहम किरदारों में थे. फिल्म का निर्देशन राज मेहता ने किया था और इसे करण जौहर के बैनर धर्मा प्रोडक्शन में बनाया गया था. ये फिल्म आज आप प्राइम वीडियो पर देख सकते हैं.

'बद्रीनाथ की दुल्हनिया'

10 मार्च 2017 को रिलीज हुई इस फिल्म का निर्देशन शशांक खैतान ने किया था वहीं इसे करण जौहर ने प्रोड्यूस किया था. इस फिल्म में वरुण धवन के साथ आलिया भट्ट नजर आई थीं और फिल्म में भरपूर कॉमेडी के साथ एक सोशल मैसेज भी दिखाया गया था. इस फिल्म को आप प्राइम वीडियो पर देख सकते हैं.

'हम्टी शर्मा की दुल्हनिया'

11 जुलाई 2014 को रिलीज हुई इस फिल्म का निर्देशन भी शशांक खैतान ने किया था और करण जौहर ने इसे प्रोड्यूस किया था.

फिल्म में वरुण के साथ आलिया भट्ट ही नजर आई थीं और इस फिल्म में वरुण और आलिया ने 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' के बाद पहली बार साथ काम किया था. ये फिल्म भी प्राइम वीडियो पर उपलब्ध है.

'मैं तेरा हीरो'

4 अप्रैल 2014 को रिलीज हुई इस फिल्म का निर्देशन वरुण के पिता डेविड धवन ने ही किया था. फिल्म को एकता कपूर ने प्रोड्यूस किया था. इस फिल्म में वरुण के अलावा इलियाना डिक्रूज, नरगिस फाखरी और अनुपम खेर अहम किरदारों में नजर आए थे. ये फिल्म आप जियो हॉटस्टार पर देख सकते हैं.